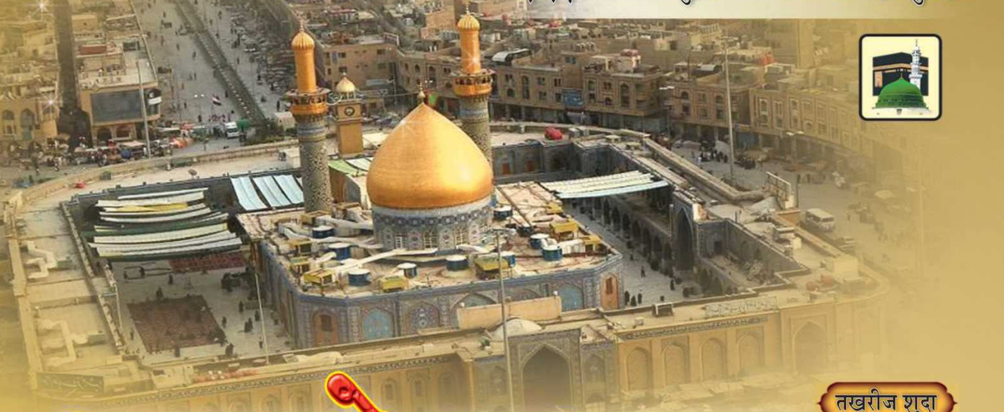
SAWANAHE KARBALA (HINDI)

वाक़िअ़ए करबला पर मुश्तमिल रिवायात का मदनी गुलदस्ता



तख़रीज शुदा

सवानहे करबला

मुसन्निफ़

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عليه الرحمة الله الهادى

इस किताब में आप मुलाह़ज़ा फ़रमाएंगे

- फ़ज़ाइले अहले बैत
- फ़ज़ाइले ख़ुलफ़ाए राशिदीन
- दस मुहर्रमुल ह़राम सि. 61 हि. के दिलदोज़ वाक़िआत
- ह़ज़रत इमामे आ़ली मक़ाम की शहादत
- शहादत के बा'द के वाक़िआत

مكتبة المدينة
(دعوتِ اسلامی)
SC1286

المدينة العلمية
(دعوتِ اسلامی)
(शो'बए तख़रीज)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

सवानहे करबला

येह किताब **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)** ने "उर्दू" **ज़बान** में पेश की है। **मजलिसे तराजिम, (दा'वते इस्लामी)** ने इस किताब को "**हिन्दी**" **रस्मुल ख़त़** में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءُ
य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ु = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

वाक़िअ़ए करबला पर मुश्तमिल रिवायात का
मदनी गुलदस्ता

सवानहे करबला

-: मुसन्निफ़ :-
सदरुल अफ़ाज़िल
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى

-: पेशकश :-
शो'बए तख़्रीज, मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना
421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद,
देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : सवानहे करबला

मुसन्निफ़ : सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی

पेशकश : शो'बए तख़रीज (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

सिने तबाअ़त : ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम, सि. 1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

...अह़मदाबाद : सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200

... मुम्बई : 19-20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429

... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099

.... अजमेर : 19 / 216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

....हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860

... हैदराबाद : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E.mail : ilmia26@yahoo.com

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"करबला के जांनिषारों को सलाम" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की " 22 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم :-

"अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"

(الجامع الصغير،الحديث ٩٣٢٦،ص ٥٥٧، دارالكتب العلمية بيروت)

दो मदनी फूल :-

《1》 बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

《2》 जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

《1》 हर बार ह़म्द व 《2》 सलात और 《3》 तअ़व्वुज़ व 《4》 तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) 《5》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। 《6》 ह़त्तल इमकान इस का बा वुज़ू और 《7》 क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा 《8》 कुरआनी आयात और 《9》 अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा 《10》 जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और 《11》 जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। 《12》 (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़्हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा 《13》 (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। 《14》 किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़ कम चार सफ़्ह़ात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के षवाब का ह़क़दार बनूंगा 《15》 दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब

दिलाऊंगा ﴾16﴿ इस ह़दीषे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी । (مؤطا امام مالك، ج۲،ص۴۰۷، رقم: ۱۷۳۱،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताबें ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा ﴾17﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मषलन 41) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾18﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सारी उम्मत को ईसाले षवाब करूंगा ﴾19﴿ इस रिवायत "عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है । (حلية الاولياء،حديث:۱۰۷۵۰،ج۷،ص۳۳۵،دارالكتب العلمية بيروت) पर अ़मल करते हुए इस किताब में दिये गए बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की बरकतें लूटूंगा । ﴾20﴿ शुहदाए करबला की याद में इन के ईसाले षवाब के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा । ﴾21﴿ हर साल माहे मुह़र्रमुल ह़राम से क़ब्ल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾23﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा ।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

★.....★.....★

*अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा कार्ड और पेम्फ़लेट **मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाएं ।*

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तबलीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजुमे कुतुब

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइषे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰلہٖ وسلَّم



रमज़ानुल मुबारक, **1425** हि.

पेशे लफ्ज़

राहे ख़ुदा (عَزَّ وَجَلَّ) में हमारे अस्लाफ़े किराम और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की पेशकर्दा क़ुरबानियों के सबब ही आज दीने इस्लाम का येह चमनिस्तान सर सब्ज़ो शादाब है। इन नुफ़ूसे क़ुदसिया को पेश आने वाले मसाइबो आलाम का तज़्किरा बड़ा दिलसोज़ व जांगुदाज़ है। बिल ख़ुसूस मैदाने करबला में अहले बैते अत़्हार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने जो मुसीबतें झेलीं इन का तो तसव्वुर ही दिल दहला देता है। जफ़ाकारो सितम शिआ़र कूफ़ियों ने जिस बेमुरुव्वती और बेदीनी का मुज़ाहरा किया तारीख़ में इस की मिषाल नहीं मिलती। ख़ुद ही ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को सदहा दरख़्वास्तें भेज कर कूफ़ा आने की दा'वत दी और जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन की ज़मीन को शरफ़े क़दमबोसी अ़त़ा फ़रमाया तो बजाए इस्तिक़्बाल करने के वोह आप के ख़ून के प्यासे हो गए। मुसल्लह लश्कर ले कर आप के सद्दे राह हुए। न शहर में दाख़िल होने दिया न ही वत़न वापस लौट जाने पर राज़ी हुए, हुसैनी क़ाफ़िले को रेगज़ारे करबला में इक़ामत पज़ीर होना पड़ा, कोर बात़िनों ने फ़ुरात का आबे रवां ख़ानदाने रिसालत पर बन्द कर दिया। अहले बैत के नन्हे नन्हे ह़क़ीक़ी मदनी मुन्ने तिश्ना लब एक एक क़त़रे के लिये तड़प रहे थे, छोटे छोटे बच्चे और बापर्दा बीबियां सब भूक व प्यास से बेताब व ना तुवां हो गए थे। तेज़ धूप, गर्म रैत, गर्म हवाएं और बे वत़नी का एह़सास अलग दामनगीर है। ऊधर बाईस हज़ार का लश्करे जर्रार तीग़ो सिनान से मुसल्लह दरपए आज़ार और अपने हुन्नर आज़्माने का त़लबगार है मगर भूक प्यास की शिद्दत के बा वुजूद फ़रज़न्दाने आले रसूल (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم و رضی اللہ تعالیٰ عنہم) ने ऐसी बहादुरी और जवांमर्दी का मुज़ाहरा किया कि आ'दा अंगुश्त बदन्दा रह गए, कई कई यज़ीदियों को हलाक करने के बा'द ख़ानदाने ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के नौनिहाल दादे शुजाअ़त देते यके बा'द दीगरे शहादत से सरफ़राज़ होते

गए। अ़ज़ीज़ो अक़ारिब, दोस्त व अह़बाब, ख़ुद्दाम व मवाली, दिलबन्द व जिगर पैवन्द सब ने आईने वफ़ा अदा कर के ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर अपनी जानें फ़िदा कर दीं और अब सय्यिदुल अम्बिया (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) का नूरे नज़र, फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का लख़्ते जिगर बेकसी व भूक प्यास की ह़ालत में आलो अस्ह़ाब की मुफ़ारक़त का ज़ख़्म दिल पर लिये हुए शमशीर बकफ़ हो गया और इस कमाले महारत व हुन्नरमन्दी से मुक़ाबला किया कि बड़े बड़े नामवरान सफ़ शिकन के ख़ून से करबला के तिश्न रेगिस्तान को सैराब फ़रमा दिया और ना'शों के अम्बार लगा दिये, नामवराने कूफ़ा की जमाअ़तें एक ह़िजाज़ी जवान के हाथ से जान न बचा सकीं, बिल आख़िर तीर अन्दाज़ों की जमाअ़तें हर त़रफ़ से घिर आईं। इमामे तिश्नाकाम को गिर्दाबे बला में घेर कर तीर बरसाने शुरूअ़ कर दिये, तीरों की बौछाड़ में नूरानी जिस्म ज़ख़्मों से चकनाचूर और लहू लुहान हो गया, एक तीर पेशानिये अक़्दस पर लगा और आप घोड़े से नीचे तशरीफ़ ले आए, ज़ालिमों ने नेज़ों पर रख लिया और आप शरबते शहादत से सैराब हो गए।

इसी मा'रकए ज़ुल्मो सितम में अगर रुस्तम भी होता तो उस के ह़ौसले पस्त हो जाते और सरे नियाज़ झुका देता मगर फ़रज़न्दे रसूल को मसाइब का हुजूम अपनी जगह से न हटा सका और इन के अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल में फ़र्क़ न आया, ह़क़्क़ो सदाक़त का ह़ामी मुसीबतों की भयानक घटाओं से न डरा और तूफ़ाने बला के सैलाब से इस के पाए षबात में जुम्बिश भी न हुई। राहे ह़क़ में पहुंचने वाली मुसीबतों का ख़ुशदिली से ख़ैर मक़्दम किया, अपना घर लुटाना और अपना ख़ून बहाना मन्ज़ूर किया मगर इस्लाम की इ़ज़्ज़त में फ़र्क़ आना बरदाश्त न हो सका। सर व तन को ख़ाक में मिला कर अपने जद्दे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन की ह़क़्क़ानिय्यत की अ़मली शहादत दी और रेगिस्ताने कूफ़ा के वर्क़ पर सिद्क़ो अमानत पर जान क़ुरबान करने के नुक़ूश षब्त फ़रमाए।

घर लुटाना जान देना कोई तुझ से सीख जाए   जाने आ़लम हो फ़िदा ऐ ख़ानदाने अहले बैत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़िअ़ए करबला इकसठ हिजरी माहे मुह़र्रमुल ह़राम में पेश आया, आज कई सदियां गुज़र जाने के बा वुजूद इस की याद दिलों में तरो ताज़ा है, इस्लामी तारीख़ के अवराक़ पर शुहदाए करबला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के कारनामे सुन्ह़री ह़ुरूफ़ में कन्दा हैं । इन के शानो सीरत के बयान में आज भी तुज़ुक व एह़तिशाम से मह़ाफ़िल व मजालिस मुनअ़क़िद की जाती हैं । शहीदाने करबला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم की शानदार और बे मिषाल क़ुरबानियों का तज़्किरा सुन कर दिलों पर सोज़ की कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है । इन ह़ज़रात की बारगाह में ईसाले षवाब के नज़राने पेश किये जाते हैं और मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में इन से अपनी मह़ब्बत व अ़क़ीदत का इज़्हार किया जाता है ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा करबला वालों की याद मनाना, इन के ईसाले षवाब की ख़ात़िर खिचड़ा और दीगर खाने पकाना, पानी की सबीलें क़ाइम करना और ज़िक्रे शहादत व मनाक़िबे अहले बैत की मह़फ़िलें मुनअ़क़िद करना जाइज़ और मुस्तह़सन है मगर हमें इन की सीरते मुबारका पर भी अ़मल करने की कोशिश करनी चाहिये, ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने दीन की ख़ात़िर इतनी इतनी मुसीबतें बरदाश्त कीं और ज़बान तो कुजा, दिल में भी शिकवा व शिकायत को पनाह न दी और हम हैं कि ज़रा सी मुश्किल आए या मा'मूली सी परेशानी लाह़िक़ हो, शिकवों के अम्बार लगा देते हैं । याद रखिये ! मुसलमान पर इमतिह़ान ज़रूर आता है, कभी बीमारी की सूरत में तो कभी बेरोज़गारी की शक्ल में, कभी अवलाद के सबब तो कभी हमसायों के ज़रीए, कभी अपनों की वजह से तो कभी बेगानों के ज़रीए । हर मुसलमान को चाहिये कि वोह इमतिह़ान के लिये तय्यार रहे इस से जी न चुराए और हरगिज़ हरगिज़ ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर न लाए । जिस त़रह़ षाबित क़दमी और ख़ुशदिली से सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने तमाम मसाइब का मर्दाना वार सामना किया इस का तसव्वुर कर के हमें भी मुसीबतों पर सब्र करने की कोशिश करनी

चाहिये और जिस त़रह़ इस्लाम की सरबुलन्दी और ह़क़ की बरतरी के लिये आप ने अपने वत़न मदीनए त़य्यिबा से करबला का सफ़र इख़्तियार किया। इस की याद में हमें भी चाहिये कि इस्लाम की इशाअ़त और नेकी की दा'वत देने के लिये राहे खु़दा (عَزَّوَجَلَّ) में सफ़र इख़्तियार करें बल्कि हो सके तो दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से हमारे दिलों में बुज़ुर्गाने दीन और असलाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की मह़ब्बत मज़ीद पुख़्ता और इन की क़ुरबानियों की अहम्मिय्यत भी उजागर होगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तबलीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" ने अकाबिरीन व बुज़ुर्गाने अहले सुन्नत की मायानाज़ कुतुब को ह़त्तल मक़दूर जदीद अन्दाज़ में शाएअ़ करने का अ़ज़्म किया है। लिहाज़ा वाक़िअ़ए करबला से मुतअ़ल्लिक़ बरादरे आ'ला ह़ज़रत, उस्ताज़े ज़मन, शहनशाहे सुख़न ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان की मुनफ़रिद किताब "आईनए क़ियामत" के बा'द अब उस्ताज़ुल उ़-लमा, सनदुल फ़ु-ज़ला, फ़ख़रुल अमाषिल, सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى की मायए नाज़ तसनीफ़ "**सवानहे करबला**" को भी दौरे जदीद के तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुए पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है।

किताबे हाज़ा "**सवानहे करबला**" में सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَادِر ने वाक़िअ़ए करबला बड़े पुरसोज़ अन्दाज़ में तह़रीर फ़रमाया है और ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन और आप के जांनिषारों رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم की शहादत को निहायत ही रिक़्क़त अंगेज़ अन्दाज़ में बयान किया है नीज़ शहादत के बा'द के वाक़िआ़त और यज़ीद और यज़ीदियों के अन्जामे बद का भी क़दरे तफ़सील से तज़किरा फ़रमाया है।

इस किताब पर मदनी उ़–लमाए किराम دامت فیوضھم के काम की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

﴾1﴿ किताब पर काम शुरूअ़ करने से पहले इस किताब के मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों में ह़त्तल मक़्दूर सह़ीह़ तरीन नुस्ख़े का इन्तिख़ाब करने की कोशिश की गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सि. 1377 हि. के मत़्बूआ़ एक क़दीम नुस्ख़े को पेशे नज़र रखते हुए इस किताब पर काम किया गया।

﴾2﴿ जदीद तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ कम्पयूटर कम्पोज़िंग जिस में रुमूज़े अवक़ाफ़ (फुल स्टोप, कोमाज़, कोलोन्ज़ वग़ैरा) का मक़्दूर भर एहतिमाम किया गया है।

﴾3﴿ कम्पोज़्शुदा मवाद का अस्ल से तक़ाबुल ताकि मह़ज़ूफ़ात व मुकर्ररात वग़ैरा जैसी अग़्लात न रहें।

﴾4﴿ अ़रबी इबारात, सिने वाक़िआ़त और अस्माए मक़ामात व मज़्कूरात की अस्ल माख़ज़ से तत़्बीक़।

﴾5﴿ आयाते कुरआनिया, अह़ादीष व रिवायात वग़ैरहा की अस्ल माख़ज़ से ह़त्तल मक़्दूर तख़रीज व तत़्बीक़।

﴾6﴿ ह़वालाजात की तफ़्तीश ताकि अग़्लात का इमकान कम से कम हो।

﴾7﴿ इरतिबाते़ मतन व ह़व्वाशी या'नी ह़वालाजात वग़ैरा को मतन से जुदा रखते हुए उसी सफ़्ह़े पर नीचे हाशिये में तह़रीर किया गया है, नीज़ मुसन्निफ़ के हाशिये के साथ बत़ौरे इम्तियाज़ "12 मिन्ह" लिख दिया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में इस्तिद्अ़ा है कि इस किताब को पेश करने में उ़–लमाए किराम دامت فیوضھم ने जो मह़नत व कोशिश की इसे क़बूल फ़रमा कर इन्हें बेहतरीन जज़ा दे और इन के इल्मो अ़मल में बरकतें अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तख़्रीज (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

तआरुफ़े मुसन्निफ़

इब्तिदाई ह़ालात :

मुग़ल ताजदार मुह़युद्दीन औरंगज़ेब आ़लमगीर के दौरे हुकूमत में ईरान के शहर मशहद से कुछ अरबाबे फ़ज़्लो कमाल (सदरुल अफ़ाज़िल के आबा व अजदाद) हिन्दुस्तान आएं, उन्हें बड़ी पज़ीराई मिली और गूनांगूं सलाहिय्यतों के सबब क़द्रो मनज़िलत की निगाह से देखा जाने लगा। इसी ख़ानवादे में ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुईनुद्दीन साह़िब **नुज़हत** के घर मुरादाबाद (यू.पी.) में 21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1300 हि. मुत़ाबिक़ यकुम जनवरी सि. 1883 ई. बरोज़ पीर एक हौनहार सआ़दत मन्द बच्चे की विलादत हुई। फ़ीरोज़मन्दी और इक़बाल के आषार उस की पेशानी से हुवैदा थे। वोही बच्चा बड़ा हो कर दुन्याए सुन्निय्यत का अ़ज़ीम रहनुमा हुवा और सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى के नाम से जाना पहचाना गया और अपनी इ़ल्मी जाहो ह़शमत, शराफ़ते नफ़्स, इत्तिबाए़ शरीअ़त, ज़ोहदो तक़्वा, सुख़नसन्जी, ह़क़गोई, जुरअत व बेबाकी और दीने ह़क़ की ह़िफ़ाज़त के मुआ़मले में फ़क़ीदुल मिषाल ठहरा।

इब्तिदाई ता'लीम :

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر जब चार साल के हुए तो आप के वालिदे गिरामी ने इनतिहाई तुज़ुक व एह़तिशाम और बड़ी धूमधाम से "बिस्मिल्लाह ख़्वानी" की पाकीज़ा रस्म अदा फ़रमाई। चन्द ही महीनों में नाज़िरए क़ुरआने पाक के बा'द हिफ़्ज़े क़ुरआन शुरूअ़ कर दिया और आठ साल की उ़म्र में हिफ़्ज़े क़ुरआन की तकमील के साथ साथ उर्दू अदब और उर्दूए मुअ़ल्ला में भी अच्छी ख़ासी क़ाबिलिय्यत ह़ासिल कर ली, चूंकि वालिदे मुह़तरम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद मुईनुद्दीन **नुज़हत** साह़िब इ़ल्मो

फ़ज़्ल के आफ़ताब, दादा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद अमीनुद्दीन साह़िब **रासिख़** फ़ज़्लो कमाल के नय्यरे ताबां और परदादा ह़ज़रते मौलाना करीमुद्दीन साह़िब आज़ाद (عليهم الرحمة) उस्ताज़ुश्शुअ़रा व इफ़्तिख़ारुल अदबा थे लिहाज़ा इन की आगोशे तरबिय्यत ने आप को तहज़ीब व अदब का आफ़ताबे ताबदार बना दिया।

दर्से निज़ामी :

फ़ारसी और मो'तदबिह ह़िस्से तक अ़रबी की ता'लीम अपने वालिदे माजिद से ह़ासिल फ़रमाई और मुतवस्सितात तक उ़लूमे दर्सिय्या की तकमील ह़ज़रते मौलाना ह़कीम फ़ज़्ल अह़मद साह़िब से की। इस के बा'द ख़ुद ह़ज़रते मौलाना ह़कीम फ़ज़्ल अह़मद साह़िब ह़ुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल को ले कर क़ुदवतुल फ़ु-ज़ला, ज़ुब्दतुल उ़-लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद गुल साह़िब काबली رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه मोहतमिम मद्रसा इमदादिया मुरादाबाद की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : ह़ुज़ूर ! साह़िबज़ादे इनतिहाई ज़की व फ़हीम हैं, मुल्ला ह़सन तक पढ़ चुके हैं, मेरी दिली ख़्वाहिश है कि बक़िया दर्से निज़ामी की तकमील ह़ज़रत की ख़िदमत में रह कर करें। मौलाना सय्यिद मुह़म्मद गुल साह़िब ने ह़ुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی की पेशानी पर एक नज़र डाली और इज़्हारे मुसर्रत फ़रमाते हुए आप को अपनी सोह़बते बा बरकत में ले लिया।

फ़राग़त :

उस्ताज़ुल असातिज़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद गुल क़ादिरी से मनतिक़, फ़ल्सफ़ा, रियाज़ी, उक़्लीदस, तौक़िय्यत, व हैअत, जफ़र, अ़रबी ब ह़ुरूफ़े ग़ैर मनक़ूता, तफ़्सीर, ह़दीष और फ़िक़्ह वग़ैरा बहुत से मुरुव्वजा दर्से निज़ामी और ग़ैर दर्से निज़ामी उ़लूमो फ़ुनून की असनाद अपने शफ़ीक़ उस्ताद से ह़ासिल फ़रमाईं और बहुत से सलासिले अह़ादीष व उ़लूमे इस्लामिय्या की सनदें भी तफ़्वीज़ हुईं।

दस्तारे फ़ज़ीलत :

बहारे ज़िन्दगी का बीसवां साल था। मद्रसए मुरादाबाद दुल्हन की त़रह़ सजा हुवा था, उ़-लमा व मशाइख़ रौनक़ अफ़रोज़ थे कि एक चमकता हुवा ताज उस्तादे मोह़तरम ने दस्तार की शक्ल में अपने चहीते तलमीज़े ख़ुश तमीज़ (सदरुल अफ़ाज़िल) के सर पर रखते हुए एक ताबिन्दा व दरख़्शिन्दा सनदे फ़रागत हाथ में अ़ता फ़रमाई और अपने बग़ल में मस्नदे तदरीस व इरशाद पर बिठा दिया। येह रस्मे दस्तारे फ़ज़ीलत सि. 1320 हि. मुत़ाबिक़ सि. 1903 ई. को अदा हुई। उसी वक़्त आप के वालिदे गिरामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद मुईनुद्दीन **नुज़हत** साहि़ब ने बहजत व सुरूर में डूब कर एक क़त़्आ़ इरशाद फ़रमाया जिस से माद्दए सिने फरागत निकलता है।

है मेरे पिसर को त़लबा पर वोह फ़ज़ीलत सय्यारों में जो रखता है मिर्रीख़े फ़ज़ीलत
***नुज़हत** नईमुद्दीन को येह कह के सुना दे दस्तारे फ़ज़ीलत की है तारीख़ "फ़ज़ीलत"*

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की पहली ज़ियारत :

ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल ख़ुदादाद सलाहि़य्यतों के मालिक थे, आप की क़ाबिलिय्यत के सबब बा'दे फ़रागत ही कई उ़लूमो फ़ुनून में आप की बालादस्ती और इल्मो फ़ज़्ल की शोहरत होने लगी। दर ईं अषना जोधपूर के एक बद अ़क़ीदा दरीदा दहन व गुस्ताख़ क़लम मौलवी जो सुन्नी उ़-लमा के मज़ामीन के रद में मक़ाले लिखा करता और अपने ख़ुबषे बाति़न का इज़्हार करता, उस ने आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के ख़िलाफ़ एक निहायत ना मा'क़ूल व रज़ील मज़मून लिख कर अख़्बार "निज़ामुल मुल्क" में शाएअ़ करवा दिया। चुनान्चे जैग़मे सह़राए मिल्लत, उस्ताज़ुल उ़-लमा, सनदुल फ़ु-ज़ला ह़ुज़ूर सय्यिदी सदरुल अफ़ाज़िल ने इस क़िस्मत के मारे, ख़बाषत के हरकारे झोधपूरी मौलवी की तह़रीर का निहायत शोख़ व त़रह़दार, दनदान शिकन और मुसकित रद लिखा और उसी अख़बार "निज़ामुल मुल्क"

में शाएअ़ करवा कर मुंहतोड़ जवाब दिया। इमामे अहले सुन्नत की ख़िदमते बा बरकत में सदरुल अफ़ाज़िल के इस जुरअत मन्दाना इक़्दाम के बारे में अ़र्ज़ किया गया और निज़ामुल मुल्क अख़बार भी ख़िदमत में पेश किया गया। जिसे आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमा कर सदरुल अफ़ाज़िल की क़ाबिलिय्यत की ता'रीफ़ फ़रमाई और आप को बरैली शरीफ़ लाने की ख़्वाहिश का इज़्हार फ़रमाया। त़लबे आ'ला ह़ज़रत पर ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल इमामे अहले सुन्नत की बारगाहे फ़ैज़ रसां में ह़ाज़िर हुए। आ'ला ह़ज़रत ने अहले सुन्नत के मोक़िफ़ की ताईद पर आप को बेपनाह दुआ़ओं और इनतिहाई मह़ब्बत व शफ़्क़त से नवाज़ा। इस के बा'द सदरुल अफ़ाज़िल को आस्तानए आ'ला ह़ज़रत से एक ख़ास क़ल्बी लगाव हो गया और वक़्तन फ़ वक़्तन आप आ'ला ह़ज़रत की बारगाह में ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल करते बल्कि जब भी आप मुरादाबाद में होते ख़ुसूसिय्यत के साथ आ'ला ह़ज़रत की ख़िदमते अक़्दस में हर पीर और जुमा'रात को ह़ाज़िरी की सआ़दत से बहरामन्द होते।

सनदे फ़राग़त पाने के बा'द आप ने इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मौज़ूअ़ पर एक जामेअ़ और मुदल्लल किताब "अल कलिमतुल इलया लि आ'लाए इल्मे मुस्त़फ़ा" तह़रीर फ़रमाई जिस का मुन्किरीन आज तक जवाब न लिख सके और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक न लिख सकेंगे, जब आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरैलवी की ख़िदमते बाबरकत में येह किताब पेश की गई तो आप ने बनज़रे अ़मीक़ मुत़ालआ़ फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : مَاشَآءَاللہ बड़ी कारआमद और उ़म्दा किताब है, इ़बारत शगुफ़्ता, मज़ामीन दलाइल से भरे हुए, येह नौउ़म्री और इतने अह़सन बराहीन के साथ इतनी बुलन्द पाया किताब मौलाना मौसूफ़ के होनहार होने पर दाल्ल है। बहर ह़ाल आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت से सदरुल अफ़ाज़िल का रिश्तए मह़ब्बत व मुवद्दत इस क़दर मज़्बूत़ हो गया कि आप को आ'ला ह़ज़रत ने अपना

मो'तमद और अपने बा'ज़ कामों का मुख़्तार बना दिया और जहां फ़ाज़िले बरैलवी अपनी शरई ज़िम्मेदारियों की वजह से खुद शिरकत न फ़रमाते वहां सदरुल अफ़ाज़िल आप की नुमाइन्दगी फ़रमाते ।

बैअ़त व ख़िलाफ़त :

हज़रते शैख़ शाहजी मुहम्मद शेर मियां जो अपने वक़्त के वलिय्ये कामिल और कुतुबे अ़स्र थे उन की ख़िदमत में सदरुल अफ़ाज़िल बड़ी इरादत व अ़क़ीदत के साथ हाज़िर हुए । हज़रते शैख़ शाहजी के इरशाद पर अपने ही उस्ताज़े गिरामी हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद गुल साहिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث के दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त हुए और इजाज़त व ख़िलाफ़त से नवाज़े गए । हज़रत ने अपने लाइक़ व फ़ाइक़ तलमीज़े रशीद को चारों सिलसिलों और जुम्ला अवरादो वज़ाइफ़ की इजाज़त अ़ता फ़रमा कर माज़ून व मजाज़ बना दिया । इस के बा'द गौषे वक़्त कुत़्बे दौरां, शैखुल मशाइख़ हज़रते शाह सय्यिद अ़ली हुसैन साहिब अशरफ़ी मियां किछौछवी ने भी ख़िलाफ़त व इजाज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया । हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر ने हज़रत शैखुल मशाइख़ की शान में एक मनक़बत भी लिखी है जिस का एक शे'र यूं है :

राज़े वह्दत खुले नईमुद्दीन   अशरफ़ी का येह फ़ैज़ है तुझ पर

दर्स व तदरीस :

हुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल अपनी मुख़्तलिफ़ दीनी, इल्मी, तबलीग़ी, तह्क़ीक़ी व तसनीफ़ी मसरूफ़िय्यात और मुनाज़िरा व मुक़ाबला और फ़िर्क़ए बातिला के रद्द व इबत़ाल जैसी सरगर्मियों के बा वुजूद ता हयात दर्स व तदरीस से वाबस्ता रहे । आप का तर्ज़े तदरीस बड़ा दिल चस्प व मुनफ़रिद था । इफ़्हाम व तफ़्हीम में आप यक्ताए रोज़गार थे जिस की ब दौलत अस्बाक़ त़लबा के दिलो दिमाग़ पर पूरी त़रह नक़्श हो जाते ।

तदरीस का अन्दाज़ :

दौराने तदरीस सबक़ से मुतअ़ल्लिक़ पुर मग़्ज़ और मुदल्लल तक़रीर ज़बानी फ़रमाते और जिस त़रह़ गहराई और इशारात व माल्ला व माइ़लिय्या से वज़ाह़त फ़रमाते उस से यूं मा'लूम होता जैसे ख़ुद ही मुसन्निफ़ हैं। तदरीस में आप की बे मिषाल महारत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि "मैं ने मुदर्रिस दो ही देखे हैं। एक सदरुश्शरीआ़ और दूसरे सदरुल अफ़ाज़िल, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था के सदरुश्शरीआ़ इस शो'बे से ज़ियादा वाबस्ता रहे और सदरुल अफ़ाज़िल ज़रा कम।"

वज़ीफ़ए तदरीस से इस्तिग़्ना :

दुन्या भर के मुदर्रिसीन उ़मूमन तनख़्वाहदार होते हैं और अपनी सलाह़िय्यतों और मनासिब के ए'तिबार से मुशाहिरा पाते हैं लेकिन सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر ने कभी एक पैसा तनख़्वाह नहीं ली और इतना बड़ा मद्रसा जामिआ़ नईमिया बत़ौरे ख़ुद चलाते थे। त़लबा के ख़ुर्दो नोश और मुदर्रिसीन की तनख़्वाह आप अदा करते थे।

इ़ल्मे त़िब की तह़सील :

हु़ज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल ने इ़ल्मे त़िब ह़कीमे ह़ाज़िक़ नब्बाज़े दौरां ह़ज़रते मौलाना ह़कीम फ़ैज़ अह़मद साह़िब अमरोहवी से ह़ासिल किया। जिस त़रह़ से आप को उ़लूमे मनक़ूलिया व उ़लूमे मा'क़ूलिया में हम अ़स्र उ़-लमा में तफ़व्वुक़ व बरतरी ह़ासिल थी इसी त़रह़ मैदाने त़िब में भी आप कमाले महारत रखते थे उ़मूमन मरीज़ का चेहरा देख कर ही मरज़ पकड़ लिया करते थे। नब्बाज़ी में बैनल हुकमा यक्ताए ज़माना थे। मुफ़रिदात अदविय्या के ख़वास अज़बर थे। मुरक्कबात में भी ख़ासी सलाह़िय्यतों के मालिक थे। जामिआ़ नईमिया से फ़ारिग़ होने

वाले बहुत से उ़–लमा ने आप से इ़ल्मे ति़ब भी ह़ासिल किया। आप का जो वक़्त तबलीग़ व तदरीस से बचता था उस में आप ति़ब व ह़िक्मत के ज़रीए़ ख़िदमते ख़ल्क़ फ़ी सबीलिल्लाह फ़रमाया करते थे।

तक़रीर व मुनाज़रा :

ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल को तफ़्सीर, ह़दीष, इ़ल्मे कलाम, फ़िक़्ह व उसूल, हैअत व रियाज़ी, नुजूम, इ़ल्मे तौक़ियत व इ़ल्मुल फ़राइज़ और दीगर उ़लूमो फ़ुनून के इ़लावा फ़न्ने तक़रीर व मुनाज़रा में भी महारत ह़ासिल थी। आप अपने वक़्त के तक़रीबन तमाम फ़िर्क़ए बाति़ला से नबर्दआज़मा रहे, एक से बढ़ कर एक मुनाज़िर आप के मुक़ाबिल आया लेकिन हमेशा मैदान आप के हाथ रहा। आप का अन्दाज़ और तरज़े इस्तिद्लाल बिलकुल वाज़ेह़ और रौशन होता, मुग़्लक़ात व मो'ज़िलात और त़वील अबह़ाष को मुख़्तसर मगर जामेअ़ अल्फ़ाज़ में निहायत वज़ाह़त से बयान करते। जो दलाइल व हुज्जज क़ाइम फ़रमाते किसी को इतनी त़ाक़त न होती कि तोड़ सकता। मुख़ालिफ़ एड़ी चोटी का ज़ोर लगाता लेकिन नामुमकिन था कि जो गिरिफ़्त फ़रमाई थी उस से गुलूख़लासी पा सकता या वोह गिरिफ़्त नर्म पड़ जाती, मुख़ालिफ़ ग़ज़्बो इ़नाद में उंगलियां चबाते मगर कुछ न कर सकते। सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَادِر की येह सिफ़त तो आप का ख़ास्सा थी कि दौराने गुफ़्तगू कभी भी किसी के साथ नाशाइस्ता व ग़ैर मुहज़्ज़ब कलिमात ज़बाने मुबारक पर न लाते। मुक़ाबिल की तज़्ह़ीक व तह़मीक़ का शाइबा तक आप की बह़ष व इस्तिद्लाल में न मिलता।

बसा अवक़ात मुनाज़िरे का काम अपने तलामिज़ा से भी लिया करते। चुनान्चे मुक़ाबिल के इ़ल्मी मे'यार का अन्दाज़ा लगा कर मौज़ूए मुनाज़िरा के मुतअ़ल्लिक़ तलामिज़ा को पहली ही गुफ़्तगू में जवाब और जवाबुल जवाब तलक़ीन फ़रमा दिया करते थे और बता देते कि मुख़ालिफ़ येह जवाब देगा उस का येह जवाब होगा। लिहाज़ा ऐसा ही होता और आप के शागिर्द भी फ़तह़याब हो कर लौटते।

दारुल इफ़्ता :

हुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल अपनी गूनागूं मसरूफ़िय्यात के बावुजूद दारुल इफ़्ता भी बड़ी ख़ूबी और बाक़ाइदगी के साथ चलाते, हिन्द व बैरूने हिन्द नीज़ मुरादाबाद के अत्राफ़ व अकनाफ़ से बे शुमार इस्तिफ़्ता और इस्तिफ़्सारात आते और तमाम जवाबात आप ख़ुद इनायत फ़रमाते। بفضله تعالی फ़िक्ही जुज़इय्यात इस क़दर मुस्तह्ज़िर थे कि जवाबात लिखने के लिये कुतुबहाए फ़िक़ह की त़रफ़ मुराजअ़त की ज़रूरत बहुत ही कम पेश आती।

शहज़ादए सदरुल अफ़ाज़िल हुज़ूर रहनुमाए मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद इख़्तिसासुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَظِيْم फ़रमाया करते थे कि मीराष व फ़राइज़ के फ़तवे कषरत से आते मगर ह़ज़रत को जवाब लिखने के लिये किताब देखते हुए नहीं देखा। आज तो एक बत़्न दो बत़्न चार बत़्न के फ़तवे अगर दारुल इफ़्ता में आ जाएं तो घन्टों किताबें देखी जाती हैं तब कहीं जा कर फ़तवे का जवाब लिखा जाता है और वोह भी कभी एक मुफ़्ती दूसरे मुफ़्ती के फ़तवे को मुस्तरद कर देता है मगर ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल का येह ह़ाल था कि बीस बीस इक्कीस इक्कीस बुत़ून के फ़तवे भी दारुल इफ़्ता में आ गए मगर ह़ज़रत क़लम बरदाश्ता बिग़ैर किताब देखे जवाब तह़रीर फ़रमा देते थे अलबत्ता उंगलियों पर कुछ शुमार करते ज़रूर देखा जाता और आप के फ़तवे के इस्तिर्दाद की कभी नौबत नहीं आई।

ख़ुश नवेसी :

आप की ख़त़्त़ाती ऐसी उ़मदा और क़वाइद के मुत़ाबिक़ थी कि सेंकड़ों ख़ुश नवेस इस फ़न में आप के शागिर्द हैं मज़ीद बर आं आप ख़त़ के सातों तर्ज़े तह़रीर में बे मिषाल कमाल रखते थे ह़त्ताकि हर एक रस्मुलख़त़ को बाएं हाथ से मा'कूस बआसानी निहायत ख़ुशख़त़ तह़रीर फ़रमा सकते थे।

जामिआ़ नई़मिया मुरादाबाद का क़ियाम :

हुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल ने सि. 1328 हि. में इरादा फ़रमाया कि एक ऐसा मद्रसा क़ाइम करना चाहिये जिस में मा'क़ूल व मनक़ूल की मे'यारी ता'लीम हो। चुनान्चे आप ने सब से पहले एक अनजुमन बनाई जिस के नाज़िम आप और सद्र ह़कीम ह़ाफ़िज़ नवाब ह़ामिय्युद्दीन अह़मद साह़िब मुरादाबादी हुए। इस अनजुमन के तह़्त एक मद्रसा क़ाइम फ़रमाया जिस को मद्रसए अहले सुन्नत कहा जाता था। जब नवाब साह़िब और इन के रुफ़क़ा व हमनवाओं का इनतिक़ाल हो गया तो अनजुमन ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो गई। अब मद्रसा आप की त़रफ़ मन्सूब किया जाने लगा और वोह मद्रसा नई़मिया के नाम से मशहूर हुवा फिर जब इस के फ़ारिग़ुत्तह़सील त़लबा व उ़–लमा ने अत़राफ़ व अकनाफ़ और मुल्क में फैल कर अपने अपने मक़ामात पर मद्रसे क़ाइम किये और उन का इलह़ाक़ मुरादाबाद के मर्कज़ी मद्रसए नई़मिया से किया और मुल्क के दीगर मदारिसे अहले सुन्नत में से बेशतर इसी मद्रसे से मुलह़िक़ व मुन्सलिक हो गए तो लाज़िमी त़ौर पर अब इस मद्रसे की हैषिय्यत राइजुल वक़्त ज़बान में यूनिवर्सिटी और क़दीम ज़बान में "जामिआ़" की हो गई। चुनान्चे सि. 1352 हि. में इस मद्रसे का नाम "जामिआ़ नई़मिया" रखा गया और आज तक इसी नाम से क़ाइम व मशहूर है।

जामिआ़ नई़मिया के इ़लावा भी आप ने कई दीनी ख़िदमात सर अन्जाम दीं, आ'ला दर्जे का बर्क़ी प्रेस लगाया, एक माहनामा "उस्वादुल आ'ज़म" जारी किया जो मुद्दतों शान से जारी रहा, काफ़ी ता'दाद में दीनी व मज़हबी किताबें आ'ला मे'यारे त़बाअ़त के साथ शाएअ़ फ़रमाईं, कई कई ऑल इन्डिया कॉन्फ़्रन्सें मुनअ़क़िद फ़रमाईं। रोज़ाना के शाहाना अख़राजात मजी़द बर आं, मगर आप को चन्दे की अपील करते, दस्ते त़लब फैलाते और लफ़्ज़े सुवाल मुंह से निकालते नहीं देखा गया और सारे अख़राजात अपने बटवे से ही पूरे फ़रमाते थे। येह नहीं कहा जा सकता कि लोग अज़ ख़ुद ह़ज़रत का हाथ नहीं बटाते थे लेकिन आप ने कभी मांगा नहीं।

तसनीफ़ात व तालीफ़ात :

दीनी व मिल्ली, सियासी व समाजी, तदरीस और तबलीग़ी ख़िदमात के बावुजूद हुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल ने तक़रीबन दो दर्जन किताबें बतौरे यादगार छोड़ी हैं।

﴾1﴿ तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
﴾2﴿ नईमुल बयान फ़ी तफ़सीरुल कुरआन
﴾3﴿ अल कलिमतुल इल्या लि आ'लाओ इल्मुल मुस्त़फ़ा
﴾4﴿ अत्त़य्यिबुल बयान दर रद्दे तक़्वियतुल ईमान
﴾5﴿ मज़ालिमे नजदिया बर मक़ाबिरे कुदसिय्या
﴾6﴿ उस्वातुल अ़ज़ाब अ़ला क़वामिउ़ल क़बाब
﴾7﴿ आदाबुल अख़्यार
﴾8﴿ सवानहे करबला
﴾9﴿ सीरते सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ
﴾10﴿ अत्तह़क़ीक़ात लि दफ़्इ़ल तलबीसात
﴾11﴿ इरशादुल अनाम फ़ी मह़फ़िलुल मौलूद वल क़ियाम
﴾12﴿ किताबुल अ़क़ाइद
﴾13﴿ ज़ादिल ह़रमैन
﴾14﴿ अल मुवालात
﴾15﴿ गुलबने ग़रीब नवाज़
﴾16﴿ शर्ह़े शर्ह़ माइते आ़मिल
﴾17﴿ प्राचीन काल
﴾18﴿ फ़न्ने सिपाह गिरी
﴾19﴿ शर्ह़े बुख़ारी (ना मुकम्मल, ग़ैर मत़बूआ़)
﴾20﴿ शर्ह़े कुत़बी (ना मुकम्मल, ग़ैर मत़बूआ़)
﴾21﴿ रियाज़े नईम (मजमूअ़ए कलाम)
﴾22﴿ कशफ़ुल ह़िजाब अ़न मसाइले ईसाले षवाब
﴾23﴿ फ़राइदुन्नूर फ़ी जराइदुल क़ुबूर

वफ़ात :

18 जुल हिज्जा, सि. 1367 हि. मुताबिक़ 23 अकतूबर सि. 1948 ई. बरोज़े जुमुअ़तुल मुबारक सदरुल अफ़ाज़िल ने दाइये अजल को लब्बैक कहा। वक़्ते विसाल होंटों पर मुस्कुराहट थी, कलिमए तृय्यिबा का विर्द जारी था, पेशानिये अक़्दस और चेहरए मुबारक पर बेहद पसीना आने लगा, अज़ खुद क़िब्ला रुख़ हो कर दस्तहाए पाक और क़दमहाए नाज़ को सीधा कर लिया, अब आवाज़ धीरे धीरे मध्धम होने लगी, शाहज़ादगान ने कान लगा कर सुना तो **ज़बान पर कलिमए तृय्यिबा जारी है**, दफ़अ़तन सीनए अक़्दस पर नूर का लमआ़ महसूस हुवा और 12 बज कर 20 मिनट पर अहले सुन्नत का येह सालार अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिला। اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ

आप की तदफ़ीन जामिआ़ नईमिया की मस्जिद के बाएं गोशे में की गई। आज भी आप से इकतिसाबे फ़ैज़ का सिलसिला जारी है और ता क़ियामत जारी रहेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

यहूदियों की मुख़ालफ़्त करो

मदीना 1 : *नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहनशाहे नबुव्वत, ताजदारे रिसालत* صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *ने इरशाद फ़रमाया : "यौमे आ़शूरे का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुख़ालफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो।"* (مسند امام احمد، ج۱، ص۵۱۸، حدیث ۲۱۵٤)

आ़शूरे का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नववीं या ग्यारहवीं मुहर्रमुल ह़राम का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

मदीना 2 : *ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा* رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنۡہُ *से रिवायत है, रसूलुल्लाह* صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *फ़रमाते हैं : "मुझे* ***अल्लाह*** *पर गुमान है कि आ़शूरे का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है।"* (صحیح مسلم، ص۵۹۰، حدیث۱۱٦۲)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْكِبْرِيَآءِ وَالْفَضْلِ وَالْكَرَمِ وَالْعَطَاءِ وَالنِّعْمَةِ وَالْاٰلَآءِ نَحْمَدُهٗ شَاكِرِيْنَ عَلَى النَّعْمَآءِ وَنَشْكُرُهٗ حَامِدِيْنَ بِالثَّنَآءِ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ فِیْ مَلَكُوْتِ الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ وَاَزْكَی الصَّلٰوةِ وَاَطْيَبُ السَّلَامِ عَلٰی سَيِّدِ الطَّاهِرِيْنَ اِمَامِ الْمُرْسَلِيْنَ خَاتَمِ الْاَنْبِيَآءِ اَلْمُتَوَّجِ بِتِيْجَانِ الْاِصْطِفَآءِ وَالْاِجْتِبَآءِ اَلْمُتَرَدِّیْ بِرِدَاءِ الشَّرَافَةِ وَالْاِرْتِضَاءِ صَاحِبِ اللِّوَآءِ يَوْمَ الْجَزَاءِ وَعَلٰی اٰلِهِ الْبَرَرَةِ الْاَتْقِيَاءِ وَاَصْحَابِهِ الرُّحَمَاءِ عَلَی الضُّعَفَاءِ وَالْخُلَفَاءِ وَالشُّهَدَاءِ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِهٖ بِاَسِنَّةِ الظُّلَمِ وَالْجَفَاءِ بَذَلُوْا اَنْفُسَهُمْ لِلّٰهِ بِاَتَمِّ الْاِخْلَاصِ وَالرِّضَاءِ خُصُوْصًا عَلٰی اِمَامِ اَهْلِ الْاِبْتِلَاءِ فِی الْكَرْبِ وَالْبَلَاءِ سَيِّدِ الشُّهَدَاءِ اِبْنِ الْبَتُوْلِ الزَّهْرَاءِ وَمَنْ كَانَ مَعَهٗ فِی الْكَرْبَلَاءِ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ اَخْلَصُوْا لِلّٰهِ حَارَبُوْا فِی اللّٰهِ وَثِقُوْا بِاللّٰهِ وَتَوَكَّلُوْا عَلَی اللّٰهِ اِعْتَصَمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ تَمَسَّكُوْا بِدِيْنِ اللّٰهِ نَالُوْا مِنَ اللّٰهِ رَحْمَةً وَّكَرَامَةً وَّعِزَّةً وَّشَرَافَةً فَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اَحْيَاءٌ اٰمِنِيْنَ مِنَ الْهَلَاكِ وَالْفَنَاءِ يُرْزَقُوْنَ فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ مِّنَ الْفَضْلِ وَالْعَطَاءِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

रसूले करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم की महब्बत

हर शख़्स जिस को अल्लाह तआला ने अक़्लो फ़हम की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया है। यक़ीन के साथ जानता है कि जिस के साथ अक़ीदत व नियाज़मन्दी ईमान में दाख़िल हो और बिग़ैर इस को माने हुए आदमी मोमिन न हो सके उस की महब्बत तमाम आलम से ज़ियादा ज़रूरी होगी। मां-बाप, अवलाद, अज़ीज़ो अक़ारिब के भी इन्सान पर हुक़ूक़ हैं और इन का अदा करना लाज़िम है। लेकिन एक शख़्स अगर इन सब को भूल जाए और उस के दिल में एक शम्मा भर महब्बत व उलफ़त बाक़ी न रहे और इन सब से महज़ बे तअल्लुक़ हो जाए तो उस के ईमान में कोई ख़लल न आएगा क्यूंकि ईमान लाने में मां-बाप, अज़ीज़ो अक़ारिब, अवलाद वग़ैरा का मानना लाज़िम व ज़रूरी न था लेकिन रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मानना मोमिन होने के लिये ज़रूर है। जब तक لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه के साथ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का मो'तक़िद न हो हरगिज़ मोमिन नहीं हो सकता तो अगर उस का रिश्तए महब्बत रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से टूटा तो यक़ीनन ईमान से ख़ारिज हुवा कि तसदीक़े रिसालत बे महब्बत बाक़ी नहीं रह सकती, इस लिये शरए मुतह्हर ने रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत हर शख़्स पर उस के तमाम ख़्वीशो अक़ारिब, अइज़्ज़ा व अह्बाब से ज़ियादा लाज़िम की है। क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

आयत : 1

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَ
كُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا
الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ
مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ (1)

ऐ ईमान वालो ! अपने बाप और भाइयों को दोस्त न समझो अगर वोह ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुम में से जो उन से दोस्ती करें वोही ज़ालिम हैं।

आयत : 2

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَ
اِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ
وَاَمْوَالُ نِ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ
تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ
تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا
حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا
يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ (3)

फ़रमा दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे (2) और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह तिजारत जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारी पसन्द के मकान येह चीज़ें तुम्हें **अल्लाह** और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो इन्तिज़ार करो कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए और **अल्लाह** फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।

---

1 .... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** ऐ ईमान वालो ! अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वोह ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुम में जो कोई उन से दोस्ती करेगा तो वोही ज़ालिम हैं। (پ ۱۰، التوبة: ۲۳)

2 .... **सवानहे करबला** के नुस्ख़ों में यहां "وَاِخْوَانُكُمْ" का तर्जमा लिखने से रह गया है। किताबत की ग़लती पर महमूल करते हुए हम ने तर्जमे में और "तुम्हारे भाई" का इज़ाफ़ा कर दिया है। .... **इल्मिय्या**

3 .... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान येह चीज़ें **अल्लाह** और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए और **अल्लाह** फ़ासिक़ों को राह नहीं देता। (پ ۱۰، التوبة: ۲۴)

आयत : 3

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○(1)

और वोह जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

आयत : 4

وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ○(2)

और **अल्लाह** व रसूल का ह़क़ ज़ाइद था कि उन्हें राज़ी करते अगर ईमान रखते थे।

आयत : 5

اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِاللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَجَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ○(3)

क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे **अल्लाह** व रसूल का तो उस के लिये जहन्नम की आग है हमेशा उस में रहेगा येही बड़ी रुस्वाई है।

मोअमिनीन और मोअमिनात की शान में इरशाद फ़रमाया :

आयत : 6

وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ○(4)

और **अल्लाह** व रसूल का हुक्म मानें येही हैं जिन पर अ़न क़रीब **अल्लाह** रह़्म करेगा बेशक **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

1.... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (پ١٠،التوبة:٦١)

2.... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** व रसूल का ह़क़ ज़ाइद था कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे। (پ١٠،التوبة:٦٢)

3.... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे **अल्लाह** और उस के रसूल का तो उस के लिये जहन्नम की आग है कि हमेशा उस में रहेगा येही बड़ी रुस्वाई है। (پ١٠،التوبة:٦٣)

4.... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** व रसूल का हुक्म मानें येह हैं जिन पर अ़न क़रीब **अल्लाह** रह़्म करेगा बेशक **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है। (پ١٠،التوبة:٧١)

आयत : 7

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ(1)

मदीने वालों और उन के गिर्द देहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें और न येह कि उन की जान से अपनी जान प्यारी समझें।

इन आयात से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत आबा व अजदाद, अम्बिया व औलिया, अवलाद, अ़ज़ीज़, अक़ारिब, दोस्त, अह़बाब, माल, दौलत, मस्कन, वत़न सब चीज़ों की महब्बत से और ख़ुद अपनी जान की महब्बत से ज़ियादा ज़रूरी व लाज़िम है। और अगर मां-बाप या अवलाद अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰہ تعالیٰ علیه واٰلهٖ وسلَّم के साथ राबित़ए अ़क़ीदत व महब्बत न रखते हों तो उन से दोस्ती व महब्बत रखना जाइज़ नहीं। क़ुरआने पाक में इस मज़मून की सदहा आयतें हैं। अब चन्द ह़दीषें पेश की जाती हैं :

ह़दीष : 1

बुख़ारी व मुस्लिम ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की, कि.......

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ۔(2)

हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में कोई मोमिन नहीं होता जब तक मैं उसे उस के वालिद और अवलाद और सब लोगों से ज़ियादा प्यारा और मह़बूब न होऊं।

1.... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *मदीने वालों और उन के गिर्द देहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें और न येह कि उन की जान से अपनी जान प्यारी समझें।* (پ ١١،التوبة:١٢٠)

2......صحيح البخاری، کتاب الایمان،باب حب الرسول من الایمان،الحدیث:١٥، ج١،ص١٧

ह़दीष : 2

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلٰثٌ مَّنْ كُنَّ فِيْهِ وَجَدَ بِهِنَّ حَلَاوَةَ الْاِيْمَانِ مَنْ كَانَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا وَمَنْ اَحَبَّ عَبْدًا لَا يُحِبُّهٗ اِلَّا لِلّٰهِ وَمَنْ يَكْرَهُ اَنْ يَّعُوْدَ فِى الْكُفْرِ بَعْدَ اَنْ اَنْقَذَهُ اللّٰهُ مِنْهُ كَمَا يَكْرَهُ اَنْ يُّلْقٰى فِى النَّارِ(1) (رواه البخاری ومسلم عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन चीज़ें जिस में हों वोह लज़्ज़त व शीरीनी ईमान की पा लेता है। ﴾1﴿ जिस को अल्लाह व रसूल सारे आ़लम से ज़ियादा प्यारे हों। ﴾2﴿ और जो किसी बन्दे को ख़ास अल्लाह के लिये मह़बूब रखता हो ﴾3﴿ और जो कुफ़्र से रिहाई पाने और मुसलमान होने के बा'द कुफ़्र में लौटने को ऐसा बुरा जानता हो जैसा अपने आप को आग में डाले जाने को बुरा जानता है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली चीज़ों को मह़बूब रखना हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में दाख़िल है। कुदरती त़ौर पर इन्सान जिस से मह़ब्बत रखता है उस से निस्बत रखने वाली तमाम चीज़ें उस को मह़बूब हो जाती हैं। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत रखने वाले भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वत़ने पाक और हुज़ूर के वत़ने पाक के रहने वालों और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से निस्बत रखने वाली हर चीज़ को जानो दिल से मह़बूब रखते हैं।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال...الخ، الحدیث:۶۷، ص ۴۱
وصحیح البخاری، کتاب الایمان، باب من کرہ ان یعود فی الکفر...الخ،
الحدیث:۲۱، ج۱، ص۱۹

ह़दीष : 3

عَـنِ ابْـنِ عَبَّـاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَحِبُّوا الْعَرَبَ لِثَلَاثٍ لِاَنِّیْ عَرَبِیٌّ وَالْقُرْاٰنُ عَرَبِیٌّ وَكَلَامُ اَهْلِ الْجَنَّةِ عَرَبِیٌّ۔(1)

(رواہ البیہقی فی شعب الایمان)

ह़ज़रते इबने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूरे अक़्दस रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अहले अ़रब को मह़बूब रखो तीन वजह से, वोह ये हैं :

﴾1﴿ मैं अ़रबी हूं।

﴾2﴿ क़ुरआन अ़रबी है।

﴾3﴿ अहले जन्नत की ज़बान अ़रबी है।

ह़दीष : 4

عَـنْ عُثْـمَانَ بْنِ عَفَّانَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ غَشَّ الْعَرَبَ لَمْ يَدْخُلْ فِیْ شَفَاعَتِیْ وَلَمْ تَنَلْهُ مَوَدَّتِیْ (2)

(رَوَاهُ التِّرْمِذِیُّ وَضَعَّفَهٗ وَالضِّعَافُ فِیْ مِثْلِ هٰذَا الْمَقَامِ مَقْبُوْلَةٌ)

ह़ज़रते उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अहले अ़रब से बुग़्ज़ व कदूरत रखी मेरी शफ़ाअ़त में दाख़िल न होगा और मेरी मुवद्दत से फ़ैज़याब न होगा।

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعظیم النبی...الخ، فصل فی معنی الصلاة علی النبی...الخ، الحدیث:۱۶۱۰،ج۲،ص۲۳۰

2 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب مناقب فی فضل العرب،الحدیث:۳۹۵۴،ج۵،ص۴۸۷

हदीष : 5

عَنْ سَلْمَانَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ قَالَ لِیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَاتَبْغَضْنِیْ فَتُفَارِقْ دِیْنَکَ قُلْتُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ کَیْفَ اَبْغَضُکَ وَبِکَ هَدَانَا اللّٰہُ قَالَ تَبْغَضُ الْعَرَبَ فَتَبْغَضُنِیْ(1)(رواہ الترمذی وحسنه)

हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम रसूले मुकर्रम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे फ़रमाया कि मुझ से बुग़्ज़ न करना कि दीन से जुदा हो जाएगा। मैं ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कैसे बुग़्ज़ कर सकता हूं ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही की बदौलत अल्लाह तआ़ला ने हमें हिदायत फ़रमाई। फ़रमाया कि जो अ़रबों से बुग़्ज़ करे तो हम से बुग़्ज़ करता है।

इन अहादीष से साफ़ ज़ाहिर है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने की वजह से अहले अ़रब के साथ महब्बत रखना मोमिन के लिये लाज़िम और अ़लामाते ईमान है और अगर किसी के दिल में अहले अ़रब की तरफ़ से कदूरत हो तो येह उस के ईमान का ज़ो'फ़ और महब्बत की ख़ामी है और अहले अ़रब तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वत़ने पाक के रहने वाले हैं, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली हर चीज़ मोमिने मुख़्लिस के लिये क़ाबिले एह़तिराम और मह़बूबे दिल है। सह़ाबए किबार رِضْوَانُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़दमगाह का अदब करते थे। चुनान्चे मिम्बर शरीफ़ के जिस दर्जे पर हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ रखते ख़लीफ़ए अव्वल ने अदबन इस पर बैठने की जुरअत न की और ख़लीफ़ए दुवुम ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की निशस्तगाह पर भी बैठने की जुरअत न की और ख़लीफ़ए षालिष ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की निशस्तगाह पर कभी न बैठे।(2) (رواہ الطبرانی عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب فی فضل العرب، الحدیث: ۳۹۵۳، ج۵، ص۴۸۷

2 ......المعجم الاوسط للطبرانی، باب من اسمه محمود، الحدیث: ۷۹۲۳، ج۶، ص۴۰

इस से अन्दाज़ा करना चाहिये कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आल व अस्हाब के साथ महब्बत करना और इन के अदब व ता'ज़ीम को लाज़िम जानना किस क़दर ज़रूरी है और यक़ीनन इन हज़रात की महब्बत सय्यिदे आलम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की महब्बत है और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत ईमान।

हदीष : 6

عَـنْ عَبْـدِ الـلّٰهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَللّٰهَ اَلـلّٰـهَ فِـىْ اَصْـحَابِىْ لَا تَتَّخِذُوْهُمْ غَرَضًا مِنْ بَعْدِى فَمَنْ اَحَبَّهُمْ فَبِحُبِّىْ اَحَبَّهُمْ وَمَـنْ اَبْـغَـضَهُمْ فَبِبُغْضِى اَبْغَضَهُمْ وَمَنْ اٰذَا هُمْ فَقَدْ اٰذَانِى وَمَنْ اٰذَانِىْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰهَ وَمَنْ اٰذَى اللّٰهَ يُوْشِكُ اَنْ يَّأْخُذَهٗ (1)(رواہ الترمذی)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुकर्रर फ़रमाया कि मेरे अस्हाब के हक़ में खुदा से डरो, खुदा का ख़ौफ़ करो। इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ। जिस ने इन्हें महबूब रखा मेरी महब्बत की वजह से महबूब रखा और जिस ने इन से बुग़्ज़ किया वोह मुझ से बुग़्ज़ रखता है, इस लिये उस ने इन से बुग़्ज़ रखा, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने बेशक खुदाए तआ़ला को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह** तआ़ला को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह** तआ़ला उसे गिरिफ़्तार करे।

मुसलमान को चाहिये कि सहाबए किराम का निहायत अदब रखे और दिल में इन की अ़क़ीदत व महब्बत को जगह दे। इन की महब्बत हुज़ूर की महब्बत है और जो बद नसीब सहाबा की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने खुदा और रसूल है। मुसलमान ऐसे शख़्स के पास न बैठे।

---

1 ......سنن الترمذی،کتاب المناقب، باب فی من سب اصحاب النبی،الحدیث:۳۸۸۸، ج۵،ص ۴۶۳

ह़दीष : 7

عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا رَاَيْتُمُ الَّذِيْنَ يَسُبُّوْنَ اَصْحَابِىْ فَقُوْلُوْا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلٰى شَرِّكُمْ۔ (1)(رواه الترمذی)

हुज़ूरे अक्दस रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम उन लोगों को देखो जो मेरे अस्ह़ाब की बदगोई करते हैं तो कह दो कि तुम्हारे शर पर खुदा की ला'नत।

इन अहादीष से सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِيْن का मर्तबा और मोमिन के लिये उन के साथ महब्बतो इख़्लास व अदबो ता'ज़ीम का लाज़िम होना और इन के बदगोयों से दूर रहना षाबित हुवा। इसी लिये अहले सुन्नत को जाइज़ नहीं कि शीओं की मजलिस में शिर्कत करें। अस्हाबे रसूल के दुश्मनों से मैल जोल मोमिने ख़ालिसुल ए'तिक़ाद का काम नहीं। आदमी अपने दुश्मनों के साथ निशस्त व बरख़ास्त और बखुशदिली बात करना गवारा नहीं करता है तो दुश्मनाने रसूल व दुश्मनाने अस्हाबे रसूल के साथ कैसे गवारा कर सकता है।

अस्हाबे किबार में खुलफ़ाए राशिदीन या'नी

﴾1﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ)

﴾2﴿ हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ)

﴾3﴿ हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ)

﴾4﴿ हज़रते सय्यिदुना अ़ली मुर्तज़ा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) का मर्तबा सब से बुलन्दो बाला है।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی من سب اصحاب النبی،الحدیث:۳۸۹۲، ج۵،ص۴۶۳

ख़लीफ़ए अव्वल

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इस्मे गिरामी अ़ब्दुल्लाह है। आप के अजदाद के अस्मा येह हैं : अ़ब्दुल्लाह (अबू बक्र सिद्दीक़) बिन अबी क़ह़ाफ़ा उ़षमान बिन आ़मिर बिन अ़म्र बिन का'ब बिन सा'द बिन तैम बिन मुर्रह बिन का'ब बिन लवी बिन ग़ालिब क़ुरशी। हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का नसब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नसबे पाक से मुर्रह में मिलता है। आप का लक़ब अ़तीक़ व सिद्दीक़ है। अबू या'ला ने अपनी मुस्नद में और इब्ने सा'द व ह़ाकिम ने एक ह़दीषे सह़ीह़ उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत की है, वोह फ़रमाती हैं कि एक रोज़ मैं मकान में थी और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब सेह़न में थे मेरे इन के दरमियान पर्दा पड़ा था। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तशरीफ़ लाए। हु़ज़ूरे अक़्दस, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस को "अ़तीक़ुम्मिनन्नार"[1] का देखना अच्छा मा'लूम हो वोह अबू बक्र को देखे। उस रोज़ से ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का लक़ब अ़तीक़ हो गया। आप का एक लक़ब सिद्दीक़ है। इब्ने इस्ह़ाक़ ह़सन बसरी और क़तादा से रावी कि सुब्ह़े शबे मे'राज से आप का येह लक़ब मशहूर हुवा।[2]

मुस्तदरक में उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत की, कि ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास मुशरिकीन पहुंचे और वाक़िअ़ए मे'राज जो उन्हों ने हु़ज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से सुना था। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को सुना कर कहने लगे कि अब

1..... या'नी आतशे दोज़ख़ से आज़ाद। 12 मिन्ह

2......مسند ابی یعلی، مسند عائشۃ، الحدیث:۴۸۷۸، ج۴، ص ۲۸۲

و تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی اسمہ ولقبہ، ص ۲۳

हुज़ूर की निस्बत क्या कहते हो ? आप ने फ़रमाया : لَقَدْ صَدَقَ اِنِّیْ لَاُصَدِّقُهٗ (हुज़ूर ने यक़ीनन सच फ़रमाया, मैं हुज़ूर की तस्दीक़ करता हूं) इसी वजह से आप का लक़ब सिद्दीक़ हुवा ।(1)

हाकिम ने मुस्तदरक में नज़ाल बिन सबुरा से बअस्नादे जय्यिद रिवायत की, कि हम ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की निस्बत दरयाफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया कि येह वोह शख़्स हैं जिन का नाम **अल्लाह** तआ़ला ने बज़बाने जिब्रीले अमीन व बज़बाने सरवरे अम्बिया صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सिद्दीक़ रखा, वोह नमाज़ में हुज़ूर के ख़लीफ़ा थे । हुज़ूर ने उन्हें हमारे दीन के लिये पसन्द फ़रमाया तो हम अपनी दुन्या के लिये उन से राज़ी हैं ।(2) (या'नी ख़िलाफ़त पर)

दारे क़ुत़नी व हाकिम ने अबू यह़्या से रिवायत किया कि मैं शुमार नहीं कर सकता कितनी मरतबा मैं ने अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बर सरे मिम्बर येह फ़रमाते सुना है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान पर अबू बक्र का नाम सिद्दीक़ रखा ।(3)

त़बरानी ने बसनदे जय्यिद सह़ीह़ ह़कीम बिन सा'द से रिवायत की है कि मैं ने अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बह़लफ़ फ़रमाते सुना है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अबू बक्र का नाम सिद्दीक़ आसमान से नाज़िल फ़रमाया ।(4)

---

1 ......المستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابة رضی اللّٰه عنهم، الاحادیث المشعرة بتسمیة ابی بکر صدیقاً، الحدیث:۴۴۶۳، ج۴، ص۴

2 ......المستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابة رضی اللّٰه عنهم، الاحادیث المشعرة بتسمیة ابی بکرصدیقاً، الحدیث:۴۴۶۲، ج۴، ص۴
وتاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰه تعالٰی عنه، فصل فی اسمه ولقبه، ص۲۳

3 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰه تعالٰی عنه، فصل فی اسمه ولقبه، ص۲۳

4 ......المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:۱۴، ج۱، ص۵۵

हज़रते सिद्दीक़, हुज़ूरे अन्वर, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते मुबारका से दो साल चन्द माह बा'द मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुए येही सह़ीह़ है और येह जो मशहूर है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सिद्दीक़ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि हम बड़े हैं या तुम ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि बड़े हुज़ूर हैं, उ़म्र मेरी ज़ियादा है, येह रिवायत मुर्सल व ग़रीब है और वाक़ेअ़ में येह गुफ़्तगू हज़रते अ़ब्बास से पेश आई थी।(1)

आप मक्कए मुकर्रमा में सुकूनत रखते थे। ब सिलसिलए तिजारत बाहर भी तशरीफ़ ले जाते थे। अपनी क़ौम में बहुत बड़े दौलत मन्द और साह़िबे मुरव्वतो एह़सान थे। ज़मानए जाहिलिय्यत में क़ुरैश के रईस और उन की मजलिसे शुरा(2) के रुक्न थे। मुआ़मला फ़हमी व दानाई में आप शोहरत रखते थे। इस्लाम के बा'द आप बिलकुल इसी त़रफ़ मसरूफ़ हो गए और सब बातों से दिल हट गया। ज़मानए जाहिलिय्यत में भी आप का चाल–चलन निहायत पाकीज़ा और अफ़आ़ल निहायत मतीन व शाइस्ता थे।(3)

इबने अ़साकिर ने अबू या'ला रियाह़ी से नक़्ल किया है कि मजमए अस्ह़ाब में ह़ज़रते अबू बक्र से दरयाफ़्त किया गया कि आप ने ज़मानए जाहिलिय्यत में कभी शराब पी है ? फ़रमाया : पनाह बख़ुदा, इस पर कहा गया : येह क्यूं ? फ़रमाया : मैं अपनी मुरव्वत व आबरू की हि़फ़ाज़त करता था और शराब पीने वाले की मुरव्वत व आबरू

1......تاریخ الخلفاء،ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،فصل فی مولدہ ومنشئہ،ص ۲۴

2....... मजलिसे शुरा की रुकनिय्यत एक बड़ा मन्सब था। अ़रब में कोई बादशाह तो था नहीं, तमाम उमूर एक कमेटी के मुतअ़ल्लिक़ थे जिस के दस मिम्बर थे। कोई जंग का, कोई मालियात का, कोई किसी और काम का और हर मिम्बर अपने मह़कमे की विलायते आ़म्मा और इख़्तियारे कामिल रखता था। 12 मिन्ह

3......تاریخ الخلفاء،ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،فصل فی مولدہ ومنشئہ،ص ۲۴

बरबाद हो जाती है। येह ख़बर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पहुंची तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो मरतबा फ़रमाया कि अबू बक्र ने सच कहा।(1)

हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इस्लाम

मुहद्दिषीन की जमाअ़ते कषीरा इस पर ज़ोर देती है कि हज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सब से पहले इस्लाम लाए।(2)

इबने अ़साकिर ने हज़रते अ़ली मुर्तज़ा کرم اللہ وجھہ الکریم से रिवायत की है कि मर्दों में सब से पहले हज़रते अबू बक्र ईमान लाए। इसी त़रह़ इबने सा'द ने अबू अर्वा दोसी से इसी मज़्मून की ह़दीष रिवायत की। त़बरानी ने मो'जमे कबीर में और अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद ने ज़वाइदुज़्ज़ोह्द में शा'बी से रिवायत की, कि उन्हों ने ह़ज़रते इबने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से सुवाल किया कि सह़ाबए किराम में अव्वलुल इस्लाम कौन हैं ? फ़रमाया : अबू बक्र सिद्दीक़। और ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वोह अशआ़र पढ़े जो ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मद्ह़ में हैं और उन में आप के सब से पहले इस्लाम लाने का ज़िक्र है। अबू नुऐ़म ने फ़ुरात बिन साइब से एक रिवायत की है उस में है कि मैं ने मैमून बिन मेहरान से दरयाफ़्त किया कि अबू बक्र पहले इस्लाम लाए या अ़ली ? उन्हों ने जवाब दिया कि .....ह़ज़रते अबू बक्र बह़ीरा राहिब के ज़माने में ईमान लाए। उस वक़्त तक ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा पैदा भी न हुए थे।(3)

---

1 ......تاریخ الخلفاء،ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،فصل کان ابو بکر اعف الناس فی الجاھلیۃ،ص ۲۴

2 ......اسد الغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ، عبد اللّٰہ بن عثمان ابوبکر الصدیق،ج۳،ص۳۱۷

3 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی اسلامہ، ص ۲۵ ملخصاً

सहाबा व ताबिईन वग़ैरहुम की एक जमाअ़ते कषीरा इस की क़ाइल है कि सब से पहले मोमिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ हैं और बा'ज़ों ने इस पर इजमाअ़ किया है। ذَکَرَہُ الْعَلَّامَۃُ جَلَالُ الدِّیْنِ اَلسُّیُوْطِیُّ رَحِمَہُ اللّٰہُ فِیْ تَارِیْخِ الْخُلَفَاء

अगर्चे सहाबए किराम व ताबिईन वग़ैरहुम की कषीर जमाअ़तों ने इस पर ज़ोर दिया है कि सिद्दीक़े अकबर सब से पहले मोमिन हैं। मगर बा'ज़ ह़ज़रात ने येह भी फ़रमाया कि सब से पहले मोमिन ह़ज़रते अ़ली हैं। बा'ज़ ने येह कहा कि ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सब से पहले ईमान से मुशर्रफ़ हुईं। इन अक़्वाल में ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मा, ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस त़रह़ तत़बीक़ दी है कि मर्दों में सब से पहले ह़ज़रते अबू बक्र मुशर्रफ़ बईमान हुए और औ़रतों में ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन ख़दीजा और नौ उ़म्र साह़िबज़ादों में ह़ज़रते अ़ली। (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)[1]

इबने अबू ख़ैषमा ने बसनदे सह़ीह़ ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत की, कि सब से पहले ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ने वाले ह़ज़रते अबू बक्र हैं।[2]

इबने इसह़ाक़ ने एक ह़दीष रिवायत की, कि ह़ुज़ूरे अक़दस नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सिवाए अबू बक्र के और कोई ऐसा शख़्स नहीं जो मेरी दा'वत पर बे तवक़्क़ुफ़ व तअम्मुल ईमान लाया हो।[3]

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने इस्लाम लाने के वक़्त से दमे आख़िर तक ह़ुज़ूरे अक़दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकाते सोह़बत से फ़ैज़याब रहे और सफ़र व ह़ज़र में कहीं

---

1 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی اسلامہ، ص ۲۶
2 ......تاریخ الخلفاء،ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،فصل فی اسلامہ،ص ۲۵
3 ......تاریخ الخلفاء،ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،فصل فی اسلامہ،ص ۲۷

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से जुदा नहीं हुए और सिवाए उस हज व गज़्वे के जिस की हुज़ूर ने इजाज़त अ़ता फ़रमाई और कोई सफ़र हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़लाहिदा न किया। तमाम मुशाहिद में हुज़ूर के साथ हाज़िर हुए। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत की और अपने इयाल व अवलाद को खुदा और रसूल की महब्बत में छोड़ दिया। आप जूदो सख़ा में आ'ला मर्तबा रखते हैं। इस्लाम लाने के वक़्त आप के पास चालीस हज़ार दीनार थे। येह सब इस्लाम की हिमायत में ख़र्च फ़रमाए। बुर्दों को आज़ाद कराना, मुसलमान असीरों को छुड़ाना आप का एक प्यारा शग़्ल था। बज़्लो करम में हातिम ताई को आप से कुछ भी निस्बत नहीं।[1]

हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम पर किसी शख़्स का एह़सान न रहा, हम ने सब का बदला कर दिया सिवाए अबू बक्र के कि इन का बदला **अल्लाह** तआ़ला रोज़े क़ियामत अ़ता फ़रमाएगा और मुझे किसी के माल ने वोह नफ़्अ़ नहीं दिया जो अबू बक्र के माल ने दिया।[2] (رواہ الترمذی عن ابی ہریرہ)

ज़हे नसीब सिद्दीक़ के, कि हुज़ूरे अन्वर, सुल्ताने दारैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की शान में येह कलिमे इरशाद फ़रमाए। हज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सहाबए किराम में सब से आ'लम व अज़्का हैं। इस का बारहा सहाबए किराम ने ए'तिराफ़ फ़रमाया है। किराअते क़ुरआन, इल्मे अनसाब, इल्मे ता'बीर में आप फ़ज़्ले जली रखते हैं। क़ुरआने करीम के हाफ़िज़ हैं।[3] (ذکرہ النووی فی التھذیب)

---

1 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی صحبتہ ومشاھدہ، ص۲۷ و فصل فی انفاقہ مالہ علی رسول اللّٰہ...الخ، ص۲۹ ملخصاً

2 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، الحدیث: ۳۶۸۱، ج۵، ص ۳۷۴

3 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ عنہ، فصل فی علمہ...الخ، ص ۳۱-۳۳ ملخصاً

अफ़्ज़लिय्यत :

अहले सुन्नत का इस पर इजमाअ़ है कि अम्बिया عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम आ़लम से अफ़्ज़ल ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ हैं, इन के बा'द ह़ज़रते उ़मर, इन के बा'द ह़ज़रते उ़षमान, इन के बा'द ह़ज़रते अ़ली, इन के बा'द तमाम अ़शरए मुबश्शरा, इन के बा'द बाक़ी अहले बद्र, इन के बा'द बाक़ी अहले उहुद, इन के बा'द बाक़ी अहले बैअ़त, फिर तमाम सह़ाबा। येह इजमाअ़ अबू मन्सूर बग़दादी ने नक़्ल किया है। इबने अ़साकिर ने ह़ज़रते इबने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत की, फ़रमाया कि हम अबू बक्र व उ़मर व उ़षमान व अ़ली को फ़ज़ीलत देते थे, बह़ाल येह कि सरवरे अकरम عَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हम में तशरीफ़ फ़रमा हैं। इमाम अह़मद वग़ैरा ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत किया कि आप ने फ़रमाया कि इस उम्मत में नबी عَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द सब से बेहतर अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا) हैं। ज़हबी ने कहा कि येह ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से बित्तवातिर मनक़ूल है।(1)

इबने अ़साकिर ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला से रिवायत की, कि ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کرم اللہ وجهه الكريم ने फ़रमाया : जो मुझे ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर से अफ़्ज़ल कहेगा तो मैं उस को मुफ़्तरी की सज़ा दूंगा।(2)

ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की शान में बहुत आयतें और बकषरत ह़दीषें वारिद हुईं जिन से आप के फ़ज़ाइले जलीला मा'लूम होते हैं। चन्द अह़ादीष यहां ज़िक्र की जाती हैं :

---

1 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی انه افضل الصحابة وخیرهم، ص ۳۴

2 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی انه افضل الصحابة وخیرهم، ص ۳۵

तिरमिज़ी ने ह़ज़रते इबने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : तुम मेरे साह़िब हो, ह़ौज़े कौषर पर और तुम मेरे साह़िब हो ग़ार में ।[1]

इबने अ़साकिर ने एक ह़दीष नक़्ल की, कि हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : नेकी की तीन सो साठ ख़स्लतें हैं । ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! इन में से कोई मुझ में भी है ? फ़रमाया : तुम में वोह सब हैं, तुम्हें मुबारक हो ! इन्हीं इबने अ़साकिर ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अबू बक्र की मह़ब्बत और इन का शुक्र मेरी तमाम उम्मत पर वाजिब है ।[2]

बुख़ारी ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि अबू बक्र हमारे सय्यिद व सरदार हैं ।[3]

त़बरानी ने औसत़ में ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, आप ने फ़रमाया : बा'दे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से बेहतर अबू बक्र व उ़मर हैं, मेरी मह़ब्बत और अबू बक्र व उ़मर का बुग़्ज़ किसी मोमिन के दिल में जम्अ़ न होगा ।[4]

ख़िलाफ़त :

बकषरत आयात व अह़ादीष आप की ख़िलाफ़त की त़रफ़ मुशीर हैं । तिरमिज़ी व ह़ाकिम ने ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، الحدیث: ۳۶۹۰، ج۵، ص ۳۷۸

2 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی الاحادیث الواردۃ فی فضلہ...الخ، ص ۴۴

3 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب بلال بن رباح...الخ، الحدیث: ۳۷۵۴، ج۲، ص ۵۴۷

4 ......المعجم الاوسط للطبرانی، الحدیث: ۳۹۲۰، ج۳، ص ۷۹ ملخصاً

रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : जो लोग मेरे बा'द हैं, अबू बक्र व उ़मर, इन का इत्तिबाअ़ करो।(1)

इबने अ़साकिर ने इबने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत की, कि एक औ़रत हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में हाज़िर हुई। कुछ दरयाफ़्त करती थी। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : फिर आएगी। अ़र्ज़ की : अगर मैं फिर हाज़िर होऊं और हुज़ूर को न पाऊं या'नी उस वक़्त हुज़ूर पर्दा फ़रमा चुकें। इस पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तू आए और मुझे न पाए तो अबू बक्र की ख़िदमत में हाज़िर हो जाना क्यूंकि मेरे बा'द वोही मेरे ख़लीफ़ा हैं।(2)

बुख़ारी व मुस्लिम ने ह़ज़रते अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मरीज़ हुए और मरज़ ने ग़लबा किया तो फ़रमाया कि अबू बक्र को हुक्म करो कि नमाज़ पढ़ाएं। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم वोह नर्म दिल आदमी हैं। आप की जगह खड़े हो कर नमाज़ न पढ़ा सकेंगे। फ़रमाया : हुक्म दो अबू बक्र को कि नमाज़ पढ़ाएं। ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फिर वोही उ़ज़्र पेश किया। हुज़ूर ने फिर येही हुक्म ब ताकीद फ़रमाया और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारक में नमाज़ पढ़ाई। येह ह़दीष मुतवातिर है। ह़ज़रते आ़इशा व इबने मसऊ़द व इबने अ़ब्बास व इबने उ़मर व अ़ब्दुल्लाह बिन ज़मआ़ व अबू सईद व

---

1 ......المستدرک للحاکم،کتاب معرفة الصحابة رضی اللّٰه عنهم،احادیث فضائل الشیخین،

الحدیث:۴۵۱۱،ج۴،ص۲۳

2 ......تاریخ الخلفاء،ابوبکر الصدیق رضی اللّٰه تعالٰی عنه،فصل فی الاحادیث والآیات المشیرة الی خلافته...الخ،ص۴۷

अ़ली बीन अबी त़ालिब व ह़फ़्सा वग़ैरहुम से मरवी है । उ़-लमा फ़रमाते हैं कि इस ह़दीष में इस पर बहुत वाज़ेह़ दलालत है कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुत़लक़न तमाम सह़ाबा से अफ़ज़ल और ख़िलाफ़त व इमामत के लिये सब से अह़क़ व औला हैं ।(1)

अशअ़री का क़ौल है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इमामत का हुक्म दिया जब कि अन्सार व मुहाजिरीन ह़ाज़िर थे । और ह़दीष में है कि क़ौम की इमामत वोह करे जो सब में अक़्रअ हो । इस से मा'लूम होता है कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तमाम सह़ाबा में सब से अक़्रअ और क़ुरआने करीम के सब से बड़े आ़लिम थे । इसी लिये सह़ाबए किराम ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अह़क़ बिल ख़िलाफ़ा होने का इसतिद्लाल किया है । इन इसतिद्लाल करने वालों में से ह़ज़रते उ़मर और ह़ज़रते अ़ली भी हैं । (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

एक जमाअ़ते उ़-लमा ने ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त आयाते क़ुरआनिया से मुस्तम्बत़ की है ।(2)

وَقَدْ ذَکَرَهَا الشَّیْخُ جَلَالُ الدِّیْنِ السُّیُوْطِیُّ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْهِ فِیْ تَارِیْخِه

इलावा बरीं इस ख़िलाफ़ते राशिदा पर जमीअ़ सह़ाबा और तमाम उम्मत का इजमाअ़ है । लिहाज़ा इस ख़िलाफ़त का मुन्किर शरअ़ का मुख़ालिफ़ और गुमराह बददीन है । ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ज़मानए ख़िलाफ़त मुसलमानों के लिये ज़िल्ले रह़मत षाबित हुवा और दीने मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को जो ख़त़राते अ़ज़ीमा और हौलनाक अन्देशे पेश आ गए थे वोह ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की राए साइब,

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان،باب اهل العلم و الفضل...الخ، الحدیث:۶۷۸، ج ۱،ص ۲۴۲ و تاریخ الخلفاء،ابوبکر الصدیق رضی اللّٰه تعالٰی عنه،فصل فی الاحادیث والآیات المشیرة الی خلافته...الخ، ص۴۷،۴۸ملتقطاً

2 ......تاریخ الخلفاء،ابوبکر الصدیق رضی اللّٰه تعالٰی عنه،فصل فی الاحادیث والآیات المشیرة الی خلافته...الخ،ص۴۸-۴۹

तदबीरे सहीह और कामिल दीनदारी व ज़बरदस्त इत्तिबाए सुन्नत की बरकत से दफ़्अ़ हुए और इस्लाम को वोह इस्तिह्काम हासिल हुवा कि कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन लरज़ने लगे और ज़ईफ़ुल ईमान लोग पुख़्ता मोमिन बन गए। आप की ख़िलाफ़ते राशिदा का अ़हद अगर्चे बहुत थोड़ा और ज़माना निहायत क़लील है लेकिन इस से इस्लाम को ऐसी अज़ीमुश्शान ताईदें और कुव्वतें हासिल हुईं कि किसी ज़बरदस्त हुकूमत के तवील ज़माने को इस से कुछ निस्बत नहीं हो सकती।

आप के अ़हदे मुबारक के चन्द अहम वाक़िआ़त येह हैं कि आप ने जैशे उसामा की तनफ़ीज़ की जिस को हुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने अ़हदे मुबारक के आख़िर में शाम की तरफ़ रवाना फ़रमाया था। अभी येह लश्कर थोड़ी ही दूर पहुंचा था और मदीनए तय्यिबा के क़रीब मक़ामे ज़ीख़ुशुब ही में था कि हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस आ़लम से पर्दा फ़रमाया। येह ख़बर सुन कर अतराफ़े मदीना के अ़रब इस्लाम से फिर गए और मुर्तद हो गए। सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم ने मुज्तमअ़ हो कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ पर ज़ोर दिया कि आप इस लश्कर को वापस बुला लें। इस वक़्त इस लश्कर का रवाना करना किसी तरह मस्लहत नहीं, मदीने के गिर्द तो अ़रब के तवाइफ़े कषीरा मुर्तद हो गए और लश्कर शाम को भेज दिया जाए। इस्लाम के लिये येह नाज़ुक तरीन वक़्त था, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात से कुफ़्फ़ार के हौसले बढ़ गए थे और उन की मुर्दा हिम्मतों में जान पड़ गई थी, मुनाफ़िक़ीन समझते थे कि अब खेल खेलने का वक़्त आ गया। ज़ईफ़ुल ईमान दीन से फिर गए। मुसलमान एक ऐसे सदमे में शिकस्ता दिल और बेताबो तवां हो रहे हैं जिस का मिष्ल दुन्या की आंख ने कभी नहीं देखा। उन के दिल घाइल हैं और आंखों से अश्क जारी हैं, खाना पीना बुरा मा'लूम होता है, जिन्दगी एक नागवार मुसीबत नज़र आती है। उस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जानशीन को नज़्म क़ाइम करना, दीन का

संभालना, मुसलमानों की ह़िफ़ाज़त करना, इरतिदाद के सैलाब को रोकना किस क़दर दुश्वार था। बावुजूद इस के रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रवाना किये हुवे लश्कर को वापस करना और मरज़िये मुबारका के ख़िलाफ़ जुरअत करना सिद्दीक़े सरापा सिद्क़ का राबितए नियाज़मन्दी गवारा न करता था और इस को वोह हर मुश्किल से सख़्त तर समझते थे। इस पर सह़ाबा का इसरार कि लश्कर वापस बुला लिया जाए और ख़ुद ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का लौट आना और ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ करना कि क़बाइले अ़रब आमादए जंग और दरपे तख़रीबे इस्लाम हैं और कार आज़मा बहादुर मेरे लश्कर में हैं इन्हें इस वक़्त रूम पर भेजना और मुल्क को ऐसे दिलावर मर्दाने जंग से ख़ाली कर लेना किसी त़रह़ मुनासिब मा'लूम नहीं होता। येह ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के लिये और मुश्किलात थीं। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُم ने ए'तिराफ़ किया है कि इस वक़्त अगर ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की जगह दूसरा होता तो हरगिज़ मुस्तक़िल न रहता और मसाइबो अफ़्कार का येह हुजूम और अपनी जमाअ़त की परेशान ह़ालत मबहूत कर डालती मगर अल्लाहु अकबर ! ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के पाए षबात को ज़र्रा भर लग़ज़िश न हुई और उन के इस्तिक़्लाल में एक शम्मा फ़र्क़ न आया। आप ने फ़रमाया कि अगर परन्द मेरी बोटियां नोच खाएं तो मुझे येह गवारा है मगर हु़ज़ूरे अन्वर, सय्यदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मरज़िये मुबारक में अपनी राए को दख़्ल देना और हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रवाना किये हुए लश्कर को वापस करना हरगिज़ गवारा नहीं। येह मुझ से नहीं हो सकता। चुनान्चे ऐसी ह़ालत में आप ने लश्कर रवाना फ़रमा दिया।

इस से ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की ह़ैरत अंगेज़ शुजाअ़त व लियाक़त और कमाले दिलेरी व जवांमर्दी के इ़लावा इन के तवक्कुले सादिक़ का पता चलता है और दुश्मन भी इन्साफ़न येह कहने पर मजबूर होता है कि क़ुदरत ने हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द ख़िलाफ़त व जानशीनी की आ'ला क़ाबिलिय्यत व अहलिय्यत ह़ज़रते सिद्दीक़

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अ़ता फ़रमाई थी। अब येह लश्कर रवाना हुवा और जो क़बाइल मुर्तद होने के लिये तय्यार थे और येह समझ चुके थे कि हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द इस्लाम का शीराज़ा ज़रूर दरहम बरहम हो जाएगा और इस की सत़वत व शौकत बाक़ी न रहेगी। उन्हों ने जब देखा कि लश्करे इस्लाम रूमियों की सरकोबी के लिये रवाना हो गया उसी वक़्त उन के ख़याली मन्सूबे ग़लत़ हो गए। उन्हों ने समझ लिया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अ़हदे मुबारक में इस्लाम के लिये ऐसा ज़बरदस्त नज़्म फ़रमा दिया है जिस से मुसलमानों का शीराज़ा दरहम बरहम नहीं हो सकता और वोह ऐसे ग़म व अन्दोह के वक़्त में भी इस्लाम की तबलीग़ व इशाअ़त और इस के सामने अक़्वामे आ़लम को सरनिगूं करने के लिये एक मशहूर व ज़बरदस्त क़ौम पर फ़ौजकशी करते हैं। लिहाज़ा येह ख़याल ग़लत़ है कि इस्लाम मिट जाएगा और इस में कोई कुव्वत बाक़ी न रहेगी बल्कि अभी सब्र के साथ देखना चाहिये कि येह लश्कर किस शान से वापस होता है। फ़ज़्ले इलाही से येह लश्करे ज़फ़रे पैकर फ़तह़याब हुवा, रूमियों को हज़ीमत हुई।

जब येह फ़ातेह़ लश्कर वापस आया वोह तमाम क़बाइल जो मुर्तद होने का इरादा कर चुके थे इस नापाक क़स्द से बाज़ आए और इस्लाम पर सिदक़ के साथ क़ाइम हुए। बड़े बड़े जलीलुल क़द्र साइबुल राए सहा़बा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जो इस लश्कर की रवानगी के वक़्त निहायत शिद्दत से इख़्तिलाफ़ फ़रमा रहे थे अपनी फ़िक्र की ख़त़ा और सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की राए मुबारक के साइब और इन के इ़ल्म की वुस्अ़त के मो'तरिफ़ हुए।(1)

---

1 ......الریاض النضرة فی مناقب العشرة،القسم الثانی،الباب الاول فی مناقب خلیفة رسول اللّٰہ ابی بکر الصدیق...الخ، الفصل التاسع فی خصائصه، ذکر شدة باسه وثبات قلبه...الخ،ج ١، الجزء ١،ص ١٤٨، ١٤٩ ملخصاً

इसी ख़िलाफ़ते मुबारका का एक अहम वाक़िआ़ मानईने ज़कात के साथ अ़ज़्मे क़िताल है जिस का मुख़्तसर ह़ाल येह है जब ह़ुज़ूरे अक़्दस, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात की ख़बर मदीनए त़य्यिबा के ह़वाली व अत़राफ़ में मशहूर हुई तो अ़रब के बहुत गुरौह मुर्तद हो गए और उन्हों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया। ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उन से क़िताल करने के लिये उठे, अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और दूसरे सह़ाबा رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने वक़्त की नज़ाकत, इस्लाम की नौउ़म्री, दुश्मनों की कुव्वत, मुसलमानों की परेशानी, परागन्दा ख़ात़िरी का लिह़ाज़ फ़रमा कर मश्वरा दिया कि इस वक़्त जंग के लिये हथयार न उठाए जाएं मगर ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपने इरादे पर मज़बूत़ी के साथ क़ाइम रहे और आप ने फ़रमाया कि क़सम बख़ुदा ! जो लोग ज़मानए अक़्दस में एक तस्मे की क़दर भी अदा करते थे अगर आज इन्कार करेंगे तो मैं ज़रूर उन से क़िताल करूंगा। आख़िरे कार आप क़िताल के लिये उठे और मुहाजिरीन व अन्सार को साथ लिया और आ'राब अपनी ज़ुर्रिय्यतों को ले कर भागे। फिर आप ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को अमीरे लश्कर बनाया और **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें फ़तह़ दी और सह़ाबा ने ख़ुसूसन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की सिह़ह़ते तदबीर और इस्बाते राए का ए'तिराफ़ किया और कहा : ख़ुदा की क़सम ! **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का सीना खोल दिया जो उन्हों ने किया ह़क़ था।(1)

और वाक़िआ़ भी येही है कि अगर उस वक़्त कमज़ोरी दिखाई जाती तो हर क़ौम और हर क़बीले को अह़कामे इस्लाम की बे ह़ुरमती और इन की मुख़ालफ़त की जुरअत होती और दीने ह़क़ का नज़्म बाक़ी

---

(1)......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی ما وقع فی خلافتہ، ص ۵۶ـ۵۷ملخصاً

न रहता। यहां से मुसलमानों को सबक़ लेना चाहिये कि हर ह़ालत में ह़क़ की ह़िमायत और नाह़क़ की मुख़ालफ़त ज़रूरी है और जो क़ौम नाह़क़ की मुख़ालफ़त में सुस्ती करेगी जल्द तबाह हो जाएगी। आज कल के सादा लोह़ फ़िर्क़े बात़िला के रद्द करने को भी मन्अ़ करते हैं और कहते हैं कि इस वक़्त आपस की जंग मौक़ूफ़ करो। उन्हें ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस तरीक़े अ़मल से सबक़ लेना चाहिये कि आप ने ऐसे नाज़ुक वक़्त में भी बात़िल की सरशिकनी में तवक़्क़ुफ़ न फ़रमाया। जो फ़िर्क़े इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने के लिये पैदा हुए हैं उन से ग़फ़लत करना यक़ीनन इस्लाम की नुक़सान रसानी है।

फिर ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लश्कर ले कर यमामा की त़रफ़ मुसैलमा कज़्ज़ाब के क़िताल के लिये रवाना हुए। दोनों त़रफ़ से लश्कर मुक़ाबिल हुए, चन्द रोज़ जंग रही। आख़िरुल अम्र मुसैलमा कज़्ज़ाब, वह़शी (क़ातिले ह़ज़रते अमीरे ह़मज़ा) के हाथ से मारा गया। मुसैलमा की उ़म्र क़त्ल के वक़्त डेढ़ सो बरस की थी। सि. 12 हि. में ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़ला इबने ह़ज़रमी को बह़रैन की त़रफ़ रवाना किया। वहां के लोग मुर्तद हो गए थे। जुवाषा में उन से मुक़ाबला हुवा और ब करमए तआ़ला मुसलमान फ़तह़ याब हुए। ओ़मान में भी लोग मुर्तद हो गए थे। वहां इ़करमा इबने अबी जह्ल को रवाना फ़रमाया। नुजेर के मुर्तदीन पर मुहाजिर बिन अबी उमय्या को भेजा। मुर्तदीन की एक और जमाअ़त पर ज़ियाद बिन लुबैद अन्सारी को रवाना किया। उसी साल मुर्तदीन के क़िताल से फ़ारिग़ हो कर ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सरज़मीने बसरा की त़रफ़ रवाना किया। आप ने अहले इबला पर जिहाद किया और इबला फ़तह़ हुवा और किसरा के शहर जो इ़राक़ में थे फ़तह़ हुए। इस के बा'द आप ने अ़म्र बिन आ़स और इस्लामी लश्करों को

---

1 ......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی ما وقع فی خلافتہ، ص۵۸ ملخصاً

शाम की त़रफ़ भेजा और जुमादिल ऊला सि. 13 हि. में वाक़िअ़ए इजनादीन पेश आया और بفضله تعالى मुसलमानों को फ़तह़ हुई । इसी साल वाक़िआ़ मरजुल सफ़र हुवा और मुशरिकीन को हज़ीमत हुई ।(1)

ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपनी ख़िलाफ़त के थोड़े से ज़माने में शबो रोज़ की पैहम सअ़्य से बदख़्वाहाने इस्लाम के ह़ौसले पस्त कर दिये और इरतिदाद का सैलाब रोक दिया । कुफ़्फ़ार के क़ुलूब में इस्लाम का वक़ार रासिख़ हो गया और मुसलमानों की शौकत व इक़्बाल के फुरैरे अ़रबो अ़जम बह़्रो बर में उड़ने लगे ।

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ क़ुरआने करीम के पहले जामेअ़ हैं और आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के अ़हदे मुबारक का ज़र्रीन कारनामा है कि आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि जिहादों में वोह सह़ाबए किराम जो ह़ाफ़िज़े क़ुरआन थे शहीद होने लगे तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को अन्देशा हुवा कि अगर थोड़े ज़माने बा'द हुफ़्फ़ाज़ बाक़ी न रहे तो क़ुरआने पाक मुसलमानों को कहां से मुयस्सर आएगा । येह ख़याल फ़रमा कर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सह़ाबा को जमए़ क़ुरआन का हुक्म दिया और मुसाह़िफ़ मुरत्तब हुए ।

ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की वफ़ात

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की वफ़ात का अस्ली सबब हुज़ूरे अन्वर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात है जिस का सदमा दमे आख़िर तक आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के क़ल्बे मुबारक से कम न हुवा और उस रोज़ से बराबर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का जिस्म शरीफ़ घुलता और दुबला होता गया ।

7 जुमादिल आख़िर सि. 13 हि. रोज़ दोशम्बा को आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ग़ुस्ल फ़रमाया, दिन सर्द था, बुख़ार आ गया । सह़ाबा इयादत के लिये आए । अ़र्ज़ करने लगे : ऐ ख़लीफ़ए रसूल (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) ! इजाज़त हो तो हम त़बीब को बुलाएं जो आप को देखे । फ़रमाया कि त़बीब ने तो मुझे देख लिया । उन्हों ने दरयाफ़्त

किया कि फिर तृबीब ने क्या कहा ? फ़रमाया कि उस ने फ़रमाया : اِنِّیْ فَعَّالٌ لِّمَا اُرِیْد (या'नी मैं जो चाहता हूं करता हूं) मुराद येह थी कि हकीम **अल्लाह** तआला है उस की मर्ज़ी को कोई टाल नहीं सकता, जो मशिय्यत है ज़रूर होगा । येह हज़रत का तवक्कुले सादिक़ था और रिज़ाए हक़ पर राज़ी थे ।

इसी बीमारी में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और हज़रते अ़ली मुर्तज़ा और हज़रते उ़षमाने ग़नी वग़ैरहुम सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن के मश्वरे से हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपने बा'द ख़िलाफ़त के लिये नामज़द फ़रमाया और पन्दरह रोज़ की अ़लालत के बा'द 22 जुमादिल उख़रा सि. 13 हि. शबे सहशम्बा को तिरसठ साल की उ़म्र में इस दारे नापाइदार से रिहलत फरमाई । اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी वसिय्यत के मुताबिक़ पहलूए मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में मदफ़ून हुए ।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दो साल और सात माह के क़रीब ख़िलाफ़त की । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात से मदीनए तृय्यिबा में एक शोर बर्पा हो गया । आप के वालिद अबू क़ुहाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जिन की उ़म्र उस वक़्त सतानवे बरस की थी । दरयाफ़्त किया कि येह कैसा ग़ोग़ा है ? लोगों ने कहा कि आप के फ़रज़न्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रिहलत फ़रमाई । कहा : बड़ी मुसीबत है । इन के बा'द कारे ख़िलाफ़त कौन अनजाम देगा ? कहा गया : हज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) । आप की वफ़ात से छे माह बा'द आप के वालिद अबू क़ुहाफ़ा ने भी रिहलत फ़रमाई ।(1)

वाह ! क्या ख़ुश नसीब हैं .... ! ! !

खुद **सहाबी**, वालिद **सहाबी**, बेटे **सहाबी**, पोते **सहाबी** رضی اللہ تعالیٰ عنھم و رضواعنہ

(1)......تاریخ الخلفاء، ابوبکر الصدیق رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ، فصل فی مرضہ ووفاتہ...الخ، ص ۶۲۔۶۲ ملتقطاً

ख़लीफ़ए दुवुम

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द फ़ज़्ल में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मर्तबा है । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अजदाद के अस्मा येह हैं : उ़मर बिन ख़त्ताब बिन नुफ़ैल बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन रयाह़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ बिन रज़ाह़ बिन अ़दी बिन का'ब बिन लूअय ।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आ़मे फ़ील के तेरह बरस बा'द पैदा हुए (नववी) आप अशराफ़े क़ुरैश में से हैं । ज़मानए जाहिलिय्यत में मन्सबे सिफ़ारत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ मुफ़व्वज़ था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुन्यत अबू ह़फ़्स और लक़ब फ़ारूक़ है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़दीमुल इस्लाम हैं । 40 मर्दों और 11 औ़रतों या 39 मर्दों और 23 औ़रतों या 45 मर्दों और 11 औ़रतों के बा'द इस्लाम लाए ।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुसलमान होने से इस्लाम की क़ुव्वत व शौकत ज़ियादा हुई । मुसलमान निहायत मसरूर हुए । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ साबिक़ीने अव्वलीन और अ़शरए मुबश्शरा बिल जन्नत और ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से हैं । सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के किबार उ़-लमाए ज़ुहाद में आप का मुमताज़ मर्तबा है ।(1)

तिरमिज़ी की ह़दीष में है कि ह़ुज़ूरे अन्वर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दुआ़ फ़रमाते थे कि या रब्ब عَزَّوَجَلَّ उ़मर बिन ख़त्ताब और अबू जह्ल बिन हिश्शाम में से जो तुझे प्यारा हो उस के साथ इस्लाम को इ़ज़्ज़त दे ।(2)

1 ......تاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ، ص ٨٦

2 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ،الحدیث:٣٧٠١،ج٥،ص ٣٨٣

हाकिम ने हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत की, कि हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ اَعِزِّ الۡاِسۡلَامَ بِعُمَرَ بۡنِ الۡخَطَّابِ خَاصَّةً

"या रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! इस्लाम को ख़ास उ़मर बिन ख़त्ताब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) के साथ ग़लबा व कुव्वत अ़ता फ़रमा।"(1)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ क़बूल हुई और हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ नबुव्वत के छटे साल 27 बरस की उ़म्र में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए।

अबू या'ला व हाकिम व बैहक़ी ने हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत की, कि हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तल्वार ले कर निकले। राह में आप को क़बीलए बनी ज़ोहरा का एक शख़्स मिला। कहने लगा : कहां का इरादा है? आप ने कहा कि मैं (हज़रत) मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के क़त्ल का इरादा रखता हूं। उस ने कहा कि उन्हें क़त्ल कर के तुम बनी हाशिम और बनी ज़ोहरा के हाथों कैसे बचोगे। आप ने कहा कि मेरे ख़याल में तू भी दीन से फिर गया। उस ने कहा : मैं आप को इस से अ़जीब तर बताता हूं। आप की बहन और बहनोई ने आप का दीन तर्क कर दिया। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उन के पास पहुंचे। वहां हज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ थे और वोह लोग सूरए त़ाहा पढ़ रहे थे, जब उन्हों ने हज़रते उ़मर की आहट सुनी तो मकान में छुप गए। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मकान में दाख़िल हो कर कहा : तुम क्या कह रहे हो? कहा : हम आपस में बातें कर रहे थे। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ कहने लगे : शायद तुम लोग बे दीन हो गए हो। आप के बहनोई ने कहा : ऐ उ़मर ! अगर तुम्हारे दीन के सिवा किसी और दीन में हक़ हो। इतना

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب النهى عن لبس الديباج...الخ، الحديث:٤٥٤١، ج٤،ص ٣٤

कलिमा सुनते ही ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन पर टूट पड़े और उन्हें बहुत मारा। उन्हें बचाने के लिये आप की बहन आईं, उन्हें भी मारा ह़त्ता कि उन का चेहरा ख़ून आलूद हो गया। उन्हों ने ग़ज़ब नाक हो कर कहा कि तेरे दीन में ह़क़ नहीं। मैं गवाही देती हूं कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मुस्तह़िक़े इबादत नहीं और ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और उस के रसूल हैं। ह़ज़रते उ़मर ने कहा : मुझे वोह किताब दो जो तुम्हारे पास है मैं उसे पढ़ूं। हमशीरा साह़िबा ने फ़रमाया कि तुम नापाक हो और इस को पाकों के सिवा कोई नहीं छू सकता। उठो, ग़ुस्ल करो या वुज़ू करो। आप ने उठ कर वुज़ू किया और किताबे पाक ले कर पढ़ा : طٰهٰ ۝ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤى ۝ (1) यहां तक कि आप اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ۝ (2) तक पहुंचे तो ह़ज़रते उ़मर ने फ़रमाया : मुझे (ह़ुज़ूरे पुरनूर) मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा) صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले चलो। येह सुन कर ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बाहर निकले और उन्हों ने कहा : मुबारक हो ऐ उ़मर ! मैं उम्मीद करता हूं कि तुम ही दुआ़ए रसूल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हो। पंज शम्बा को ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई थी, या रब्ब عَزَّوَجَلَّ इस्लाम को उ़मर बिन ख़त़्त़ाब या अबू जह्ल बिन हिश्शाम से कुव्वत अ़त़ा फ़रमा। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस मकान पर आए जिस में ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे। दरवाज़े पर ह़ज़रते ह़म्ज़ा व त़लह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और दूसरे लोग थे। ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : येह उ़मर हैं, अगर **अल्लाह** तआ़ला को इन की भलाई मन्ज़ूर हो तो ईमान लाएं वरना हमें इन का क़त्ल करना सह्ल है, ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर उस वक़्त वह़्य आ रही थी।

---

❶....***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ मह़बूब ! हम ने तुम पर येह क़ुरआन इस लिये न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो।* (پ۱٦،طٰہٰ:۱،۲)

❷....***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक मैं ही हूं **अल्लाह** कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख।* (پ۱٦،طٰہٰ:۱۴)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते उ़मर के कपड़े और तल्वार की ह़माइल पकड़ कर फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तू बाज़ नहीं आता ह़त्ता कि अल्लाह तआ़ला तुझ पर वोह अ़ज़ाब व रुस्वाई नाज़िल फ़रमाए जो वलीद इब्ने मुग़ीरा पर नाज़िल फ़रमाई। ह़ज़रते उ़मर ने अ़र्ज़ किया : اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّكَ عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ.(1)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त मैं ने कुरआन शरीफ़ पढ़ा उसी वक़्त इस की अ़ज़मत मेरे दिल में अषर कर गई और मैं ने कहा कि बद नसीब क़ुरैश ऐसी पाकीज़ा किताब से भागते हैं। इस्लाम लाने के बा'द आप ब इजाज़ते नबिय्ये करीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِیْم दो सफ़ें बना कर निकले। एक सफ़ में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और दूसरी में ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ येह पहला दिन था कि मुसलमान इस ए'लान और शौकत के साथ मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हुए, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश देख देख कर जल रहे थे और उन्हें निहायत सदमा था। आज उस ज़ुहूरे इस्लाम और ह़क़ व बातिल में फ़र्क़ व इम्तियाज़ हो जाने पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को **"फ़ारूक़"** का लक़ब अ़ता फ़रमाया।(2)

इब्ने माजा व ह़ाकिम ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत की, कि जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस्लाम लाए। ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلى الله عليك وسلم अहले आस्मान ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस्लाम की ख़ुशियां मना रहे हैं।(3)

---

1 ......تاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب، فصل فی الاخبار الواردة فی اسلامه، ص۸۷۔ ۸۸

2 ......تاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب، فصل فی الاخبار الواردة...الخ،ص ۹۰ ملخصاً

3 ......سنن ابن ماجه، کتاب السنة، باب فی فضائل اصحاب رسول اللّٰه،فضل عمر، الحدیث:۱۰۳،ج۱،ص۷٦

इब्ने अ़साकिर ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, आप ने फ़रमाया कि मैं जहां तक जानता हूं जिस किसी ने भी हिजरत की, छुप कर ही की। बजुज़ ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हिजरत की येह शान थी कि मुसल्लह़ हो कर ख़ानए का'बा में आए, कुफ़्फ़ार के सरदार वहां मौजूद थे, आप ने सात मरतबा बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया और मक़ामे इब्राहीम में दो रक्अ़तें अदा कीं फिर क़ुरैश की एक जमाअ़त के पास तशरीफ़ ले गए और ललकार कर फ़रमाया कि जो इस के लिये तय्यार हो कि उस की मां उसे रोए और उस की अवलाद यतीम हो, बीवी रांड हो वोह मैदान में मेरे मुक़ाबिल आए। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के येह कलिमात सुन कर एक सन्नाटा हो गया कुफ़्फ़ार में से कोई जुम्बिश न कर सका।(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़ज़ीलत में बहुत कषरत से ह़दीषें वारिद हुईं और इन में बड़ी जलील फ़ज़ीलतें बयान फ़रमाई गई हैं। ह़त्ता कि तिरमिज़ी व ह़ाकिम की सह़ीह़ ह़दीष में वारिद है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर मेरे बा'द नबी मुमकिन होता, ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) होते। इस से जलालत व मन्ज़िलत व रिफ़्अ़ते दर्जत अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ाहिर है। इब्ने अ़साकिर की ह़दीष में वारिद है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आस्मान का हर फ़िरिश्ता ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तौक़ीर करता है और ज़मीन का हर शैत़ान इन के ख़ौफ़ से लरज़ता है।(2)

---

1 ……تاریخ الخلفاء،عمر بن الخطاب، فصل فی ھجرتہ رضی اللّٰہ عنہ،ص ۹۱

2 ……سنن الترمذی،کتاب المناقب،باب مناقب ابی حفص عمر بن الخطاب، الحدیث:۳۷۰۶،ج۵،ص ۳۸۵

وتاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب، فصل فی الاحادیث الواردۃ...الخ، ص ۹۳

तबरानी ने औसत में हज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा और जिस ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को महबूब रखा उस ने मुझे महबूब रखा।(1)

तबरानी व हाकिम ने रिवायत की, कि हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इ़ल्म मीज़ान के एक पल्ले में रखा जाए और रूए ज़मीन के तमाम ज़िन्दा लोगों के उ़लूम एक पल्ले में तो यक़ीनन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इ़ल्म इन सब के उ़लूम से ज़ियादा वज़्नी होगा। अबू उसामा ने कहा जानते हो अबू बक्र व उ़मर कौन हैं ? येह इस्लाम के पिदरो मादर हैं। हज़रते इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं उस से बरी व बेज़ार हूं जो हज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का ज़िक्र बदी के साथ करे।(2)

हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की करामात

आप की करामात बहुत हैं। इन में से चन्द मश्हूर करामतें ज़िक्र की जाती हैं :

बैहक़ी व अबू नुऐ़म वग़ैरा मुहद्दिषीन ने ब त़रीक़े मो'तबर रिवायत किया कि अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अषनाए खुत़्बा में तीन मरतबा फ़रमाया : **"या सारियतुल जबल"** हाज़िरीन मुतहय्यिर व मुतअ़ज्जिब हुए कि अषनाए खुत़्बा में येह क्या कलाम है ? बा'द को आप से दरयाफ़्त किया गया कि आज आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने खुत़्बा फ़रमाते फ़रमाते येह क्या कलिमा फ़रमाया ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि लश्करे इस्लाम जो मुल्के अ़जम में मक़ामे निहावन्द में कुफ़्फ़ार के साथ मसरूफ़े पैकार है। मैं ने देखा कि कुफ़्फ़ार उस को दोनों

---

(1) ......المعجم الاوسط للطبرانی، الحدیث:٦٧٢٦،ج٥،ص١٠٢

(2) ......المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:٨٨٠٩،ج٩،ص١٦٣

وتاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب، فصل فی اقوال الصحابة والسلف فیه،ص٩٦

तरफ़ से घेर कर मारना चाहते हैं। ऐसी हालत में मैं ने पुकार कर कह दिया कि ऐ सारिया ! जबल (या'नी पहाड़ की आड़ लो) येह सुन कर लोग मुन्तज़िर रहे कि लश्कर से कोई ख़बर आए तो तफ़्सीली हाल दरयाफ़्त हो। कुछ अ़र्से के बा'द सारिया का क़ासिद ख़त़ ले कर आया। उस में तह़रीर था कि जुमुआ़ के रोज़ दुश्मन से मुक़ाबला हो रहा था। ख़ास नमाज़े जुम्आ़ के वक़्त हम ने सुना : "**या सारियतुल जबल**" येह सुन कर हम पहाड़ से मिल गए और हमें दुश्मन पर ग़लबा ह़ासिल हुवा यहां तक कि दुश्मन को हज़ीमत हुई।(1)

سُبْحٰنَ اللّٰه ख़लीफ़ए इस्लाम की नज़र मदीनए त़य्यिबा से निहावन्द में लश्कर को मुलाह़ज़ा फ़रमाए और यहां से निदा करे तो लश्कर को अपनी आवाज़ सुनाए न कोई दूरबीन है न टेलीफ़ोन है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची ग़ुलामी का सदक़ा है। وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن

अबुल क़ासिम ने अपनी "फ़वाइद" में रिवायत की, कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास एक शख़्स आया, आप ने उस का नाम दरयाफ़्त फ़रमाया : कहने लगा : मेरा नाम ह़म्ज़ा (अख़गर) है। फ़रमाया : किस का बेटा ? कहा : इब्ने शहाब (आतश पारा) का, फ़रमाया : किन लोगों में से है ? कहा : ह़र्क़ा (सोज़िश) में से, फ़रमाया : तेरा वत़न कहां है ? कहा : ह़ुर्रा (तपिश), फ़रमाया : इस के किस मक़ाम पर ? कहा : ज़ातुल्लज़ा (शो'लावार) में, फ़रमाया : अपने घर वालों की ख़बर ले, सब जल गए, लौट कर घर आया तो सारा कुम्बा जला पाया।(2)

अबुश्शैख़ ने "किताबुल उ़-ज़मा" में रिवायत की है कि जब मिस्र फ़त्ह़ हुवा तो एक रोज़ अहले मिस्र ने ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीर ! हमारे दरयाए नील की एक रस्म है जब तक इस को अदा न किया जाए दरया जारी नहीं रहता।

1 ......تاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب فصل فی کراماته، ص۹۹
2 ......تاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب فصل فی کراماته، ص۱۰۰

उन्हों ने दरयाफ़्त किया : क्या ? कहा : इस महीने की ग्यारह तारीख़ को हम एक कंवारी लड़की को इस के वालिदैन से ले कर उम्दा लिबास और नफ़ीस ज़ेवर से सजा कर दरयाए नील में डालते हैं । ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि इस्लाम में हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता और इस्लाम पुरानी वाहियात रस्मों को मिटाता है । पस वोह रस्म मौक़ूफ़ रखी गई और दरया कि रवानी कम होती गई यहां तक कि लोगों ने वहां से चले जाने का क़स्द किया, येह देख कर ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में तमाम वाक़िआ़ लिख भेजा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने जवाब में तह़रीर फ़रमाया : तुम ने ठीक किया । बेशक इस्लाम ऐसी रस्मों को मिटाता है । मेरे इस ख़त़ में एक रुक़्आ़ है इस को दरयाए नील में डाल देना । अ़म्र बिन आ़स के पास जब अमीरुल मोअमिनीन का ख़त़ पहुंचा और उन्हों ने वोह रुक़्आ़ उस ख़त़ में से निकाला तो उस में लिखा था : "अज़ जानिबे बन्दए ख़ुदा उ़मर अमीरुल मोअमिनीन बसूए नीले मिस्र बा'द अज़ ह़म्द व सलात आंकि **अगर तू ख़ुद जारी है तो न जारी हो और अल्लाह तआ़ला ने जारी फ़रमाया तो मैं अल्लाह वाह़िदे क़ह्हार से दरख़्वास्त करता हूं कि तुझे जारी फ़रमा दे ।**" अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने येह रुक़्आ़ दरयाए नील में डाला एक शब में सोला गज़ पानी बढ़ गया और भेंट चढ़ाने की रस्म मिस्र से बिल्कुल मौक़ूफ़ हो गई ।(1)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का ज़ोह्द व वरअ़, तवाज़ोअ़ व ह़िल्म

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ रोज़ाना ग्यारह लुक़्मे से ज़ियादा त़आ़म मुलाह़ज़ा न फ़रमाते ।(2)

1 ......تاریخ الخلفاء،عمر بن الخطاب فصل فی کراماته،ص ۱۰۰

2 ...... احیاء العلوم،کتاب کسرالشهوتین،بیان طریق الریاضة...الخ،ج۳،ص ۱۱۱(وفیه سبع لقم او تسع لقم۔ واللّٰه تعالٰی اعلم)

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि मैं ने देखा कि हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के क़मीस मुबारक में दो शानों के दरमियान चार पैवन्द लगे थे।[1]

येह भी रिवायत है कि शाम के मुमालिक जब फ़त्ह हुए और आप ने इन मुमालिक को अपने कुदूमे मैमनत लुज़ूम से सर फ़राज़ फ़रमाया और वहां के उमरा व उ़ज़मा आप के इस्तिक़बाल के लिये आए उस मौक़अ़ पर आप अपने शुतर पर सुवार थे, आप के ख़्वास व खुद्दाम ने अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ शाम के अकाबिर व अशराफ़ हुज़ूर की मुलाक़ात के लिये आ रहे हैं। मुनासिब होगा कि हुज़ूर घोड़े पर सुवार हों ताकि आप की शौकत व हैबत उन के दिलों में जा गुज़ीं हो, फ़रमाया : इस ख़याल में न रहिये, काम बनाने वाला और ही है। سُبۡحٰنَ اللّٰہ

एक मरतबा क़ैसरे रूम का क़ासिद मदीनए त़य्यिबा में आया और अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को तलाश करता था ताकि बादशाह का पयाम आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ करे, लोगों ने बताया कि अमीरुल मोअमिनीन मस्जिद में हैं, मस्जिद में आया देखा कि एक साहिब मोटे पैवन्द ज़दा कपड़े पहने एक ईंट पर सर रखे लेटे हैं, येह देख कर बाहर आया और लोगों से अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का पता दरयाफ़्त करने लगा, कहा गया : मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हैं, कहने लगा : मस्जिद में तो सिवाए एक दलक़ पोश के कोई नहीं। सह़ाबा عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने कहा : वोही दलक़ पोश हमारा अमीर व ख़लीफ़ा है।

بر در میکدہ رِندانِ قلندر باشند　　　کہ ستانند و دِہند افسر شاہنشاہی
خشت زیرِ سر و بر تارک ہفت اختر پائے　　　دست قدرت نگر و منصب صاحب جاہی

---

[1] ......تاریخ الخلفاء، عمر بن الخطاب، فصل فی نبذ من سیرته، ص ۱۰۲

क़ैसर का क़ासिद फिर मस्जिद में आया और ग़ौर से अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के चेहरए मुबारक को देखने लगा। दिल में मह़ब्बत व हैबत पैदा हुई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ह़क़्क़ानिय्यत का परतव उस के दिल में जल्वा गर हुवा।

مہر و ہیبت ہست ضدِّ یک دگر　　ایں دو ضد را جمع دید اندر جگر
گفت باخود من شہاں را دیدہ ام　　گرد سلطاں راہمہ گر دیدہ ام
از شہانم ہیبت و ترسے نبود　　ہیبت ایں مرد ہوشم در ربود
رفتہ ام در بیشۂ و شیر و پلنگ　　روئے من ز ایشاں نگر دانند رنگ
بس شدم اندر مصافِ کار زار　　ہمچو شیراں دم کہ باشد کار زار
بسکہ خوردم بس زدم زخمِ گراں　　دل قوی تر بودہ ام از دیگراں
بے سلاح ایں مرد خفتہ بر زمیں　　من بہفت اندام لرزاں ایں چنیں
ہیبتِ حق ست ایں از خلق نیست　　ہیبت ایں مرد صاحب دلق نیست

ह़ज़रते आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में था। आप जब ब अ़ज़्मे ह़ज मदीनए त़य्यिबा से रवाना हुए। आमदो रफ़्त में उमरा व ख़ुलफ़ा की त़रह़ आप के लिये ख़ैमा नस्ब न किया गया, राह में जहां क़ियाम फ़रमाते अपने कपड़े और बिस्तर किसी दरख़्त पर डाल कर साया कर लेते।[1]

एक रोज़ बर सरे मिम्बर मौइज़त फ़रमा रहे थे। महर का मस्अला ज़ेरे बह़ष आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : महर गिरां न किये जाएं और चालीस औक़िया से महर ज़ियादा मुक़र्रर न किया जाए।

---

1 ......الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، الباب الثانی...الخ، الفصل الثامن فی شھادۃ النبی...الخ،ذکر زھدہ،ج ۱ ،الجزء۲،ص۳٦۸

(एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है) क्यूंकि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाज का महर चालीस औक़िया से ज़ियादा न फ़रमाया लिहाज़ा जो कोई आज की तारीख़ से इस से ज़ियादा महर मुक़र्रर करेगा वोह ज़ियादती बैतुल माल में दाख़िल कर ली जाएगी। एक ज़ईफ़ा औ़रतों की सफ़ से उठी और उस ने अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ऐसा कहना आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के मन्सबे आ़ली के लाइक़ नहीं, महर **अल्लाह** तआ़ला ने औ़रत का ह़क़ किया है वोह इस के लिये ह़लाल है उस का कोई जुज़्व इस से किस त़रह़ लिया जा सकता है। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْئًا ط[1] आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़ौरन बे दरैग़ दादे इन्साफ़ दी और फ़रमाया : اِمْرَاَةٌ اَصَابَتْ وَرَجُلٌ اَخْطَأ औ़रत ठीक पहुंची और मर्द ने ख़त़ा की। फिर मिम्बर पर ए'लान फ़रमाया कि औ़रत सह़ीह़ कहती है मेरी ग़लत़ी थी जो चाहो महर मुक़र्रर करो और फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ كُلُّ اِنْسَانٍ اَفْقَهُ مِنْ عُمَرَ या रब्ब عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, हर शख़्स उ़मर से ज़ियादा दाना है।

سُبْحٰنَ اللّٰه ज़हे अ़द्ल व दादो ख़ुहे उ़ज्ज़ व इन्किसार।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ख़िलाफ़त

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ माहे जुमादिल उख़रा सि. 13 हि. में मस्नद आराए सरीरे ख़िलाफ़त हुए। दस साल चन्द माह उमूरे ख़िलाफ़त को अन्जाम दिया। इस दह साला ख़िलाफ़त के अय्याम ने सलात़ीने आ़लम को मुतह़य्यर कर दिया है। ज़मीन अ़द्ल व दाद से भर गई, दुन्या में रास्ती व दियानत दारी का सिक्का राइज हुवा, मख़्लूक़े ख़ुदा के दिलों मे ह़क़ परस्ती व पाकबाज़ी का जज़्बा पैदा हुवा, इस्लाम के बरकात से आ़लम फ़ैज़याब हुवा, फ़ुतूह़ात इस कषरत से हुई कि आज तक मुल्क व सल्त़नत के वाली व सिपाह व लश्कर के मालिक ह़ैरत में हैं।

1....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* *उसे ढेरों माल दे चुके हो तो उस में से कुछ वापस न लो।* (پ۴،النسآء:۲۰)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लश्करों ने जिस त़रफ़ क़दम उठाया फ़त्ह़ व ज़फ़र क़दम चूमती गई, बड़े बड़े फ़रीदों फ़र शहरयारों के ताज क़दमों में रोंदे गए। मुमालिक व बिलाद इस कषरत से क़ब्ज़े में आए कि उन की फ़ेहरिस्त लिखी जाए तो सफ़्ह़े के सफ़्ह़े भर जाएं, रो'ब व हैबत का येह आ़लम था कि बहादुरों के ज़ह्रे नाम सुन कर पानी होते थे, जंग जूयां साह़िबे हुनर कांपते और थर्राते थे, क़ाहिर सल्त़नतें ख़ौफ़ से लरज़ती थीं। बईंहमा फ़र्दे इक़्बाल व रो'ब व सत्वत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की दुर्वेशाना ज़िन्दगी में कोई फ़र्क़ न आया। रात दिन ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोते रोते रुख़्सारों पर निशान पड़ गए थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ही के अ़हद में सिने हिजरी मुक़र्रर हुवा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ही ने दफ़्तर व दीवान की बुन्याद डाली, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ही ने बैतुल माल बनाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ही ने तमाम बिलादो अमसार में तरावीह़ की जमाअ़तें क़ाइम फ़रमाईं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ही ने शब के पहरेदार मुक़र्रर किये जो रात को पहरा देते थे। येह सब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की खुसूसिय्यतें हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से पहले इन में से कोई बात न थी।(1)

इब्ने अ़साकिर ने इस्माईल बिन ज़ियाद से रिवायत की, कि ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم मस्जिदों पर गुज़रे जिन पर क़िन्दीलें रोशन थीं, इन्हें देख कर फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की क़ब्र को रोशन फ़रमाए जिन्हों ने हमारी मस्जिदों को मुनव्वर कर दिया। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ की, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ही ने यहूद को ह़िजाज़ से निकाला।(2)

---

1 ......تاریخ الخلفاء،عمر بن الخطاب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،فصل فی خلافتہ،ص۱۰۴
و فصل فی اولیات عمر رضی اللّٰہ عنہ،ص۱۰۸

2 ......تاریخ الخلفاء،عمر بن الخطاب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،فصل فی اولیات عمر رضی اللّٰہ عنہ، ص۱۰۹

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की करामात और फ़ज़ाइल बहुत ज़ियादा हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शान में बहुत अहादीष वारिद हैं। ज़िल हिज्जा सि. 23 हि. में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अबू लूलू मजूसी के हाथ से मस्जिद में शहीद हुए। ज़ख़्म खाने के बा'द आप ने फ़रमाया : "كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَقْدُوْرًا" और फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ जिस ने मेरी मौत किसी मुद्दइये इस्लाम के हाथ पर न रखी। बा'दे वफ़ात शरीफ़ ब इजाज़त हज़रते उम्मुल मोअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا अपने महबूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़रीब रौज़ए क़ुदसिय्या के अन्दर पहलूए सिद्दीक़ में मदफ़ून हुए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अम्रे ख़िलाफ़त को शूरा पर छोड़ा, वफ़ात शरीफ़ के वक़्त अरजह़ अक़्वाल पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की उम्र शरीफ़ तिरसठ साल की थी आप की मुहर का नक़्श था : كَفٰى بِالْمَوْتِ وَاعِظًا(1)

ख़लीफ़ए सिवुम

हज़रते उषमान बिन अफ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

आप का नसब नामा उषमान बिन अफ़्फ़ान इब्ने अबील आ़स इब्ने उमय्या इब्ने अ़ब्दे शम्स इब्ने अ़ब्दे मनाफ़ इब्ने क़ुसय बिन किलाब इब्ने मुर्रह इब्ने का'ब इब्ने लुअय्य इब्ने ग़ालिब है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की विलादत आ़मे फ़ील से छटे साल हुई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ क़दीमुल इस्लाम हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को इस्लाम की दा'वत हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने दी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने दोनों हिजरतें फ़रमाईं पहले ह़ब्शा की त़रफ़ दूसरे मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के निकाह़ में हुज़ूरे अन्वर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दो साहिबज़ादियां आईं। पहले ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इन के साथ नबुव्वत से क़ब्ल निकाह़ हुवा और इन्हों ने ग़ज़वए बद्र के ज़माने

(1)......تاریخ الخلفاء،عمر بن الخطاب رضی اللّٰه عنه، فصل فی خلافته، ص١٠٦ـ١٠٨ ملتقطاً

में वफ़ात पाई और इन्हीं की तीमार दारी की वजह से ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ब इजाज़ते रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रह गए, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का सहम व अज्र बह़ाल रखा और इसी वजह से वोह बद्रियों में शुमार किये जाते हैं। जिस रोज़ बद्र में मुसलमानों की फ़तह़ पाने की ख़बर मदीनए त़य्यिबा में पहुंची उसी दिन ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا को दफ़्न किया गया था। इस के बा'द हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी साह़िबज़ादी ह़ज़रते उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا को आप के निकाह़ में दिया जिन की वफ़ात सि. 9 हि. में हुई। उ़-लमा फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ के सिवा दुन्या में कोई शख़्स ऐसा नज़र नहीं आता जिस के निकाह़ में किसी नबी की दो साह़िबज़ादियां आई हों, इसी लिये आप को ''ज़ुन्नूरैन'' कहा जाता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ साबिक़ीने अव्वलीन और अव्वल मुहाजिरीन अ़शरए मुबश्शरा में से हैं और उन सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھِم اَجْمَعِیْن में से हैं जिन को अल्लाह तआ़ला ने जमए़ क़ुरआन की इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई।(1)

ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की निस्बत दरयाफ़्त किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि येह वोह शख़्स है जिस को मलाए आ'ला में ''ज़ुन्नूरैन'' पुकारा जाता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की वालिदा अरवा बिन्ते कुरैज़ इब्ने रबीआ़ इब्ने ह़बीब बिन अ़ब्दे शम्स हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की नानी उम्मे ह़कीम बैज़ाअ बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब इब्ने हाशिम हैं जो हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद की तव अमाह या'नी इन के साथ पैदा होने वाली बहन हैं। ह़ज़रते उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की वालिदा हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ज़ाद बहन हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ बहुत ह़सीनो जमील ख़ूबरू थे।(2)

1 ......تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، ص۱۱۸ ملخصاً

2 ......تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، ص۱۰۹ ملتقطاً

हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस्लाम लाने के बा'द इन को इन के चचा ह़कम इब्ने अबिल आ़स इब्ने उमय्या ने पकड़ कर बांध दिया और कहा कि तुम अपने आबा व अजदाद का दीन छोड़ कर एक नया दीन इख़्तियार करते हो, बख़ुदा ! मैं तुम को न छोडूंगा जब तक तुम इस दीन को न छोड़ो। ह़ज़रते उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं इस दीन को कभी न छोडूंगा और इस से कभी जुदा न होऊंगा। ह़कम ने आप का येह ज़बरदस्त इस्तिक़्लाल देख कर छोड़ दिया।(1)

जिस वक़्त ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर होते, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने लिबास मुबारक को ख़ूब दुरुस्त फ़रमाते और इरशाद फ़रमाते : मैं उस शख़्स से क्यूं न ह़या करूं जिस से मलाइका शर्माते हैं।(2)

तिरमिज़ी ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ब्बाब से रिवायत की वोह कहते हैं कि मैं हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जैशे उ़सरत के लिये तरग़ीब फ़रमा रहे थे, ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ علیک وسلم मैं सो ऊंट मअ़ बार राहे ख़ुदा में पेश करूंगा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर लोगों को तरग़ीब फ़रमाई, फिर ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ किया : मैं दो सो ऊंट मअ़ सामान ह़ाज़िर करूंगा। फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तरग़ीब फ़रमाई, फिर ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ही ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ علیک وسلم मैं तीन सो ऊंट मअ़ इन के तमाम अस्बाब के साथ पेशकशे ख़िदमत करूंगा। अब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बर से नुज़ूल फ़रमाया

---

1 ......تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، ص ۱۲۰

2 ......تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، فصل فی الاحادیث الواردۃ فی فضلہ...الخ،ص ۱۲۰

और येह फ़रमाया कि इस के बा'द उ़षमान (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ) पर नहीं जो कुछ करे ।(1)

मुराद येह थी कि येह अ़मले ख़ैर ऐसा आ'ला और इतना मक़्बूल है कि अब और नवाफ़िल न करें जब भी येह इन के मदारजे उ़ल्या के लिये काफ़ी है और इस मक़्बूलिय्यत के बा'द अब उन्हें कोई अन्देशए ज़रर नहीं है। इन कलिमाते मुबारका से ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की शान और बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में इन की मक़्बूलिय्यत का अन्दाज़ा होता है।

बैअ़ते रिज़्वान के वक़्त ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ मौजूद न थे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मक्कए मुकर्रमा भेजा था बैअ़त के वक़्त येह फ़रमा कर कि "उ़षमान अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के काम में हैं।" अपने ही एक दस्ते मुबारक को ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की त़रफ़ से दस्ते अक़्दस में ले लिया ।(2)

बैअ़त की येह शान ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के इम्तियाज़ व क़ुर्बे ख़ास का इज़्हार करती है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के फ़ज़ाइल में ब कषरत अह़ादीष वारिद हैं।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने अपने आख़िरी अ़हद में एक जमाअ़त मुक़र्रर फ़रमा दी थी जिस के अरकान येह ह़ज़रात थे। ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी, ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा, ह़ज़रते त़लह़ा, ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सा'द (رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجۡمَعِیۡن) और ख़लीफ़ा का इन्तिख़ाब शूरा पर छोड़ा था। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، الحدیث: ۳۷۲۰، ج۵، ص ۳۹۱

2 ......تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، فصل فی الاحادیث الواردۃ فی فضلہ...الخ، ص ۱۲۱

औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से ख़ल्वत में कहा कि अगर मैं आप से बैअ़त न करूं तो आप की राए किस के लिये है ? फ़रमाया : ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَهُ الۡکَرِیۡم के लिये। इसी त़रह़ ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَهُ الۡکَرِیۡم से दरयाफ़्त किया : आप ने ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का नाम लिया। फिर इसी त़रह़ ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से पूछा उन्हों ने फ़रमाया : अ़ली या उ़षमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) फिर सा'द से कहा कि तुम तो ख़िलाफ़त चाहते नहीं, अब बताओ राए किस के ह़क़ में है ? उन्हों ने ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का नाम लिया। फिर अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने आ'यान से मश्वरा लिया, कषरते राए ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ह़क़ में हुई और आप ब इत्तिफ़ाक़े मुस्लिमीन ख़लीफ़ा हुए। अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दफ़्न से तीन रोज़ बा'द आप के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त की गई।(1)

आप के अ़हदे मुबारक में रे और रूम के कई क़लए़ और साबूर और अरजान और दारे अबजर्द और अफ़्रीक़ा और अन्दलुस, क़बर्स, जूर और ख़ुरासान के बिलादे कषीरा और नैशापूर और तूस और सरख़स और मरू और बैहक़ फ़तह़ हुए।(2)

सि. 26 हि. में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मस्जिदे ह़राम (का'बए मुक़द्दसा) की तौसीअ़ फ़रमाई और सि. 29 हि. में मस्जिदे मदीनए त़य्यिबा की तौसीअ़ की और हिजारए मन्क़ूशा से बनाया, पथ्थर के सुतून क़ाइम किये, साल की छत बनाई। तूल 160 गज़ और अ़र्ज़ 150 गज़ किया। बारह साल उ़म्रे ख़िलाफ़त सर अन्जाम फ़रमा कर सि. 35 हि. में शहादत पाई।(3)

---

1 ......تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ،فصل فی خلافتہ،ص ۱۲۲ ملخصاً

2 ......تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ،فصل فی خلافتہ،ص ۱۲۳۔۱۲۴ ملتقطاً

3 ......تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ،فصل فی خلافتہ،ص ۱۲۳۔۱۲۴ ملتقطاً

जब बाग़ियों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के महल को घेर लिया उस वक़्त आप से मुक़ाबले के लिये अ़र्ज़ किया गया और कुव्वत आप की ज़ियादा थी मगर आप ने क़बूल न फ़रमाया, अ़र्ज़ किया गया कि मक्कए मुकर्रमा या और किसी मक़ाम पर तशरीफ़ ले जाएं, येह भी मन्ज़ूर न फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि मैं रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का कुर्ब छोड़ने की ताब नहीं रखता। जिस रोज़ से आप ने हुज़ूरे अक़दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त की थी उस रोज़ से दमे आख़िर तक अपना दाहिना हाथ अपनी शर्मगाह को न लगाया क्यूंकि येह हाथ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़दस में दिया गया था। रोज़े इस्लाम से रोज़े वफ़ात तक कोई जुमुआ़ ऐसा न गुज़रा कि आप ने कोई गुलाम आज़ाद न किया हो और अगर कभी जुमुआ़ को आप के पास कोई बर्दा न हुवा तो बा'दे जुमुआ़ के आज़ाद कर दिया।(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत अय्यामे तशरीक़ में हुई और आप शम्बा की शब में मग़रिब व इ़शा के दरमियान बक़ीअ़ शरीफ़ में मदफ़ून हुए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की उ़म्र बयासी साल की हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के जनाज़े की नमाज़ ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने पढ़ी और उन्हों ने आप को दफ़्न किया और येही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की वसिय्यत थी।(2)

इब्ने अ़साकिर ने यज़ीद बिन ह़बीब से नक़्ल किया, वोह कहते हैं : मुझे ख़बर पहुंची है कि ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर यूरिश करने वालों में से अकषर लोग मजनून व दीवाने हो गए। ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि पहला फ़ित्ना ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का शहीद किया जाना है और आख़िरे फ़ितन दज्जाल का ख़ुरूज।(3)

---

1 ......تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، فصل فی خلافتہ،ص۱۲۸ملخصاً

2 ......تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، فصل فی خلافتہ، ص۱۲۸۔۱۲۹ملخصاً

3 ......تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، فصل فی خلافتہ،ص۱۲۹

ग़रज़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن में हज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत ने एक अ़जीब हैजान पैदा कर दिया और वोह इस से ख़ाइफ़ हो गए और समझने लगे कि अब फ़ितनों का दरवाज़ा खुला और दीन में रख़ने पैदा होने शुरूअ़ हुए। हज़रते समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि इस्लाम एक मोह़कम क़लए़ में मह़फ़ूज़ था। हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत इस्लाम में पहला रख़ना है और ऐसा रख़ना जिस का इनसिदाद क़ियामत तक न होगा।[1]

हज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मन्क़ूल है कि हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत के वक़्त हज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ वहां तशरीफ़ नहीं रखते थे, जंगे जमल में हज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "या रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे हुज़ूर में ख़ूने उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से बराअत का इज़्हार करता हूं। हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के क़त्ल के रोज़ मेरा त़ाइरे अ़क़्ल परवाज़ कर गया था। लोग मेरे पास बैअ़त को आए तो मैं ने कहा कि बख़ुदा ! मैं ऐसी क़ौम की बैअ़त करने से शर्माता हूं जिन्हों ने हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को शहीद किया और मुझे **अल्लाह** तआ़ला से शर्म आती है कि मैं हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दफ़्न से पहले बैअ़त में मसरूफ़ होऊं। लोग फिर गए। लौट कर आए फिर उन्हों ने मुझ से बैअ़त की दरख़्वास्त की तो मैं ने कहा : या रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं इस से ख़ाइफ़ हूं जो हज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर पेश आया। फिर इरादए इलाही ग़ालिब आया और मुझे बैअ़त लेना पड़ी। लोगों ने जब मुझ से कहा : या अमीरल मोअमिनीन ! तो येह कलिमा सुन कर मेरे दिल में चोट लगी।"[2] इस वक़्त हज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم

1 ......تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، فصل فی خلافتہ،ص۱۲۹

2 ......تاریخ الخلفاء،عثمان بن عفان رضی اللّٰہ عنہ، فصل فی خلافتہ،ص۱۲۹

को ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ याद आए और अपनी निस्बत येह कलिमा सुनना बाइ़षे मलाले ख़ातिर हुवा। इस से उस मह़ब्बत का पता चलता है जो ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ है और ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने इस हंगामे को रोकने के लिये पूरी कोशिश फ़रमाई और अपने दोनों साहि़बज़ादों सय्यिदैना ह़ज़रते इमामे ह़सन और इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दरवाज़े पर तल्वारें ले कर हि़फ़ाज़त के लिये भेज दिया था लेकिन जो **अल्लाह** तआ़ला को मन्ज़ूर था और जिस की ख़बरें हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दी थीं इस को कौन रफ़्अ़ कर सकता है।

ख़लीफ़ए चहारुम

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का नामे नामी अ़ली, कुन्यत अबुल ह़सन, अबू तुराब है। आप के वालिद हु़ज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब हैं। आप नौ उ़म्रों में सब से पहले इस्लाम लाए। इस्लाम लाने के वक़्त आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की उ़म्र शरीफ़ क्या थी इस में चन्द अक़्वाल हैं : एक क़ौल में आप की उ़म्र पन्दरह साल की, एक में सोलह की, एक में आठ की, एक में दस की। अगर्चे उ़म्र के बाब में चन्द क़ौल हैं मगर इस क़दर यक़ीनी है कि इब्तिदाए उ़म्र में बुलूग़ के मुत्तसिल ही आप दौलते ईमान से मुशर्रफ़ हुए। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कभी बुत परस्ती नहीं की जिस त़रह़ कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कभी बुत परस्ती के साथ मुलव्वष न हुए। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अ़शरए मुबश्शरा में से हैं जिन के लिये जन्नत का वा'दा दिया गया और इ़लावा चचाज़ाद होने के आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को हु़ज़ूरे अकरम,

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में इ़ज़्ज़ते मुवाख़ात भी है और सय्यिदए निसाए आ़लमीन ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते बतूल ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के साथ आप का अ़क़्दे निकाह़ हुवा। आप साबिक़ीने अव्वलीन और उ़-लमाए रब्बानिय्यिन में से हैं। जिस त़रह़ शुजाअ़त बसालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नामे नामी शोहरए आ़लम है, अ़रबो अ़जम बह़्रो बर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़ोर व कुव्वत के सिक्के बैठे हुए हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हैबत व दबदबे से आज भी जवान मर्दाने शेर दिल कांप जाते हैं इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ज़ोह्दो रियाज़त अत़राफ़ व अकनाफ़े आ़लम में वज़ीफ़ए ख़ासो आ़म है। करोड़ों औलिया رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सीनए नूरे गन्जीना से मुस्तफ़ीज़ हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इरशादे हिदायत ने ज़मीन को ख़ुदा परस्तों की त़ाअ़त व रियाज़त से भर दिया है। ख़ुश बयान फ़ुसह़ा और मा'रूफ़ ख़ुत़बा में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बुलन्द पाया हैं। जामेईने कुरआने पाक में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नामे नामी नूरानी ह़ुर्फ़ों के साथ चमकता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बनी हाशिम में पहले ख़लीफ़ा हैं और सिबत़ैन करीमैन ह़सनैन जमीलैन सईदैन शहीदैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के वालिदे माजिद हैं। सादाते किराम और औलादे रसूल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का सिलसिला परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जारी फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तबूक के सिवा तमाम मशाहिद में ह़ाज़िर हुए। जंगे तबूक के मौक़अ़ पर हुज़ूरे अक़दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मदीना पर ख़लीफ़ा बनाया था और इरशाद फ़रमाया था कि तुम्हें हमारी बारगाह में वोह मर्तबा ह़ासिल है जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को।(1)

1 ......تاریخ الخلفاء،علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،ص۱۳۲۔۱۳۳ ماخوذاً

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द मक़ामों में आप को लिवा (झन्डा) अ़ता फ़रमाया। खुसूसन रोज़े ख़ैबर और हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी कि इन के हाथ पर फ़तह़ होगी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस रोज़ क़लअ़ए ख़ैबर का दरवाज़ा अपनी पुश्त पर रखा और उस पर मुसलमानों ने चढ़ कर क़लए को फ़त्ह़ किया। इस के बा'द लोगों ने उसे खींचना चाहा तो चालीस आदमियों से कम उस को न उठा सके। जंगों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के कारनामे बहुत हैं।[1]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपने नामों में अबू तुराब बहुत प्यारा मा'लूम होता था और इस नाम से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत खुश होते थे। इस का सबब येह था कि एक रोज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिद शरीफ़ की दीवार के पास लैटे हुए थे। पुश्ते मुबारक को मिट्टी लग गई थी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और आप की पुश्ते मुबारक से मिट्टी झाड़ कर फ़रमाया : اِجْلِسْ اَبَا تُرَابٍ[2] येह हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़ता फ़रमाया हुवा ख़िताब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हर नाम से प्यारा मा'लूम होता था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस नाम से सुल्ताने कौनैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लुत्फ़ो करम के मज़े लेते थे।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़ज़ाइल व महामिद बहुत ज़ियादा हैं। ह़ज़रते सा'द इब्ने अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को मदीनए त़य्यिबा में अहले बैत की ह़िफ़ाज़त के लिये छोड़ा। ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ علیك وسلم आप मुझे औ़रतों और बच्चों में ख़लीफ़ा बनाते हैं। हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या

1 ......تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، ص۱۳۲۔۱۳۳ ملخصاً

2 ......تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، ص۱۳۳

तुम राज़ी नहीं हो कि तुम्हें मेरे दरबार में वोह मर्तबत हासिल हो जो हज़रते हारून को दरबारे हज़रते मूसा में थी (عليهما الصلوٰة والسلام) बजुज़ इस बात के कि मेरे बा'द कोई नबी नहीं आया।[1]

हज़रते सहल इब्ने सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोज़े ख़ैबर फ़रमाया कि मैं कल झन्डा उस शख़्स को दूंगा जिस के हाथों पर **अल्लाह** तआ़ला फ़त्ह़ फ़रमाएगा और वोह **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को मह़बूब रखता है और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم उस को मह़बूब रखते हैं। इस मुज़्दए जां फ़िज़ा ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को तमाम शब उम्मीद की साअ़तें शुमार करने में मसरूफ़ रखा। आरज़ूमन्द दिलों को रात काटनी मुश्किल हो गई और मुजाहिदीन की नींदें उड़ गईं। हर दिल आरज़ूमन्द था कि इस ने'मते उ़ज़्मा व कुब्रा से बहरामन्द हो और हर आंख मुन्तज़िर थी कि सुब्ह़ की रोशनी में सुल्ताने दारैन फ़त्ह़ का झंडा किस को अ़ता फ़रमाते हैं। सुब्ह़ होते ही शब बेदार तमन्नाई उम्मीदों के ज़ख़ाइर लिये बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अदब के साथ देखने लगे कि करीम ज़र्रा परवर का दस्ते रह़मत किस सआ़दत मन्द को सरफ़राज़ फ़रमाता है। मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लबे मुबारक की जुम्बिश पर अरमान भरी निगाहें क़ुरबान हो रही थी। रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَیْنَ عَلِیُّ ابْنُ اَبِی طَالِبٍ अ़ली इब्ने अबी त़ालिब कहां हैं? अ़र्ज़ किया गया : वोह बीमार हैं, उन की आंखों पर आशूब है। बुलाने का हुक्म दिया गया और अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم हाज़िर हुए। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दहन मुबारक के ह़यात बख़्श लुआ़ब से उन की चश्मे बीमार का इलाज फ़रमाया और बरकत की दुआ़ की, दुआ़ करना था कि न दर्द बाक़ी

---

[1]......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة رضی اللّٰہ عنهم، باب من فضائل علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ عنه، الحدیث:٢٤٠٤، ص١٣١٠

रहा न खटक न सुर्ख़ी न टपक, आन की आन में ऐसा आराम हुवा कि गोया कभी बीमार न हुए थे। इस के बा'द उन को झंडा अ़ता फ़रमाया।[1]

तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजा ने ह़ब्शी बिन जनादा से रिवायत की, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : عَلِیٌّ مِّنِّیْ وَاَنَا مِنْ عَلِیٍّ (अ़ली मुझ से है और मैं अ़ली से)[2] इस से ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का कमाले कुर्ब बारगाहे रिसालत मआब से ज़ाहिर होता है।

इमामे मुस्लिम ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत की, कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि उस की क़सम कि जिस ने दाने को फाड़ा और इस को रुवैदगी इनायत की और जानों को पैदा किया बेशक मुझे नबिय्ये उम्मी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बताया कि मुझ से ईमानदार महब्बत करेंगे और मुनाफ़िक़ बुग़्ज़ रखेंगे।[3]

तिरमिज़ी में ह़ज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : फ़रमाते हैं कि हमारे नज़्दीक अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से बुग़्ज़ रखना मुनाफ़िक़ की अ़लामत थी इसी से हम मुनाफ़िक़ को पहचान लेते थे।[4]

ह़ाकिम ने ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत की, फ़रमाते हैं : मुझे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने यमन की

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلّی اللّٰہ علیه وسلم، باب مناقب علی بن ابی طالب...الخ،الحدیث: ۳۷۰۱، ج۲،ص ۵۳٤

2 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب مناقب علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ عنه، الحدیث: ۳۷٤۰، ج۵،ص ٤۰۱

3 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب الدلیل علی ان حب الانصار وعلی رضی اللّٰہ عنهم...الخ،الحدیث:۷۸،ص ۵۵

4 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب مناقب علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ عنه، الحدیث:۳۷۳۷،ج۵،ص ٤۰۰

तरफ़ क़ाज़ी बना कर भेजा, मैं ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! मैं कम उ़म्र हूं क़ज़ा जानता नहीं, काम किस त़रह़ अन्जाम दे सकूंगा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने में मार कर दुआ़ फ़रमाई, परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुआ़मले के फ़ैसल करने में मुझे शुबा भी तो न हुवा।[1]

सह़ाबए किबार عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰه تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को अक़ज़ा जानते थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़ैज़ है कि ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ के सीने में दस्ते मुबारक लगाया और वोह इ़ल्मे क़ज़ा में कामिल और इक़रान में फ़ाइक़ हो गए। जिस के हाथ लगाने से सीने उ़लूम के गन्जीने बन जाएं उस के उ़लूम का कोई क्या बयान कर सकता है।

इब्ने अ़साकिर ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की, ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰه تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के ह़क़ में बहुत सी आयतें नाज़िल हुईं।[2]

त़बरानी व ह़ाकिम ने ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की, कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़ली मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰه تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को देखना इ़बादत है।[3]

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، كان اقضى اهل المدينة على بن ابى طالب، الحديث: ٤٧١٤، ج٤، ص١٠٨
وتاريخ الخلفاء، على بن ابى طالب رضى الله تعالى عنه، فصل فى الاحاديث الواردة فى فضله، ص١٣٥

2 ......تاريخ الخلفاء، على بن ابى طالب رضى الله تعالى عنه، فصل فى الاحاديث الواردة فى فضله، ص١٣٦

3 ......المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، النظر الى على عبادة، الحديث: ٤٧٣٧، ج٤، ص١١٨
وتاريخ الخلفاء، على بن ابى طالب رضى الله تعالى عنه، فصل فى الاحاديث الواردة فى فضله، ص١٣٦

अबू या'ला व बज़्ज़ार ने ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत की, कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم) को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी।(1)

बज़्ज़ार और अबू या'ला और ह़ाकिम ने ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم से रिवायत की, आप ने फ़रमाया कि मुझ से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हें ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से एक मुनासबत है। उन से यहूद ने यहां तक बुग़्ज़ किया कि उन (ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की वालिदए माजिदा पर तोहमत लगाई। नसारा मह़ब्बत में ऐसे ह़द से गुज़रे कि उन की खुदाई के मुअ़तक़िद हो गए। होशियार हो जाओ मेरे ह़क़ में भी दो गुरौह हलाक होंगे एक मुह़िब्बे मुफ़रित़ जो मुझे मेरे मर्तबे से बढ़ाए और ह़द से तजावुज़ करे, दूसरा मुबग़िज़ जो अ़दावत में मुझ पर बोहतान बांधे।(2)

ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم के इस इरशाद से मा'लूम हुवा कि राफ़िज़ी व ख़ारिजी दोनों गुमराह हैं और हलाकत की राह चलते हैं, त़रीक़े क़वीम और सिराते़ मुस्तक़ीम पर अहले सुन्नत हैं जो मह़ब्बत भी रखते हैं और ह़द से तजावुज़ भी नहीं करते।

وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ.

बैअ़त व शहादत

इब्ने सा'द के क़ौल पर ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत के दूसरे रोज़ अमीरुल मोअमिनीन अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم के दस्ते मुबारक पर मदीनए त़य्यिबा में तमाम सह़ाबा عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان ने जो वहां मौजूद थे बैअ़त की। सि. 36 हि.

(1) مسند ابی یعلی، مسند سعد بن ابی وقاص رضی اللّٰہ عنہ، الحدیث:٧٦٦، ج١،ص ٣٢٥

(2) مسند ابی یعلی، مسند علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ عنہ، الحدیث:٥٣٠، ج١،ص ٢٤٧

में जंगे जमल का वाक़िआ़ पेश आया और सफ़र सि. 37 हि. में जंगे सिफ़्फ़ीन हुई जो एक सुल्ह़ पर ख़त्म हुई और ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने कुफ़ा की त़रफ़ मुराजअ़त फ़रमाई और उस वक़्त ख़वारिज ने सरकशी शुरूअ़ की और लश्कर जम्अ़ कर के चढ़ाई की। ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को उन के मुक़ाबले के लिये भेजा, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ उन पर ग़ालिब आए और उन में से क़ौमे कषीर वापस हुई और एक क़ौम षाबित रही और उन्हों ने निहरवान की त़रफ़ जा कर राहज़नी शुरूअ़ की। ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस फ़ितने की मुदाफ़अ़त के लिये उन की त़रफ़ रवाना हुए। सि. 38 हि. में आप ने उन को निहरवान में क़त्ल किया। इन्हीं में ज़िषदया को भी क़त्ल किया जिस के ख़ुरूज की ख़बर ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दी थी, ख़वारिज में से एक ना मुराद अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलजिम मुरादी था। उस ने बर्क बिन अ़ब्दुल्लाह तमीमी ख़ारिजी और अ़म्र बिन बकीर तमीमी ख़ारिजी को मक्कए मुकर्रमा में जम्अ़ कर के ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अ़ली मुर्तज़ा और ह़ज़रते मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान और ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) के क़त्ल का मुआ़हदा किया और ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के क़त्ल के लिये इब्ने मुलजिम आमादा हुवा और एक तारीख़ मुअ़य्यन कर ली गई।

मुस्तदरक में सुदी से मन्क़ूल है कि अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलजिम एक ख़ारिजी औ़रत क़ित़ाम नामी पर आ़शिक़ था। उस नाशाद की शादी का महर तीन हज़ार दिरहम और ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को क़त्ल करना क़रार पाया। चुनान्चे फ़रज़ुदक़ शाइ़र ने कहा।

فَلَمْ اَرَ مَهْرًا سَاقَهٗ ذُوْ سَمَاحَةٍ　　كَمَهْرِ قِطَامٍ بَيِّنًا غَيْرَ مُعْجَمٍ

ثَلَاثَةُ الَافٍ وَّ عَبْدٌ وَّ قَيْنَةٌ　　وَ ضَرْبُ عَلِيٍّ بِالْحُسَامِ الْمُصَمَّمِ

فَلَا مَهْرَ اَعْلٰى مِنْ عَلِيٍّ وَّاِنْ عَلَا　　وَلَافِتْكَ اِلَّا دُوْنَ فِتْكِ ابْنِ مُلْجَمٍ

अब इब्ने मुलजिम कूफ़ा पहुंचा और वहां के ख़वारिज से मिला और उन्हें दर पर्दा अपने नापाक इरादे की इत्तिलाअ़ दी, ख़वारिज उस के साथ मुत्तफ़िक़ हुए।

शबे जुमुआ़ 17 रमज़ानुल मुबारक सि. 40 हि. को अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم सह़र के वक़्त बेदार हुए, उस रमज़ान में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का येह दस्तूर था कि एक शब ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास, एक शब ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास, एक शब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास इफ़्त़ार फ़रमाते और तीन लुक़्मों से ज़ियादा तनावुल न फ़रमाते थे कि मुझे येह अच्छा मा'लूम होता है कि **अल्लाह** तआ़ला से मिलने के वक़्त मेरा पेट ख़ाली हो।

आज की शब तो येह ह़ालत रही कि बार बार मकान से बाहर तशरीफ़ लाए और आस्मान की त़रफ़ नज़र फ़रमाते और फ़रमाते कि ब ख़ुदा ! मुझे कोई ख़बर झूटी नहीं दी गई येह वोही रात है जिस का वा'दा दिया गया है।

सुब्ह़ को जब बेदार हुए तो अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द अमीरुल मोअमिनीन इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमाया : आज शब मैं ने ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत से आराम न पाया। फ़रमाया : इन्हें बद दुआ़ करो। मैं ने दुआ़ की, कि या रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे इन के इवज़ इन से बेहतर अ़ता फ़रमा और इन्हें मेरी जगह इन के ह़क़ में बुरा दे।(1)

---

(1)......تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، فصل فی مبایعة علی رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ...الخ، ص۱۳۸۔۱۴۰ ملخصاً

و الصواعق المحرقة، الباب التاسع، الفصل الخامس، ص۱۳۳۔۱۳۵ ملتقطاً

अहले बैते नबुव्वत

हज़राते किराम खुलफ़ाए राशिदीन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ज़िक्र किया गया। इन की ज़वाते मुक़द्दसा मुक़र्रबीने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में सब से आ'ला मर्तबा रखती हैं और ह़क़ येह है कि हुज़ूरे अन्वर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से जिस किसी को भी अदना सी मह़ब्बत व निस्बत है उस की फ़ज़ीलत अन्दाज़े और क़ियास से ज़ियादा है। उस आक़ाए नामदार सरकारे दौलत मदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ इतनी निस्बत कि कोई शख़्स उन के बलदए त़ाहिरा और शहरे पाक में सुकूनत रखता हो इस दर्जे की है कि ह़दीष शरीफ़ में वारिद हुवा :

(1) مَنْ اَخَافَ اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ ظُلْماً اَخَافَهُ اللّٰهُ وَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ۔

जिस ने अहले मदीना को ज़ुल्मन डराया, अल्लाह तआला उस पर ख़ौफ़ डालेगा और उस पर अल्लाह की और मलाइका की और सब लोगों की ला'नत। (رواه قاضی ابویعلی)

तिरमिज़ी की ह़दीष में ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : (2) قَالَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مَنْ غَشَّ الْعَرَبَ لَمْ يَدْخُلْ فِيْ شَفَاعَتِيْ وَلَمْ تَنَلْهُ مَوَدَّتِيْ

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अ़रबों से बुग़्ज़ रखा मेरी शफ़ाअ़त में दाख़िल न होगा और उस को मेरी मुवद्दत मुयस्सर न आएगी।

इतनी निस्बत एक शख़्स अ़रब का बाशिन्दा हो उस को इस मर्तबे पर पहुंचा देती है कि उस से ख़यानत करने वाला हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त व मुवद्दत से मह़रूम हो जाता है तो

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث:١٦٥٥٧، ج٥، ص٥٦٤

2 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب فی فضل العرب، الحديث:٣٩٥٤، ج٥، ص٤٨٧

जिन बरगुज़ीदा नुफ़ूस और खुश नसीब ह़ज़रात को इस बारगाहे आ़ली में कुर्ब व नज़्दीकी और इख़्तिसास ह़ासिल है उन के मरातिब कैसे बुलन्दो बाला होंगे इसी से आप अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल का अन्दाज़ा कीजिये। इन ह़ज़रात की शान में बहुत आयतें और ह़दीषें वारिद हुईं :

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًاۚ(1)	*अल्लाह तआ़ला चाहता है कि तुम से रिज्स (नापाकी) दूर करे अहले बैते रसूल और तुम्हें पाक करे, ख़ूब पाक।*

अकषर मुफ़स्सिरीन की राय है कि येह आयत ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदतुन्निसा फ़ातिमा ज़हरा, ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे हुसैन رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के ह़क़ में नाज़िल हुई और क़रीना इस का येह है कि عَنْكُمُ और इस के बा'द की ज़मीरें मुज़क्कर हैं और एक क़ौल येह है कि येह आयत हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضوان اللّٰه تعالٰی علیھن के ह़क़ में नाज़िल हुई क्यूंकि इस के बा'द ही इरशाद हुवा : وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ(2) और येह क़ौल ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की त़रफ़ मन्सूब है इस लिये उन के गुलाम ह़ज़रते इकरमा बाज़ार में इस की निदा करते थे।(3)

एक क़ौल येह भी है कि इस से मुराद खुद सरकारे दौलत मदार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते आ़ली सिफ़ात है, तन्हा। दूसरे मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत हुज़ूर की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضوان اللّٰه تعالٰی علیھن के

---

❶....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे।* (پ۲۲،الاحزاب:۳۳)

❷.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं।* (پ۲۲،الاحزاب:۳٤)

❸......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الفصل الاول فی الآیات الواردة فیھم، ص١٤٣

हक़ में नाज़िल है इलावा इस के कि इस पर आयत : وَاذْكُرْنَ مَايُتْلٰى فِىْ بُيُوْتِكُنَّ[1] दलालत करती है येह भी इस की दलील है कि येह दौलत सराए अक़्दस अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضوان اللہ تعالیٰ علیہن ही का मस्कन था । हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले बैत हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नसब व क़राबत के वोह लोग हैं जिन पर सदक़ा ह़राम है । एक जमाअ़त ने इसी पर ए'तिमाद किया और इसी को तरजीह़ दी और इब्ने कषीर ने भी इसी की ताईद की है ।[2]

अह़ादीष पर जब नज़र की जाती है तो मुफ़स्सिरीन की दोनों जमाअ़तों को इन से ताईद पहुंचती है । इमाम अह़मद ने ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत की है कि येह आयत पन्जतन पाक की शान में नाज़िल हुई । पन्जतन से मुराद हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते फ़ात़िमा व ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे हुसैन हैं । (صلوات اللہ تعالیٰ علی حبیبہ وعلیہم وسلم)

इसी मज़्मून की ह़दीष मरफ़ूअ़ इब्ने जरीर ने रिवायत की, त़बरानी में भी इस की तख़रीज की मुस्लिम की ह़दीष में है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इन ह़ज़रात को अपनी गलीम मुबारक में ले कर येह आयत तिलावत फ़रमाई । येह भी ब सिह़्ह़त षाबित हुवा है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन ह़ज़रात को तह़्ते गलीमे अक़्दस ले कर येह दुआ़ फ़रमाई :

اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَآءِ اَهْلُ بَيْتِىْ وَخَاصَّتِىْ اَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيْرًا

या रब्ब ! येह मेरे अहले बैत और मेरे मख़्सूसीन हैं इन से रिज्स व नापाकी दूर फ़रमा और इन्हें पाक कर दे और ख़ूब पाक ।

---

1 ..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं ।* (پ۲۲، الاحزاب:۳٤)

2 ..... الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر،الفصل الاول فى الآيات الواردة فيهم، ص ۱٤۳

येह दुआ़ सुन कर उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ किया : و اَنَا مَعَھُم (मैं भी इन के साथ हूं) फ़रमाया : اِنَّكِ عَلٰى خَيْرٍ (तुम बेहतरी पर हो)[1]

एक रिवायत में येह भी आया है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के जवाब में फ़रमाया : بَلٰى (बेशक) और उन को कसा (गलीम) में दाखि़ल कर लिया।[2]

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते वाषिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि मेरे ह़क़ में भी दुआ़ हो, या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये भी दुआ़ फ़रमाई। एक सह़ीह़ रिवायत में है वाषिला ने अ़र्ज़ किया : وَاَنَامِنْ اَھْلِكَ (मैं भी आप के अहल में से हूं) फ़रमाया : وَاَنْتَ مِنْ اَھْلِی (तुम भी मेरी अहल में से हो)[3]

येह करम था कि सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस नियाज़ मन्द खा़लिसुल अ़क़ीदत को मायूस न फ़रमाया और अपनी अहल के हुक्म में दाखि़ल फ़रमा दिया वोह हुक्मन दाखि़ल हैं। एक रिवायत में येह भी है कि हुज़ूर ने उन ह़ज़रात के साथ अपनी बाक़ी साहिबज़ादियों और क़राबत दारों और अज़्वाजे मुत़ह्हरात को मिलाया।[4]

षा'लबी का खयाल है कि आयत में अहले बैत से तमाम बनी हाशिम मुराद हैं इस को उस ह़दीष से ताईद पहुंचती है जिस में ज़िक्र है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी रिदाअ मुबारक में ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन की साह़िबज़ादियों को लिपटा कर दुआ़ फ़रमाई :

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث ام سلمة زوج النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیه و آله وسلم،الحدیث:٢٦٦٥٩،ج١٠،ص١٩٧

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ام سلمة زوج النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیه وآله وسلم،الحدیث:٢٦٦١٢،ج١٠،ص١٨٧

3 ......المعجم الکبیر للطبرانی،الحدیث:٢٦٧٠،ج٣،ص٥٥

4 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الفصل الاول، ص١٤٤

يَارَبِّ هٰذَا عَمِّیْ وَصِنْوَ اَبِیْ وَهٰؤُلَآءِ اَهْلُ بَيْتِیْ فَاسْتُرْهُمْ مِنَ النَّارِ كَسِتْرِیْ اِيَّاهُمْ بِمُلَاءَتِیْ هٰذِهٖ فَاَمَّنَتْ اُسْكُفَّةُ الْبَابِ وَحَوَائِطُ الْبَيْتِ

या'नी या रब्ब येह मेरे चचा और ब मन्ज़िला मेरे वालिद के हैं और येह मेरे अहले बैत हैं इन्हें आतशे दोज़ख़ से ऐसा छुपा जैसा मैं ने अपनी चादर मुबारक में छुपाया है। इस दुआ़ पर मकान के दरो दीवार ने "आमीन" कही।(1)

ख़ुलासा येह कि दौलत सराए अक़्दस के सुकूनत रखने वाले इस आयत में दाख़िल हैं क्यूंकि वोही इस के मुख़ात़ब हैं चूंकि अहले बैते नसब का मुराद होना मख़्फ़ी था इस लिये आंसरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस फे'ले मुबारक से बयान फ़रमा दिया कि मुराद अहले बैत से आ़म हैं। ख़्वाह बैते मस्कन के अहल हों जैसे कि अज़्वाज या बैते नसब के अहल बनी हाशिम व मुत्त़लिब। ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से एक ह़दीष मरवी है आप ने फ़रमाया : मैं उन अहले बैत में से हूं जिन से **अल्लाह** तआ़ला ने रिज्स को दूर किया और इन्हें ख़ूब पाक किया।(2) इस से मा'लूम होता है कि आयत में बैते नसब भी इसी त़रह़ मुराद है। जिस त़रह़ बैते मस्कन। येह आयते करीमा अहले बैते किराम के फ़ज़ाइल का मम्बअ़ है। इस से इन के ए'ज़ाज़े मआषिर और उ़लूव्वे शान का इज़्हार होता है और मा'लूम होता है कि तमाम अख़्लाक़ दनिय्य व अह़वाले मज़्मूमा से इन की तत़्हीर फ़रमाई गई। बा'ज़ अह़ादीष में मरवी है कि अहले बैत, नार पर ह़राम हैं और येही इस तत़्हीर का फ़ाइदा और षमरा है और जो चीज़ इन

---

1 ......المعجم الكبير للطبرانی، حمزة بن ابی اسيد عن ابيه، الحديث: ٥٨٤، ج١٩، ص٢٦٣
و الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الفصل الاول فی الآيات الواردة فيهم، ص١٤٤

2 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الفصل الاول فی الآيات الواردة فيهم، ص١٤٤

के अह्वाल शरीफ़ा के लाइक़ न हो उस से इन का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इन्हें मह्फ़ूज़ रखता और बचाता है। जब ख़िलाफ़ते ज़ाहिरा में शाने ममलकत व सल्तनत पैदा हुई तो क़ुदरत ने आले त़ाहिर को इस से बचाया और इस के इवज़ ख़िलाफ़ते बात़िना अ़त़ा फ़रमाई।

ह़ज़राते सूफ़िया का एक गुरोह जज़्म करता है कि हर ज़माने में क़ुतुबे औलिया, आले रसूल ही में से होंगे। इस ततहीर का षमरा है कि सदक़ा इन पर ह़राम किया गया क्यूंकि इस को ह़दीष शरीफ़ में सदक़ा देने वालों का मैल बताया गया है مع ذلك इस में लेने वाले की सब्की भी है बजाए इस के कि वोह ख़ुम्स व ग़नीमत के ह़क़दार बनाए गए जिस में लेने वाला बुलन्दो बाला होता है। इस आले पाक की अ़ज़्मत व करामत यहां तक है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुम में दो चीज़ें छोड़ता हूं जब तक तुम इन्हें न छोड़ोगे हरगिज़ गुमराह न होंगे। एक किताबुल्लाह, एक मेरी आल।(1)

दैलमी ने एक ह़दीष रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुआ़ रुकी रहती है जब तक कि मुझ पर और मेरे अहले बैत पर दुरूद न पढ़ा जाए।(2)

षा'लबी ने ह़ज़रते इमामे जा'फ़र सादिक़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق से रिवायत की, कि आप ने आयत وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِیْعًا وَّ لَا تَفَرَّقُوْا(3) की तफ़्सीर में फ़रमाया कि हम ही ह़ब्लुल्लाह हैं।(4)

---

1 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الفصل الاول،ص ١٤٤ـ١٤٥ ملتقطاً
والمستدرك للحاكم،كتاب معرفة الصحابة،باب من كنت مولاه...الخ،الحديث:٤٦٣٤،ج٤،ص٧٢

2 ......كنزالعمال،كتاب الاذكار، قسم الاقوال، الحديث ٣٢١٢،ج٢،ص ٣٥

3 .....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की रस्सी मज़बूत़ थाम लो सब मिल कर और आपस में फट न जाना।* (پ٤،اٰل عمران:١٠٣)

4 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الفصل الاول فی الآيات الواردة فيهم، ص ١٥١

दैलमी से मरफ़ूअ़न मरवी है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने अपनी बेटी का नाम फ़ाति़मा इस लिये रखा कि अल्लाह तआ़ला ने इस को और इस के साथ मह़ब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से ख़लासी अ़ता फ़रमाई।[1]

इमाम अह़मद ने रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़दस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सय्यिदैन करीमैन ह़सनैन शहीदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिस शख़्स ने मुझ से मह़ब्बत रखी और इन दोनों से और इन के वालिद और वालिदा से मह़ब्बत रखी वोह मेरे साथ जन्नत में होगा।[2]

यहां मइय्यत से मुराद क़ुर्बे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है क्यूंकि अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام का दर्जा तो उन्हीं के साथ ख़ास है। कितनी बड़ी ख़ुश नसीबी है मुहि़ब्बीने अहले बैत की, कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन के जन्नती होने की ख़बर दी और मुज़्दए क़ुर्ब से मसरूर फ़रमाया मगर येह वा'दा और बिशारत मोअमिनीने मुख़्लिसीन अहले सुन्नत के ह़क़ में है। रवाफ़िज़ इस का मह़ल नहीं जिन्हों ने असह़ाबे रसूले करीम की शान में गुस्ताख़ी व बेबाकी और अकाबिर सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ बुग़्ज़ व इनाद अपना दीन बना लिया है। उन लोगों का हुक्म मौला अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के इस इरशाद से मा'लूम होता है जो आप ने फ़रमाया : يَهْلِكُ فِيَّ مُحِبٌّ مُفْرِطٌ[3] (मेरी मह़ब्बत में मुफ़रित़ हलाक हो जाएगा) ह़दीष शरीफ़ में वारिद है : لَا يَجْتَمِعُ حُبُّ عَلِيٍّ وَبُغْضُ اَبِيْ بَكْرٍ وَعُمَرَ فِيْ قَلْبِ مُؤْمِنٍ[4] या'नी

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضل اهل بيت، الحديث ٣٤٢٢٢، ج١٢، ص ٥٠

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، من مسند على بن ابى طالب رضى الله تعالٰى عنه، الحديث:٥٧٦، ج١، ص١٦٨

و الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، الفصل الاول فى الآيات الواردة فيهم، ص١٥٣

3 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، الفصل الاول فى الآيات الواردة فيهم، ص١٥٣

4 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، الفصل الاول فى الآيات الواردة فيهم، ص١٥٣

ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم की मह़ब्बत और शैख़ैने जलीलैन अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُمَا) का बुग़्ज़ किसी मोमिन के दिल में जम्अ़ नहीं हो सकता।

इस ह़दीष से साफ़ मा'लूम होता है कि सहाबए किबार رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से बुग़्ज़ व अ़दावत रखने वाला ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم की मह़ब्बत के दा'वे में झूटा है। सह़ीह़ ह़दीष में आया कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बर सरे मिम्बर फ़रमाया : उन अक़्वाम का क्या ह़ाल है कि जो येह कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का रेह़्म (क़राबत) रोज़े क़ियामत कुछ काम न आएगा। हां, ख़ुदा की क़सम ! मेरा रेह़्म (रिश्ता व क़राबत) दुन्या व आख़िरत में मौसूल है।(1)

क़ुरतुबी ने सय्यिदुल मुफ़स्सिरीन ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُمَا से आयए करीमा : وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰىؕ(2) की तफ़्सीर में नक़्ल किया है, वोह फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अन्वर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस बात पर राज़ी हुए कि इन के अहले बैत में से कोई जहन्नम में न जाए।(3)

ह़ाकिम ने एक ह़दीष रिवायत की और इस को सह़ीह़ बताया। इस का मज़्मून येह है कि आंसरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझ से मेरे रब्ब ने मेरे अहले बैत के ह़क़ में फ़रमाया कि इन में से जो तौह़ीद व रिसालत का मुक़िर हुवा, उन को अ़ज़ाब न फ़रमाए।(4)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی سعید الخدری،الحدیث:۱۱۱۳۸،ج۴،ص۳۸

2 ......*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।* (پ۳۰،الضحیٰ:۵)

3 ......الجامع لاحکام القرآن للقرطبی،سورۃ الضحی،تحت الآیۃ:۴،الجزء۲۰،ج۱۰،ص۶۸

4 ......المستدرک للحاکم،کتاب معرفۃ الصحابۃ،باب وعدنی ربی...الخ،الحدیث:۴۷۷۲،ج۴،ص۱۳۲

तबरानी व दारे कुत्नी की रिवायत है : हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : अव्वल गुरौह जिस की मैं शफ़ाअत फ़रमाऊंगा मेरे अहले बैत हैं फिर मर्तबा ब मर्तबा कुरैश फिर अन्सार फिर अहले यमन में से जो मुझ पर ईमान लाए और मेरे मुत्तबेअ़ हुए। फिर तमाम अ़रब फिर अहले अ़जम और जिन की मैं पहले शफ़ाअ़त करूंगा वोह अफ़्ज़ल हैं।[1]

बज़्ज़ार व तबरानी व अबू नुऐम ने रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि (हज़रत) फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) पाक दामन हैं पस अल्लाह तआ़ला ने इन को और इन की जुर्रिय्यत को नार पर हराम फ़रमाया।[2]

बैहक़ी और अबुश्शैख़ और दैलमी ने रिवायत किया कि आंहज़रत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कोई बन्दा मोमिने कामिल नहीं होता.....यहां तक कि मैं उस को उस की जान से ज़ियादा प्यारा न होऊं और मेरी अवलाद उस को अपनी जान से ज़ियादा प्यारी न हो और मेरे अहल उन को अपने अहल से ज़ियादा महबूब न हों और मेरी ज़ात उस को अपनी ज़ात से ज़ियादा अहब न हो।[3]

दैलमी ने रिवायत की, कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि अपनी अवलाद को तीन ख़स्लतें सिखाओ, अपने नबी की महब्बत और इन के अहले बैत की महब्बत और कुरआने पाक की क़िराअत।[4]

दैलमी ने रिवायत की, कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो अल्लाह की महब्बत रखता है वोह कुरआन की महब्बत रखता है और जो कुरआन की महब्बत रखता है मेरी महब्बत रखता है और जो मेरी महब्बत रखता है मेरे अस्हाब और क़राबत दारों की महब्बत रखता है।[5]

---

1 ......المعجم الكبير للطبراني، مجاهد عن ابن عمر، الحديث:١٣٥٥٠،ج١٢،ص٣٢١

2 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضل اهل بيت، الحديث:٣٤٢١٥،ج١٢،ص٥٠

3 ......شعب الايمان للبيهقى،باب فى حب النبى،فصل فى براء ته فى النبوة، الحديث:١٥٠٥، ج٢،ص١٨٩

4 ......كنز العمال، كتاب النكاح، قسم الاقوال، الحديث:٤٥٤٠١،ج١٦،ص١٨٩

5 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، المقصد الثانى...الخ، ص١٧٣

इमाम अह़मद ने रिवायत किया हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स अहले बैत से बुग़्ज़ रखे वोह मुनाफ़िक़ है।[1]

इमाम अह़मद व तिरमिज़ी ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की वोह फ़रमाते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के बुग़्ज़ से पहचानते थे। या'नी इन से बुग़्ज़ रखना निफ़ाक़ की अ़लामत है।[2] इन अह़ादीष से मा'लूम हुवा कि अहले बैत की महब्बत फ़राइज़े दीन से है।

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الشَّافِی ने फ़रमाया :

یَا اَھْلَ بَیْتِ رَسُوْلِ اللّٰہِ حُبُّکُم　　　فَرْضٌ مِنَ اللّٰہِ فِی الْقُرْاٰنِ اَنْزَلَہٗ(3)

ऐ अहले बैते पाक ! तुम्हारी विला है फ़र्ज़, कुरआने पाक इस पर है नातिक़ बिला कलाम।

अबू सईद ने शरफ़ुन्नबुव्वत में रिवायत किया आंह़ज़रत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) तुम्हारे ग़ज़ब से ग़ज़बे इलाही عَزَّوَجَلَّ होता है और तुम्हारी रिज़ा से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी।[4]

इस से मा'लूम होता है कि जो कोई इन की किसी अवलाद को ईज़ा पहुंचाए उस ने अपनी जान को इस ख़त़रए अ़ज़ीमा में डाल दिया क्यूंकि इस ह़रकत से उन को ग़ज़ब होगा और उन का ग़ज़ब, ग़ज़बे इलाही عَزَّوَجَلَّ का मूजिब है। इसी त़रह़ अहले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की महब्बत ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत की रिज़ा का सबब है और इन की रिज़ा रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ

---

1 ......الصواعق المحرقۃ، الباب الحادی عشر، المقصد الثالث...الخ، ص ۱۷٤

2 ......فضائل الصحابۃ لابن حنبل،الحدیث:۱۰۸٦،ج۲،ص۶۳۹
وسنن الترمذی،کتاب المناقب،باب مناقب علی بن ابی طالب رضی اللہ تعالی عنہ،
الحدیث:۳۷۳۷،ج۵،ص۴۰۰

3 ......مرقاۃ المفاتیح،شرح مقدمۃ المشکاۃ،ترجمۃ الامام الشافعی ومناقبہ،ج۱،ص۶۳

4 ......الصواعق المحرقۃ، الباب الحادی عشر، المقصد الثالث...الخ، ص ۱۷۵

इस लिये उ़-लमाए किराम ने तसरीह़ फ़रमाई कि हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बलदए पाक के बाशिन्दों का अदब करना चाहिये और हु़ज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जवारे पाक की ह़ुरमत का लिह़ाज़ रखना लाज़िम है चेजाइके हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते पाक [1]

दैलमी ने मरफ़ूअ़न रिवायत की है कि हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया कि जो मुझ से तवस्सुल की तमन्ना रखता हो और येह चाहता हो कि उस को मेरी बारगाहे करम में रोज़े क़ियामत ह़क़्क़े शफ़ाअ़त हो तो चाहिये कि वोह मेरे अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नियाज़मन्दी करे और उन को ख़ुशनूद रखे।[2]

इमाम तिरमिज़ी ने ह़ज़रते हु़ज़ैफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत की, कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "येह फ़िरिश्ता आज से पहले कभी ज़मीन पर नाज़िल न हुवा था इस ने ह़ज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त से मुझ पर सलाम करने और येह बिशारत पहुंचाने की इजाज़त चाही कि ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا जन्नती बीबियों की सरदार हैं और ह़सनैने करीमैन (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) जन्नती जवानों के।"[3]

तिरमिज़ी व इब्ने माजा, इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम ने रिवायत किया है कि हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो इन अहले बैत से मुह़ारबा (जंग) करे मैं उस का मुह़ारिब हूं और जो इन से सुल्ह़ करे उस की मुझ से सुल्ह़ है।"[4]

---

1 ...... الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، المقصد الثالث...الخ، ص ١٧٥

2 ...... الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، المقصد الرابع...الخ، ص ١٧٦

3 ......سنن الترمذى، كتاب المناقب،باب مناقب ابى محمد الحسن بن على...الخ، الحديث:٣٨٠٦، ج٥، ص ٤٣١

4 ......سنن الترمذى، كتاب المناقب،باب فضل فاطمة رضى اللّٰه‌عنها،الحديث:٣٨٩٦، ج٥، ص ٤٦٥

इमाम अह़मद व ह़ाकिम ने रिवायत किया ह़ुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने इरशाद फ़रमाया : "फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) मेरा जुज़्व हैं जो इन्हें ना गवार वोह मुझे ना गवार जो इन्हें पसन्द वोह मुझे पसन्द, रोज़े क़ियामत सिवाए मेरे नसब और मेरे सबब और मेरी ख़्वीशावन्दी के तमाम नसब मुन्क़त़अ़ हो जाएंगे।[1]

इन अह़ादीष के इ़लावा जिस क़दर अह़ादीष क़ुरैश के ह़क़ में वारिद हैं और जो फ़ज़ाइल इन में मज़्कूर हैं इन सब से अहले बैत की फ़ज़ीलत षाबित होती है क्यूंकि अहले बैत सब के सब क़ुरैश हैं और जो फ़ज़ीलत कि आ़म के लिये षाबित हो, ख़ास के लिये षाबित होती है। चन्द ह़दीषें जो क़ुरैश के ह़क़ में वारिद हुई हैं यहां बयान की जाती हैं।

ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा ख़ुत़्बए जुमुआ़ में इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! क़ुरैश को बढ़ाओ और उन से आगे न बढ़ो, ऐसा न किया तो हलाक हो जाओगे। उन की पैरवी न छोड़ो वरना गुमराह हो जाओगे, उन के उस्ताद न बनो, उन से इ़ल्म ह़ासिल करो, वोह तुम से आ'ज़म हैं। अगर उन के तफ़ाख़ुर का ख़याल न होता तो मैं उन्हें उन मरातिब से ख़बरदार करता जो बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में उन्हें ह़ासिल हैं।"[2]

बुख़ारी ने ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत किया कि येह अम्र क़ुरैश में है इन से जो अ़दावत करेगा उस को **अल्लाह** तआ़ला मुंह के बल जहन्नम में डालेगा।[3]

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب دعاء دفع الفقر...الخ، الحديث:٤٨٠١، ج٤، ص١٤٤

2 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، الفصل الثانى...الخ، ص١٨٨ ملتقطاً

3 ......صحيح البخارى، كتاب المناقب، باب مناقب قريش، الحديث:٣٥٠٠، ج٢، ص٤٧٤

एक ह़दीष में आया है : कुरैश से मह़ब्बत करो, इन से जो मह़ब्बत करता है **अल्लाह** तआ़ला उस को मह़बूब रखता है।[1]

इमाम अह़मद व ज़हबी वग़ैरा मुह़द्दिषीन ने ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत की, कि जिब्रीले अमीन ने फ़रमाया कि मैं ने ज़मीन के मशारिक़ व मग़ारिब उलट डाले कोई शख़्स हुज़ूरे पुरनूर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अफ़्ज़ल न पाया और मैं ने ज़मीन के मशारिक़ व मग़ारिब उलट डाले बनी हाशिम से बढ़ कर किसी बाप की अवलाद अफ़्ज़ल न पाई।[2]

किसी शाइर ने इस मज़्मून को अपनी ज़बान में इस त़रह़ अदा किया है।

जिब्रील से एक रोज़ यूं कहने लगे शाहे उमम
तुम ने देखा है जहां बतलाओ तो कैसे हैं हम
की अ़र्ज़ येह जिब्रील ने ऐ महजबीं तेरी क़सम !

آفاقہا گردیدہ ام مہر بتاں ورزیدہ ام
بسیار خوباں دیدہ ام لیکن تو چیزے دیگری

इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व ह़ाकिम ने ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स कुरैश की बे इ़ज़्ज़ती चाहेगा **अल्लाह** उसे रुस्वा करेगा।"[3]

---

1 ......المعجم الکبیر للطبرانی، العباس بن سهل بن سعد عن ابی، الحدیث:٥٧٠٩، ج٦، ص١٢٣

2 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الفصل الثانی...الخ، ص١٨٩

3 ......سنن الترمذی،کتاب المناقب،باب فی فضل الانصاروقریش، الحدیث:٣٩٣١، ج٥،ص٤٧٩

अबू बक्र बज़्ज़ार ने ग़िलानियात में अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रोज़े क़ियामत बत़्ने अ़र्श से एक निदा करने वाला निदा करेगा कि ऐ अहले मजमअ़ ! अपने सर झुकाओ, आंखें बन्द करो, यहां तक कि ह़ज़रते फ़ात़िमा बिन्ते सय्यिदे आ़लम मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सीरात़ से गुज़रें फिर आप सत्तर हज़ार बांदियों के साथ जो सब हूरें होंगी बिजली के कौंदने की त़रह़ गुज़र जाएंगी ।[1]

बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि तुम मोमिना बीबियों की सरदार हो ।"[2]

तिरमिज़ी व ह़ाकिम की रिवायत में है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुझे अपनी अहल में सब से ज़ियादा प्यारी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا हैं ।"[3]

सय्यिदैन जलीलैन शहीदैन ह़ज़राते ह़सनैन करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا)

ह़ज़रते इमाम अबू मुह़म्मद ह़सन बिन अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ आप अइम्मए अषना अ़शर में इमामे दुवुम हैं । आप की कुन्यत अबू मुह़म्मद लक़ब तक़ी व सय्यिद उ़र्फ़ सिबत़े रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सिबत़े अक्बर है । आप को रैहानतुर्रसूल और आख़िरुल ख़ुलफ़ा बिन्नस भी कहते हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की विलादत मुबारका 15

1 ......اللآلی المصنوعة فی الاحادیث الموضوعة،کتاب المناقب، باب مناقب اهل البیت، ج ۱،ص ۳٦۸

2 ......صحیح البخاری،کتاب الاستیذان،باب من ناجیٰ...الخ، الحدیث:٦۲۸۵،٦۲۸٦، ج ٤،ص ۱۸٤

3 ......المستدرك للحاكم،کتاب معرفة الصحابة،باب كان احب النساء...الخ،الحدیث:٤۷۸۸، ج ٤،ص ۱۳۹

रमज़ानुल मुबारक सि. 3 हि. की शब में मदीनए त़य्यिबा के मक़ाम पर हुई। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप का नाम ह़सन रखा और सातवें रोज़ आप का अ़क़ीक़ा किया और बाल जुदा किये गए और हुक्म दिया गया कि बालों के वज़्न की चांदी सदक़ा की जाए आप ख़ामिसे अहले कुसा हैं।(1)

बुख़ारी की रिवायत में है क़िब्लए हुस्नो जमाल सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी को वोह मुशाबहते सूरी ह़ासिल न थी जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ह़ासिल थी। आप से पहले ह़सन किसी का नाम न रखा गया था येह जन्नती नाम पहले आप ही को अ़त़ा हुवा है।(2)

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की विलादत का मुझदा पहुंचाया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हुए, फ़रमाया कि अस्मा ! मेरे फ़रज़न्द को लाओ, अस्मा ने एक कपड़े में हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर किया। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दाहिने कान में अज़ान और बाएं में तक्बीर फ़रमाई और ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) से दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम ने इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द का क्या नाम रखा है, अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلى الله عليك وسلم मेरी क्या मजाल कि बे इज़्न व इजाज़त नाम रखने पर सब्क़त करता लेकिन अब जो दरयाफ़्त फ़रमाया जाता है तो जो कुछ ख़याल में आता है वोह येह है कि ह़र्ब नाम

---

1 ......تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب، ص ۱۴۹
و روضۃ الشھداء (مترجم)، باب ششم، ج ۱، ص ۳۹۶

2 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن و الحسین،
الحدیث: ۳۷۵۲، ج ۲، ص ۵۴۷
و تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب، ص ۱۴۹

रखा जाए, आयन्दा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुख़्तार हैं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का नाम ह़सन रखा ।[1]

एक रिवायत में येह भी है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्तिज़ार फ़रमाया, यहां तक कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को आप की बारगाह में वोह क़ुर्ब ह़ासिल है जो ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को दरगाहे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام में था । मुनासिब है कि इस फ़रज़न्दे सआ़दत मन्द का नाम फ़रजन्दे हारून के नाम पर रखा जाए । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का नाम दरयाफ़्त फ़रमाया । अ़र्ज़ किया : शब्बिर । इरशाद हुवा कि ऐ जिब्रील ! लुग़ते अ़रब में इस के क्या मा'ना हैं, अ़र्ज़ किया "ह़सन" । और आप का नाम "ह़सन" रखा गया ।[2]

बुख़ारी व मुस्लिम ने ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत की फ़रमाते हैं : मैं ने नूरे मुजस्सम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, शहज़ादा बुलन्द इक़्बाल ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ आप के दोशे अक़्दस पर थे और हुज़ूर फ़रमा रहे थे : "या रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं इस को मह़बूब रखता हूं तो तू भी मह़बूब रख ।"[3]

इमाम बुख़ारी ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत की, फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ थे । ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ आप

---

1 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب ششم، ج ۱، ص۳۹۶-۳۹۷
وسیر اعلام النبلاء، ومن صغار الصحابۃ، ۲۶۹-الحسن بن علی...الخ، ج ۴، ص۳۷۹
والمسند للامام احمد بن حنبل، ومن مسند علی بن ابی طالب، الحدیث: ۹۵۳، ج ۱، ص ۲۵۰ ماخوذاً

2 ...... روضۃ الشھداء (مترجم)، باب ششم، ج ۱، ص۳۹۷-۳۹۸

3 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن و الحسین، الحدیث: ۳۷۴۹، ج ۲، ص ۵۴۷

صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में थे। हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा लोगों की तरफ़ नज़र फ़रमाते और एक मरतबा इस फ़रज़न्दे जमील की तरफ़, मैं ने सुना हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि येह मेरा फ़रज़न्द सय्यिद है और **अल्लाह** तआला इस की बदौलत मुसलमानों की दो जमाअतों में सुल्ह करेगा।(1)

बुख़ारी में हज़रते इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हसन, हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दुन्या में मेरे दो फूल हैं।"(2)

तिरमिज़ी की हदीष में है, हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हसन और हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जन्नती जवानों के सरदार हैं।"(3)

इब्ने सा'द ने अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत में हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सब से ज़ियादा मुशाबेह और हुज़ूर को सब से प्यारे हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे, मैं ने देखा हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तो सजदे में होते और येह वाला शान साहिबज़ादे आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गर्दने मुबारक या पुश्ते अक़दस पर बैठ जाते तो जब तक येह उतर न

1 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن و الحسین، الحدیث:٣٧٤٦، ج٢، ص٥٤٦

2 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن و الحسین، الحدیث:٣٧٥٣، ج٢، ص٥٤٧

3 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی...الخ، الحدیث:٣٧٩٣، ج٥، ص٤٢٦

जाते आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सर मुबारक न उठाते और मैं ने देखा हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रुकूअ़ में होते तो इन के लिये अपने क़दमैन त़ाहिरैन को इतना कुशादा फ़रमा देते कि येह निकल जाते।

हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मनाक़िब बहुत कषीर हैं। आप इ़ल्मो वक़ार, ह़शमतो जाह, जूदो करम, ज़ोहदो त़ाअ़त में बहुत बुलन्द पाया हैं, एक एक आदमी को एक एक लाख का अ़तिय्या मर्ह़मत फ़रमा देते थे।(1)

ह़ाकिम ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद बिन उ़मैर से रिवायत किया कि हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने पच्चीस ह़ज पाप्यादा किये हैं और कोतल सुवारियां आप के हमराह होती थी मगर इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की तवाज़ोअ़ और इख़्लास व अदब का इक़्तिज़ा कि आप ह़ज के लिये प्यादा सफ़र फ़रमाते, आप का कलाम बहुत शीरीं था, अहले मजलिस नहीं चाहते थे कि आप गुफ़्तगू ख़त्म फ़रमाएं।(2)

इब्ने सा'द ने अ़ली बिन जै़द बिन जद्आ़न से रिवायत की, कि हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दो बार अपना कुल माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दे डाला और तीन मरतबा निस्फ़ माल दिया और ऐसी सह़ीह़ तन्सीफ़ की, कि ना'लैन शरीफ़ और जुराबों में से एक एक देते थे और एक एक रख लेते थे।(3)

आप के ह़िल्म का येह ह़ाल था कि इब्ने अ़साकिर ने रिवायत किया कि आप की वफ़ात के बा'द मरवान बहुत रोया। इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि आज तू रो रहा है और इन की ह़यात में इन के साथ किस किस त़रह़ की बद सुलूकियां किया करता था। तो वोह

---

1 ......تاریخ الخلفاء،باب الحسن بن علی بن ابی طالب،ص ۱۵۰

2 ......المستدرك للحاكم،كتاب معرفة الصحابة،باب حج الحسن...الخ،الحديث:۴۸۴۱، ج۴،ص ۱۶۰

وتاریخ الخلفاء،باب الحسن بن علی بن ابی طالب،ص ۱۵۰ ماخوذاً

3 ......تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب، ص ۱۵۱

पहाड़ की त़रफ़ इशारा कर के कहने लगा : "मैं इस से ज़ियादा ह़लीम के साथ ऐसा करता था।"(1)

अल्लाह रे ह़िल्म ! मरवान को भी ए'तिराफ़ है कि आप की बुर्दबारी पहाड़ से भी ज़ियादा है !!!

ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त

ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शहादत के बा'द ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ मस्नदे ख़िलाफ़त पर जल्वा अफ़रोज़ हुए, अहले कूफ़ा ने आप के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त की और आप ने वहां चन्द माह चन्द रोज़ क़ियाम फ़रमाया, इस के बा'द आप ने अम्रे ख़िलाफ़त का ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया को तफ़्वीज़ करना मस्तूरे ज़ैल शराइत़ पर मन्ज़ूर फ़रमाया :

﴾1﴿ बा'द अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के ख़िलाफ़त ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को पहुंचेगी।

﴾2﴿ अहले मदीना और अहले हिजाज़ और अहले इ़राक़ में किसी शख़्स से भी ज़मानए ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन मौला अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के मुतअ़ल्लिक़ कोई मुआख़ज़ा व मुत़ालबा न किया जावे।

﴾3﴿ अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के दुयून को अदा करें।

ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने येह तमाम शराइत़ क़बूल कीं और बाहम सुल्ह़ हो गई और ह़ुज़ूरे अन्वर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मो'जिज़ा ज़ाहिर हुवा जो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि अल्लाह तआ़ला मेरे इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द की बदौलत मुसलमानों की दो जमाअ़तों में सुल्ह़ फ़रमाएगा। ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने तख़्ते सल्त़नत ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के लिये ख़ाली कर दिया। येह वाक़िआ़ रबीउ़ल अव्वल सि. 41 हि. का है।

1......تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب، ص ۱۵۱

हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अस्हाब को आप का ख़िलाफ़त से दस्तबरदार होना नागवार हुवा और उन्हों ने त़रह़ त़रह़ की ता'रीज़ें कीं और इशारों किनायों में आप पर नाराज़ी का इज़्हार किया। आप ने उन्हें समझा दिया कि मुझे गवारा न हुवा कि मुल्क के लिये तुम्हें क़त्ल कराऊं। इस के बा'द इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कूफ़ा से रिह़लत फ़रमाई और मदीनए त़य्यिबा में इक़ामत गुज़ीं हुए।

हज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ से हज़रते इमामे आली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का वज़ीफ़ा एक लाख सालाना मुक़र्रर था। एक साल वज़ीफ़ा पहुंचने में ताख़ीर हुई और इस वजह से हज़रते इमाम को सख़्त तंगी दरपेश हुई। आप ने चाहा कि अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस की शिकायत लिखें, लिखने का इरादा किया, दवात मंगाई मगर फिर कुछ सोच कर तवक्कुफ़ किया। ख़्वाब में हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदारे पुर अन्वार से मुशर्रफ़ हुए, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सारे ह़ाल फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरे फ़रज़न्दे अरजुमन्द ! क्या ह़ाल है ? अ़र्ज़ किया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ब ख़ैर हूं और वज़ीफ़े की ताख़ीर की शिकायत की। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ने दवात मंगाई थी ताकि तुम अपनी मिस्ल एक मख़्लूक़ के पास अपनी तक्लीफ़ की शिकायत लिखो। अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم मजबूर था, क्या करता। फ़रमाया येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰھُمَّ اَقْذِفْ فِیْ قَلْبِیْ رِجَائَكَ وَاقْطَعْ رِجَآئِیْ عَمَّنْ سِوَاكَ
حَتّٰی لَا اَرْجُوْ اَحَدًا غَیْرَكَ اَللّٰھُمَّ وَمَا ضَعُفَتْ عَنْهُ قُوَّتِیْ وَقَصُرَ عَنْهُ عَمَلِیْ وَلَمْ تَنْتَهِ اِلَیْهِ رَغْبَتِیْ وَلَمْ تَبْلُغْهُ مَسْئَلَتِیْ وَلَمْ یَجْرِ عَلٰی لِسَانِیْ مِمَّا اَعْطَیْتَ اَحَدًا
مِنَ الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ مِنَ الْیَقِیْنِ فَخُصَّنِیْ بِهٖ یَارَبَّ الْعٰلَمِیْنَ

"या रब्ब عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल में अपनी उम्मीद डाल और अपने मासिवा से मेरी उम्मीद क़त्अ़ कर यहां तक कि मैं तेरे सिवा किसी से अपनी उम्मीद न रखूं। या रब्ब عَزَّوَجَلَّ जिस से मेरी कुव्वत आ़जिज़ और अ़मल क़ासिर हो और जहां तक मेरी रग़बत और मेरा सुवाल न पहुंचे और मेरी ज़बान पर जारी न हो, जो तूने अव्वलीन व आख़िरीन में से किसी को अ़ता फ़रमाया हो यक़ीन से या रब्बल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ मुझ को इस के साथ मख़्सूस फ़रमा।"

हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि इस दुआ़ पर एक हफ़्ता न गुज़रा कि अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने मेरे पास एक लाख पचास हज़ार भेज दिये और मैं ने **अल्लाह** तआ़ला की हम्दो षना की और उस का शुक्र बजा लाया। फिर ख़्वाब में दौलते दीदार से बहरामन्द हुवा। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ ह़सन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ क्या हाल है? मैं ने खुदा عَزَّوَجَلَّ का शुक्र कर के वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्द! जो मख़्लूक़ से उम्मीद न रखे और ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ से लौ लगाएं उस के काम यूं ही बनते हैं।

हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ की शहादत

इब्ने सा'द ने इमरान इब्ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने त़लह़ा से रिवायत की, कि किसी ने ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ को ख़्वाब में देखा कि आप के दोनों चश्म के दरमियान : قُلۡ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۝[1] लिखी हुई है। आप के अहले बैत में इस से बहुत खुशी हुई लेकिन जब येह ख़्वाब ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ के सामने बयान किया गया तो उन्हों ने फ़रमाया कि वाक़ेई अगर येह ख़्वाब देखा है तो ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ की उ़म्र के चन्द ही रोज़ रह गए हैं। येह ता'बीर सह़ीह़ षाबित हुई और बहुत क़रीब ज़माने में आप को ज़हर दिया गया।[2]

---

1 ....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है।* (پ۳۰،الاخلاص:۱)

2 ......تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب،ص۱۵۲ـ۱۵۳ملتقطاً وماخوذاً

ज़हर के असर से इस्हाले कबिदी लाहिक़ हुवा और आंतों के टुकड़े कट कट कर इस्हाल में ख़ारिज हुए। इस सिलसिले में आप को चालीस रोज़ सख़्त तक्लीफ़ रही। क़रीबे वफ़ात जब आप की ख़िदमत में आप के बरादरे अज़ीज़ सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने हाज़िर हो कर दरयाफ़्त फ़रमाया कि आप को किस ने ज़हर दिया है? तो फ़रमाया कि तुम उसे क़त्ल करोगे? हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने जवाब दिया कि बेशक! हज़रते इमामे आ़ली मक़ाम ने फ़रमाया कि मेरा गुमान जिस की त़रफ़ है अगर दर ह़क़ीक़त वोही क़ातिल है तो **अल्लाह** तआ़ला मुनतक़िमे ह़क़ीक़ी है और उस की गिरिफ़्त बहुत सख़्त है और अगर वोह नहीं है तो मैं नहीं चाहता कि मेरे सबब से कोई बे गुनाह मुब्तलाए मुसीबत हो। मुझे इस से पहले भी कई मर्तबा ज़हर दिया गया है लेकिन इस मर्तबा का ज़हर सब से ज़ियादा तेज़ है।(1)

سُبْحٰنَ اللّٰہ हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की करामत और मन्ज़िलत कैसी बुलन्दो बाला है कि अपने आप सख़्त तक्लीफ़ में मुब्तला हैं, आंतें कट कट कर निकल रही हैं, नज़्अ़ की ह़ालत है मगर इन्साफ़ का बादशाह इस वक़्त भी अपनी अ़दालत व इन्साफ़ का न मिटने वाला नक़्शा सफ़ह़ए तारीख़ पर षबत फ़रमाता है। उस की एह़तियात़ इजाज़त नहीं देती कि जिस की त़रफ़ गुमान है उस का नाम भी लिया जाए। उस वक़्त आप की उ़म्र शरीफ़ पैंतालीस साल छे माह चन्द रोज़ की थी कि आप ने पांचवीं रबीउ़ल अव्वल सि. 49 हि. को इस दारे नापाईदार से मदीनए त़य्यिबा में रिह़लत फ़रमाई।(2) اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

वफ़ात के क़रीब ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने देखा कि इन के बरादरे मुह़तरम ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को घबराहट और बे क़रारी ज़ियादा है और सीमाए मुबारक पर हुज़्नो मलाल के

1 ......حلیۃ الاولیاء، الحسن بن علی بن ابی طالب، الحدیث:۱۴۳۸، ج۲، ص۴۷ ماخوذاً

2 ......تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب، ص۱۵۲

आषार नुमूदार हैं । येह देख ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने तस्कीने ख़ाति़रे मुबारक के लिये अ़र्ज़ किया कि ऐ बरादरे गिरामी ! आप क्यूं रन्जीदा हैं, बे क़रारी का क्या सबब है । मुबारक हो ! आप को अ़न क़रीब ह़ुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बारयाबी ह़ासिल होगी और ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा और ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा और फ़ाति़मा ज़हरा और ह़ज़रते क़ासिम व त़ाहिर और ह़ज़रते ह़म्ज़ा व जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُم) का दीदार नसीब होगा । ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि ऐ बरादरे अ़ज़ीज़ ! मैं कुछ ऐसे अम्र में दाख़िल होने वाला हूं जिस की मिष्ल अब तक दाख़िल नहीं हुवा था और ख़ल्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ में से ऐसी ख़ल्क़ को देखता हूं जिस की मिष्ल मैं ने कभी नहीं देखी और इस के साथ ही आप ने ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पेश आने वाले वाक़िआत और कूफ़ियों की बद सुलूकी व ईज़ा रसानी का भी तज़किरा किया ।(1)

इस इरशादे मुबारक से मा'लूम होता है कि उस वक़्त आप की नज़र के सामने करबला का हौलनाक मन्ज़र और ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की तन्हाई का नक़्शा पेश था और कूफ़ियों के मज़ालिम की तस्वीरें आप को ग़मगीन कर रही थीं । इस के साथ आप ने येह भी फ़रमाया कि मैं ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से दरख़्वास्त की थी कि मुझे रौज़ए त़ाहिरा में दफ़्न की जगह इनायत हो जाए उन्हों ने इस को मन्ज़ूर फ़रमाया । मेरी वफ़ात के बा'द इन की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया जाए लेकिन मैं गुमान करता हूं कि क़ौम मानेअ़ होगी, अगर वोह ऐसा करें तो तुम इन से तकरार न करना । ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़स्बे वसिय्यत ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से दरख़्वास्त की, आप ने इस को क़बूल फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि बड़ी इ़ज़्ज़त व करामत के साथ मन्ज़ूर है, लेकिन मरवान मानेअ़ हुवा

(1) ......تاریخ الخلفاء،باب الحسن بن علی بن ابی طالب،ص۱۵۳

और नोबत यहां तक पहुंच गई कि ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन के हमराही हथयार बन्द हो गए। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें भाई की वसिय्यत याद दिला कर वापस किया और येह फ़रज़न्दे रसूल जिगर गोशए बतूल बक़ीअ़ शरीफ़ में अपनी वालिदए मोह़तरमा ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत के पहलू में मदफ़ून हुए। رضی اللہ تعالٰی عنھم و رضواعنہ (1)

मुअर्रिख़ीन ने ज़ह्र ख़ूरानी की निस्बत जअ़दा बिन्ते अशअ़ष इब्ने क़ैस की त़रफ़ की है और इस को ह़ज़रते इमाम की ज़ौजा बताया है और येह भी कहा है कि येह ज़ह्र ख़ूरानी बाग़वाए यज़ीद हुई है और यज़ीद ने उस से निकाह़ का वा'द किया था। इस त़म्अ़ में आ कर उस ने ह़ज़रते इमाम को ज़ह्र दिया।(2) लेकिन इस रिवायत की कोई सनदे सह़ीह़ दस्तयाब नहीं हुई और बिग़ैर किसी सनदे सह़ीह़ के किसी मुसलमान पर क़त्ल का इल्ज़ाम और ऐसे अ़ज़ीमुश्शान क़त्ल का इल्ज़ाम किस त़रह़ जाइज़ हो सकता है।

क़त़अ़ नज़र इस बात के कि रिवायत के लिये कोई सनद नहीं है और मुअर्रिख़ीन ने बिग़ैर किसी मो'तबर ज़रीए़ या मो'तमद ह़वाले के लिख दिया है। येह ख़बर वाक़िआ़त के लिह़ाज़ से भी नाक़ाबिले इत़मीनान मा'लूम होती है। वाक़िआ़त की तह़क़ीक़ ख़ुद वाक़िआ़त के ज़माने में जैसी हो सकती है मुश्किल है कि बा'द को वैसी तह़क़ीक़ हो ख़ास कर जब कि वाक़िआ़ इतना अहम हो मगर ह़ैरत है कि अहले बैते अत़हार के इस इमामे जलील का क़त्ल उस क़ातिल की ख़बरे ग़ैर को तो क्या होती ख़ुद ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पता नहीं है येही तारीख़ें बताती हैं कि वोह अपने बरादरे मुअ़ज़्ज़म से ज़ह्र दहन्दा का नाम दरयाफ़्त फ़रमाते हैं इस से साफ़ ज़ाहिर है कि ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ज़ह्र देने वाले का इल्म न था। अब रही येह बात कि ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ किसी का नाम लेते। उन्हों ने ऐसा नहीं किया तो अब जअ़दा को क़ातिल होने के लिये मुअ़य्यन करने वाला

1 ......تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب، ص۱۵۳۔۱۵۴

2 ......تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب،ص۱۵۲

कौन है ? हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को या इमामैन के साहिबज़ादों में से किसी साहिब को अपनी आख़िर हयात तक जअ़्दा की ज़हर ख़ूरानी का कोई षबूत न पहुंचा न इन में से किसी ने उस पर शरई मुआख़ज़ा किया।

एक और पहलू इस वाक़िए का ख़ास तौर पर क़ाबिले लिहाज़ है वोह येह कि हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की बीवी को ग़ैर के साथ साज़ बाज़ करने की शनीअ़ तोहमत के साथ मुत्तहिम किया जाता है येह एक बद तरीन तबर्रा है। अ़जब नहीं कि इस हिकायत की बुन्याद ख़ारिजियों की इफ़्तिराअत हों जब कि सहीह और मो'तबर ज़राएअ़ से येह मा'लूम है कि हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ कषीरुतज़व्वुज थे और आप ने सो(100) के क़रीब निकाह किये और तलाक़ें दीं। अकषर एक दो शब ही के बा'द तलाक़ दे देते थे और हज़रते अमीरुल मोअमिनीन अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم बारबार ए'लान फ़रमाते थे कि इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की आदत है, येह तलाक़ दे दिया करते हैं, कोई अपनी लड़की इन के साथ न बियाहे। मगर मुसलमान बीबियां और उन के वालिदैन येह तमन्ना करते थे कि कनीज़ होने का शरफ़ हासिल हो जाए इसी का अषर था कि हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिन औरतों को तलाक़ दे देते थे। वोह अपनी बाक़ी ज़िन्दगी हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की महब्बत में शैदायाना गुज़ार देती थीं और इन की हयात का लम्हा लम्हा हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की याद और महब्बत में गुज़रता था।[1] ऐसी हालत में येह बात बहुत बईद है कि इमाम की बीवी हज़रते इमाम के फ़ैज़े सोहबत की क़द्र न करे और यज़ीदे पलीद की तरफ़ एक तमए फ़ासिद से इमामे जलील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के क़त्ल जैसे सख़्त जुर्म का इर्तिकाब करे। وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ بِحَقِیۡقَۃِ الۡحَال

---

1 ......تاریخ الخلفاء، باب الحسن بن علی بن ابی طالب،ص ۱۵۱ ملخصاً

क़ियामत नुमा हादिषा

ज़मीने करबला का ख़ूनी मन्ज़र

सय्यिदुश्शुहदा हज़रते इमामे हुसैन और इन के रुफ़क़ा की अदीमुल मिषाल जांबाज़ियां

विलादते मुबारका

सय्यिदुश्शुहदा हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत 5 शा'बान सि. 4 हि. को मदीनए मुनव्वरा में हुई। हुज़ूरे पुरनूर, सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम हुसैन और शब्बीर रखा और आप की कुन्यत अबू अब्दुल्लाह और लक़ब **सिबते रसूलुल्लाह** और **रैहानतुर्रसूल** है और आप के बरादरे मुअज़्ज़म की तरह आप को भी जन्नती जवानों का सरदार और अपना फ़रज़न्द फ़रमाया।[1]

हुज़ूरे अक़दस, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आप के साथ कमाले राफ़्त व महब्बत थी। हदीष शरीफ़ में इरशाद हुवा :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ مَنْ اَحَبَّهُمَا فَقَدْ اَحَبَّنِیْ وَمَنْ اَبْغَضَهُمَا فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ[2]

"जिस ने इन दोनों (हज़रते इमामे हसन व इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا) से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने इन से अदावत की उस ने मुझ से अदावत की।"

"जन्नती जवानों का सरदार" फ़रमाने से मुराद येह है कि जो लोग राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी जवानी में राहिये जन्नत हुए हज़रते

---

1 ......اسد الغابة، باب الحاء و الحسين، ١١٧٣ـ الحسين بن على، ص٢٥، ٢٦ ملتقطاً و سير اعلام النبلاء، ٢٧٠ـ الحسين الشهيد...الخ، ج٤، ص٤٠٢ـ٤٠٤

2 ......المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب ركوب الحسن...الخ، الحديث: ٤٨٣٠، ج٤، ص١٥٦

इमामैने करीमैन उन के सरदार हैं और जवान किसी शख़्स को ब लिहाज़ इस के नौ उम्री के भी कहा जाता है और ब लिहाज़ शफ़्क़ते बुज़ुर्गाना के भी, आदमी की उम्र कितनी भी हो उस के बुज़ुर्ग उस को जवान बल्कि लड़का तक कहते हैं, शैख़ और बुढ्ढा नहीं कहते हैं। इसी त़रह़ ब मा'ना फ़ुतुव्वत व जवामर्दी भी लफ़्ज़े जवान का इत़लाक़ होता है ख़्वाह कोई शख़्स बुढ्ढा हो मगर हिम्मते मर्दाना रखता हो वोह अपनी शुजाअ़त व बसालत के लिहाज़ से जवान कहलाया जाता है। ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की उम्र शरीफ़ अगर्चे वक़्ते विसाल पचास से ज़ाइद थी। मगर शुजाअ़त व जवांमर्दी के लिहाज़ से नीज़ शफ़्क़ते पिदरी के इक़्तिज़ा से आप को जवान फ़रमाया गया और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि अम्बियाए किराम व ख़ुलफ़ाए राशिदीन के सिवा इमामैने जलीलैन तमाम अहले जन्नत के सरदार हैं क्यूंकि जवानाने जन्नत से तमाम अहले जन्नत मुराद हैं इस लिये कि जन्नत में बुढ्ढे और जवान का फ़र्क़ न होगा। वहां सब ही जवान होंगे और सब की एक उम्र होगी। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन दोनों फ़रज़न्दों को अपना फूल फ़रमाया। هُمَا رَیْحَانَیَّ مِنَ الدُّنْیَا वोह दुन्या में मेरे दो फूल हैं।(1) (رواہ الترمذی)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन दोनों नौनिहालों को फूल की त़रह़ सूंघते और सीनए मुबारक से लिपटाते।(2) (رواہ الترمذی)

---

1 ......الصواعق المحرقة،الباب الحادی عشر،الفصل الثالث، ص ۱۹۳
وصحیح مسلم،کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها،باب فی دوام نعیم اهل الجنة...الخ، الحدیث:۲۸۳۷،ص ۱۵۲۱ ماخوذاً
ومشکاة المصابیح،کتاب المناقب،باب مناقب اهل البیت...الخ،الحدیث:۶۱۴۵، ج۲،ص ۴۳۷

2 ......سنن الترمذی،کتاب المناقب،باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی...الخ، الحدیث:۳۷۹۷،ج۵،ص ۴۲۸

हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चची ह़ज़रते उम्मुल फ़ज़्ल बिन्ते अल ह़ारिष ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा एक रोज़ हुज़ूरे अन्वर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हुज़ूर में ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم आज मैं ने एक परेशान ख़्वाब देखा, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या ? अ़र्ज़ किया : वोह बहुत ही शदीद है। उन को उस ख़्वाब के बयान की जुरअत न होती थी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुकर्रर दरयाफ़्त फ़रमाया तो अ़र्ज़ किया कि मैं ने देखा कि जसदे अत़हर का एक टुकड़ा काटा गया और मेरी गोद में रखा गया। इरशाद फ़रमाया : तुम ने बहुत अच्छा ख़्वाब देखा, اِنْ شَاءَ اللّٰہ تعالی फ़ात़िमा ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) के बेटा होगा और वोह तुम्हारी गोद में दिया जाएगा।

ऐसा ही हुवा। ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुए और ह़ज़रते उम्मुल फ़ज़्ल की गोद में दिये गए। उम्मुल फ़ज़्ल फ़रमाती हैं : मैं ने एक रोज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद में दिया, क्या देखती हूं कि चश्मे मुबारक से आंसूओं की लड़ियां जारी हैं। मैं ने अ़र्ज़ किया : या नबिय्यल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم मेरे मां बाप हुज़ूर पर क़ुरबान ! येह क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) मेरे पास आए और उन्हों ने येह ख़बर फ़रमाई कि मेरी उम्मत इस फ़रज़न्द को क़त्ल करेगी। मैं ने कहा : क्या इस को ? फ़रमाया : हां और मेरे पास इस के मक़्तल की सुर्ख़ मिट्टी भी लाए।(1) (رواہ البیھقی فی الدلائل)

---

1 ......دلائل النبوۃ للبیھقی، جماع ابواب اخبار النبی...الخ، باب ما روی فی اخبارہ...الخ، ج٦، ص٤٦٨
والمستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب اول فضائل ابی عبد اللّٰہ الحسين بن علی...الخ، الحدیث:٤٨٧١، ج٤، ص١٧١

शहादत की शोहरत

हज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत के साथ ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत की ख़बर मशहूर हो चुकी, शीर ख़्वारगी के अय्याम में हुज़ूरे अक़्दस नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल फ़ज़्ल को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत की ख़बर दी, ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने इस नौनिहाल को ज़मीने करबला में ख़ून बहाने के लिये अपना ख़ूने जिगर (दूध) पिलाया, अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने अपने दिल बन्द जिगर पैवन्द को ख़ाके करबला में लौटने और दम तोड़ने के लिये सीने से लगा कर पाला, मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयाबान में सूखा ह़ल्क़ कटवाने और राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में मर्दाना वार जान नज़्र करने के लिये इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपनी आग़ोशे रह़मत में तर्बिय्यत फ़रमाया, येह आग़ोशे करामत व रह़मते फ़िरदौसी चमनिस्तानों और जन्नती ऐवानों से कहीं ज़ियादा बाला मर्तबत है, उस के रुतबे की क्या निहायत और जो इस गोद में परवरिश पाए उस की इ़ज़्ज़त का क्या अन्दाज़ा। उस वक़्त का तसव्वुर दिल लर्ज़ा देता है जब कि इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत की मसर्रत के साथ साथ शहादत की ख़बर पहुंची होगी, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्मए रह़मत चश्मने अश्कों के मोती बरसा दिये होंगे, इस ख़बर ने सह़ाबए किबार जां निषाराने अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के दिल हिला दिये, इस दर्द की लज़्ज़त अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के दिल से पूछिये, सिदक़ो सफ़ा की इम्तिह़ानगाह में सुन्नते ख़लील عَلَیْہِ السَّلَام अदा कर रहे हैं।

हज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़ाके ज़ेरे क़दमे पाक पर क़ुरबान ! जिस के दिल का टुकड़ा नाज़नीन लाडला सीने से लगा हुवा है, मह़ब्बत की निगाहों से इस नूर के पुतले को देखती हैं, वोह

अपने सरवर आफ़रीं तबस्सुम से दिलरुबाई करता है, हुमक हुमक कर महब्बत के समुन्दर में तलातुम पैदा करता है, मां की गोद में खेल कर शफ़्क़ते मादरी के जोश को और ज़ियादा मौजज़्न करता है, मीठी मीठी निगाहों और प्यारी प्यारी बातों से दिल लुभाता है, ऐन ऐसी हालत में करबला का नक़्शा आप के पेशे नज़र होता है। जहां येह चहीता, नाज़ो का पाला, भूका प्यासा, बयाबान में बे रहूमी के साथ शहीद हो रहा है, न अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم साथ हैं न ह़सने मुज्तबा, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब बरादरो फ़रज़न्द क़ुरबान हो चुके हैं, तन्हा येह नाज़्नीन हैं, तीरों की बारिश से नूरी जिस्म लहू लुहान हो रहा है, ख़ैमे वालों की बेकसी अपनी आंखों से देखता है और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मर्दाना वार जान निषार करता है। करबला की ज़मीन मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फूल से रंगीन होती है, वोह शमीमे पाक जो ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को प्यारी थी कूफ़ा के जंगल को इत्र बीज़ करती है, ख़ातूने जन्नत رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की नज़र के सामने येह नक़्शा फिर रहा है और फ़रज़न्द सीने से लिपट रहा है। ह़ज़रते हाजरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا इस मन्ज़र को देखें।

देखना तो येह है कि इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द के जद्दे करीम, ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, ह़ज़रते ह़क़ तबारक व तआ़ला इन का रिज़ाजू है : وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ؕ[1] बह़रो बर में इन का हुक्म नाफ़िज़ है, शजरो ह़जर सलाम अ़र्ज़ करते हैं और मुत़ीए़ फ़रमान हैं, चांद इशारों पर चला करता है, डूबा हुवा सूरज पलट आता है, बद्र में मलाइका लश्करी बन कर ह़ाज़िरे ख़िदमत होते हैं, कौनैन के ज़र्रे ज़र्रे पर ब हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ हुकूमत है, अव्वलीन व आख़िरीन सब की उ़क़्दा कुशाई इशारए चश्म पर मौक़ूफ़ व मुन्ह़सिर है, इन के ग़ुलामों के सदक़े

---

1 ....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।* (پ ۳۰، الضحٰی:۵)

में ख़ल्क़ के काम बनते हैं, मददें होती हैं, रोज़ी मिलती है هَل تُنصَرُوْنَ وَتُرْزَقُوْنَ اِلَّا بِضُعَفَآئِكُمْ(1) (رواه البخاری) बावुजूद इस के इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द की ख़बरे शहादत पा कर चश्मे मुबारक से अश्क तो जारी हो जाते हैं मगर मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दुआ के लिये हाथ नहीं उठाते, बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इमामे हुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के अमनो सलामत और इस हादिषए हाइला से महफ़ूज़ रहने और दुश्मनों के बरबाद होने की दुआ नहीं फ़रमाते, न अली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم अर्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليک وسلم इस ख़बर ने तो दिलो जिगर पारा पारा कर दिये, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के कुरबान ! बारगाहे हक़ में अपने इस फ़रज़न्द के लिये दुआ फ़रमाइये। न ख़ातूने जन्नत رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا इल्तिजा करती हैं कि ऐ सुल्ताने दारैन ! आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ से आलम फ़ैज़याब है और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ मुस्तजाब। मेरे इस लाडले के लिये दुआ फ़रमा दीजिये, न अहले बैत न अज़्वाजे मुतह्हरात न सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) सब ख़बरे शहादत सुनते हैं, शोहरा आम हो जाता है मगर बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में किसी तरफ़ से दुआ की दरख़्वास्त पेश नहीं होती।

बात येह है कि मक़ामे इम्तिहान में षाबित क़दमी दरकार है, येह महले उज़्र व तअम्मुल नहीं, ऐसे मौक़अ़ पर जान से दरैग़ जांबाज़ मर्दों का शैवा नहीं, इख़्लास से जां निषारी ऐन तमन्ना है। दुआएं की गईं मगर येह कि येह फ़रज़न्द मक़ामे सफ़ा व वफ़ा में सादिक़ षाबित हो। तौफ़ीक़े इलाही عَزَّوَجَلَّ मुसाइद रहे, मसाइब का हुजूम और आलाम का अम्बोह इस के क़दम को पीछे न हटा सके।

---

1 ...... صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسير، باب من استعان ...الخ، الحديث:٢٨٩٦، ج٢، ص ٢٨٠

अहादीष में इस शहादत की बहुत ख़बरें वारिद हैं। इब्ने सा'द व त़बरानी ने ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत की, कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे जिब्रील ने ख़बर दी कि मेरे बा'द मेरा फ़रज़न्द हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ज़मीने त़फ़्फ़ में क़त्ल किया जाएगा और जिब्रील عَلَیۡہِ السَّلَام मेरे पास येह मिट्टी लाए, उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि येह (हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ) की ख़्वाबगाह (मक़्तल) की ख़ाक है। त़फ़्फ़ क़रीबे कूफ़ा उस मक़ाम का नाम है जिस को **करबला** कहते हैं।(1)

इमाम अह़मद ने रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरी दौलत सराए अक़्दस में वोह फ़िरिश्ता आया जो इस से क़ब्ल कभी ह़ाज़िर न हुवा था, उस ने अ़र्ज़ किया कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ) क़त्ल किये जाएंगे और अगर आप चाहें तो मैं आप को उस ज़मीन की मिट्टी मुलाह़ज़ा कराऊं जहां वोह शहीद होंगे। फिर उस ने थोड़ी सी सुर्ख़ मिट्टी पेश की।(2)

इस क़िस्म की ह़दीषें ब कषरत वारिद हैं, किसी में बारिश के फ़िरिश्ते के ख़बर देने का तज़्किरा है, किसी में उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا को ख़ाके करबला तफ़्वीज़ करने और इस ख़ाक के ख़ून हो जाने को अ़लामते शहादते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ क़रार देने का तज़्किरा है। जिस से मा'लूम होता है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इस शहादत की बार बार इत्तिलाअ़ दी गई और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी बारहा इस का तज़्किरा फ़रमाया और

---

1 ......المعجم الکبیر للطبرانی، الحسین بن علی...الخ، الحدیث:۲۸۱۴، ج۳، ص۱۰۷ والصواعق المحرقۃ،الباب الحادی عشر،الفصل الثالث فی الاحادیث الواردۃ فی بعض اهل البیت...الخ،ص۱۹۳

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ام سلمۃ...الخ،الحدیث:۲۶۵۸۶، ج۱۰، ص۱۸۰

येह शहादत ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के अ़हदे तुफ़ूलिय्यत से ख़ूब मश्हूर हो चुकी और सब को मा'लूम हो गया कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ का मशहद करबला है।[1]

ह़ाकिम ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत की, कि हम को कोई शक बाक़ी न रहा और अहले बैत عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان ब इत्तिफ़ाक़ जानते थे कि इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ करबला में शहीद होंगे।[2]

अबू नुऐ़म ने नजी ह़ज़्रमी से रिवायत की, कि वोह सफ़रे सिफ़्फ़ीन में ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم के हमराह थे, जब नैनवा के क़रीब पहुंचे जहां ह़ज़रते यूनुस عَلَیۡہِ السَّلَام का मज़ारे अक़्दस है तो ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم ने निदा की, कि ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! फ़ुरात के कनारे ठहरो। मैं ने अ़र्ज़ किया : किस लिये ? फ़रमाया : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिब्रील عَلَیۡہِ السَّلَام ने मुझे ख़बर दी है कि इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ) फ़ुरात के किनारे शहीद किये जाएंगे और मुझे वहां की एक मुश्त मिट्टी दिखाई।[3]

अबू नुऐ़म ने अस्बग़ बिन नबाता से रिवायत की, कि हम ह़ज़रते मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہ تعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم के हमराह ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की क़ब्र के मक़ाम पर पहुंचे। ह़ज़रते मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم ने बयान फ़रमाया : यहां उन शोहदा के ऊंट बंधेंगे, यहां उन के कजावे रखे जावेंगे, यहां उन के ख़ून बहेंगे, जवानाने आले मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस मैदान में शहीद होंगे, आस्मान व ज़मीन उन पर रोएंगे।[4]

---

1 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الفصل الثالث فی الاحادیث الواردة فی بعض اهل البیت...الخ، ص ١٩٣

2 ......المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب استشهد الحسین...الخ، الحدیث:٤٨٧٩، ج ٤، ص ١٧٥

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند علی بن ابی طالب، الحدیث:٦٤٨، ج ١، ص ١٨٤

4 ......دلائل النبوة لابی نعیم، الفصل الخامس و العشرون، باب ما ظهر ...الخ، ج ٢، ص ١٤٧

इन ख़बरों से मा'लूम होता है कि अ़ली मुर्तज़ा और सहाबए किबार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ज़मीने करबला के चप्पे चप्पे को पहचानते थे, उन्हें मा'लूम था कहां ऊंट बांधे जाएंगे, कहां सामान रखा जाएगा, कहा ख़ून बहेंगे। येह शहादत का कमाल है ऐसा ए'लान आ़म हो, अपने पराए सब जान जाएं, मक़ाम बता दिया गया हो, वहां की ख़ाक शीशियों में रख ली गई हो, उस के ख़ून हो जाने का इन्तिज़ार हो और शौक़े शहादत में कमी न आए, जज़्बए जां निषारी रोज़ अफ़्ज़ूं होता रहे, तमाम चाहने वाले पहले से बा ख़बर हों, हर दिल इस ज़ख़्म का मज़ा ले और सब्रो इस्तिक़्लाल के साथ जान अ़ता करने वाले की राह में जान क़ुरबान की जाए। येह मर्दाने कामिल और फ़रज़न्दाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हिस्सा और इन्हीं का हौसला है।

طعمہ ہر مرغکے انجیر نیست

पहाड़ भी होता तो वह्शत से घबरा उठता और ज़िन्दगी का एक एक लम्ह़ा काटना मुश्किल हो जाता मगर त़ालिबे रिज़ाए ह़क़, मौला عَزَّوَجَلَّ की मर्ज़ी पर फ़िदा होता है, इसी में उस के दिल का चैन और उस की ह़क़ीक़ी तसल्ली है, कभी वह्शत, परेशानी उस के पास नहीं फटकती, कभी इस मुसीबते उ़ज़्मा से ख़लासी और रिहाई के लिये वोह दुआ़ नहीं करता, इन्तिज़ार की साअ़तें शौक़ के साथ गुज़ारता है और वक़्ते मवऊ़द का बेचैनी के साथ मुन्तज़िर रहता है।

शहादत के वाक़िआत

यज़ीद का मुख़्तसर तज़किरा

यज़ीद बिन मुआ़विया अबू ख़ालिद उमवी वोह बद नसीब शख़्स है जिस की पेशानी पर अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बे गुनाह क़त्ल का सियाह दाग़ है और जिस पर हर क़रन में दुन्याए इस्लाम मलामत करती रही है और क़ियामत तक इस का नाम तह़क़ीर के साथ लिया जाएगा।

येह बद बातिन, सियाह दिल, नंगे ख़ानदान सि. 25 हि. में अमीरे मुआविया के घर मैसून बिन्ते बहदल कलबिया के पेट से पैदा हुवा। निहायत मोटा, बद नुमा, कषीरुश्शे'र, बद खुल्क़, तुन्द ख़ू, फ़ासिक़, फ़ाजिर, शराबी, बदकार, ज़ालिम, बे अदब, गुस्ताख़ था। इस की शरारतें और बेहूदगियां ऐसी हैं जिन से बद मुआशों को भी शर्म आए। अब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला इब्नुल ग़सील (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ने यज़ीद पर उस वक़्त खुरूज किया जब हमें अन्देशा हो गया कि उस की बदकारियों के सबब आस्मान से पथ्थर न बरसने लगें। (वाक़िदी)

महरमात के साथ निकाह और सूद वग़ैरा मुन्हिय्यात को इस बे दीन ने अलानिया रवाज दिया। मदीनए तय्यिबा व मक्कए मुकर्रमा की बे हुरमती कराई। ऐसे शख़्स की हुकूमत गुर्ग की चोपानी से ज़ियादा ख़तरनाक थी, अरबाबे फ़िरासत और अस्हाबे अस्रार उस वक़्त से डरते थे जब कि इनाने सल्तनत इस शक़ी के हाथ में आई, सि. 59 हि. में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने दुआ की : اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوْذُ بِکَ مِنْ رَّأْسِ السِّتِّیْنِ وَاِمَارَۃِ الصِّبْیَانِ

"या रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से पनाह मांगता हूं सि. 60 हि. के आग़ाज़ और लड़कों की हुकूमत से"

इस दुआ से मा'लूम होता है कि हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ जो हामिले अस्रार थे उन्हें मा'लूम था कि सि. 60 हि. का आग़ाज लड़कों की हुकूमत और फ़ितनों का वक़्त है। उन की येह दुआ क़बूल हुई और उन्हों ने सि. 59 हि. में ब मुक़ाम मदीनए तय्यिबा रिहलत फ़रमाई।"

रूयानी ने अपनी मुस्नद में हज़रते अबू दरदा सहाबी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से एक हदीष रिवायत की है जिस का मज़मून येह है कि मैं ने हुज़ूरे अक़दस, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मेरी सुन्नत का पहला बदलने वाला बनी उमय्या का एक शख़्स होगा जिस का नाम यज़ीद होगा।"

अबू या'ला ने अपनी मुस्नद में ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُ से रिवायत की, कि हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मेरी उम्मत में अ़दलो इन्साफ़ क़ाइम रहेगा यहां तक कि पहला रख़ना अन्दाज़ व बानिये सितम बनी उमय्या का एक शख़्स होगा जिस का नाम "यज़ीद" होगा।" येह ह़दीष ज़ईफ़ है।(1)

अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की वफ़ात और यज़ीद की सल्त़नत

अमीरे मुआ़विया ने रजब सि. 60 हि. में बमुक़ामे दिमश्क़ लक़्वा में मुब्तला हो कर वफ़ात पाई। आप के पास हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात में से इज़ार शरीफ़, रिदाए अक़्दस, क़मीस मुबारक, मूए शरीफ़ और तराशहाए नाख़ुन हुमायूं थे, आप ने वसिय्यत की थी कि मुझे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इज़ार शरीफ़ व रिदाए मुबारक व क़मीसे अक़्दस में कफ़न दिया जाए और मेरे इन आ'ज़ा पर जिन से सजदा किया जाता है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक और तराशहाए नाख़ुने अक़्दस रख दिये जाएं और मुझे اَرۡحَمُ الرَّاحِمِیۡن के रह़्म पर छोड़ दिया जाए।

कोरे बात़िन यज़ीद ने देखा था कि उस के बाप अमीरे मुआ़विया ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात और बदने अक़्दस से छू जाने वाले कपड़ों को जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखा था और दमे आख़िर तमाम ज़र व माल, षरवत व हुकूमत सब से ज़ियादा वोही चीज़ प्यारी थी और इसी को साथ ले जाने की तमन्ना ह़ज़रते अमीर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के दिल में थी। इस की बरकत से उन्हें उम्मीद थी कि इस मल्बूसे पाक में बूए मह़बूब है। येह मक़ामे ग़ुर्बत में प्यारा रफ़ीक़ और

---

(1)......تاريخ الخلفاء، باب يزيد بن معاوية...الخ، ص ١٦٤
وسير اعلام النبلاء، ٣٧٥۔يزيد بن معاوية...الخ، ج٥، ص٨٣ ملخصاً
والصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، الخاتمة فى بيان اعتقاد اهل السنة...الخ،ص ٢٢١ ملتقطاً

बेहतरीन मोनिस होगा और अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिबास और तबर्रुकात के सदके़ में मुझ पर रह़्म फ़रमाएगा । इस से वोह समझ सकता था कि जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बदने पाक से छू जाना एक कपड़े को ऐसा बा बरकत बना देता है तो ह़सनैने करीमैन और आले पाक عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان जो बदने अक़्दस का जुज़्व हैं इन का क्या मर्तबा होगा और इन का क्या एह़तिराम लाज़िम है । मगर बद नसीबी और शक़ावत का क्या इलाज ।

अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की वफ़ात के बा'द यज़ीद तख़्ते सल्त़नत पर बैठा और उस ने अपनी बैअ़त लेने के लिये अत़राफ़ व मुमालिक सल्त़नत में मक्तूब रवाना किये, मदीनए त़य्यिबा का आ़मिल जब यज़ीद की बैअ़त लेने के लिये ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप ने उस के फ़िस्क़ो ज़ुल्म की बिना पर उस को ना अहल क़रार दिया और बैअ़त से इन्कार फ़रमाया इसी त़रह़ ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने भी ।[1]

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जानते थे कि बैअ़त का इन्कार यज़ीद के इश्तिआ़ल का बाइ़ष होगा और ना बकार जान का दुश्मन और ख़ून का प्यासा हो जाएगा लेकिन इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दियानत व तक़्वा ने इजाज़त न दी कि अपनी जान की ख़ात़िर ना अहल के हाथ पर बैअ़त कर लें और मुसलमानों की तबाही और शरअ़ व अह़काम की बे हुरमती और दीन की मज़र्रत की परवाह न करें और येह इमाम जैसे जलीलुश्शान फ़रज़न्दे रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) से किस त़रह़ मुमकिन था ? अगर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उस वक़्त यज़ीद की बैअ़त कर लेते तो यज़ीद आप की बहुत क़द्रो मन्ज़िलत करता और आप की आ़फ़िय्यत व राह़त में कोई फ़र्क़ न आता बल्कि बहुत सी दौलते दुन्या

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف المیم، فصل فی الصحابة، ص٦١٧
وتاریخ الخلفاء، باب یزید بن معاویة...الخ، ص١٦٤

आप के पास जम्अ़ हो जाती लेकिन इस्लाम का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता और दीन में ऐसा फ़साद बरपा हो जाता जिस का दूर करना बा'द को नामुमकिन होता। यज़ीद की हर बदकारी के जवाज़ के लिये इमाम की बैअ़त सनद होती और शरीअ़ते इस्लामिया व मिल्लते ह़नफ़िया का नक़्शा मिट जाता। शीओ़ को भी आंखें खोल कर देख लेना चाहिये कि इमाम ने अपनी जान को ख़त़रे में डाल दिया और तक़य्या का तसव्वुर भी ख़ात़िरे मुबारक पर न गुज़रा, अगर तक़य्या जाइज़ होता तो इस के लिये इस से ज़ियादा ज़रूरत का और कौन वक़्त हो सकता था ? ह़ज़रते इमाम व इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से बैअ़त की दरख़्वास्त इसी लिये पहले की गई थी कि तमाम अहले मदीना इन का इत्तिबाअ़ करेंगे, अगर इन ह़ज़रात ने बैअ़त कर ली तो फिर किसी को तअम्मुल न होगा लेकिन इन ह़ज़रात के इन्कार से वोह मन्सूबा ख़ाक में मिल गया और यज़ीदियों में उसी वक़्त से आतशे इनाद भड़क उठी और ब ज़रूरत इन ह़ज़रात को उसी शब मदीना से मक्कए मुकर्रमा मुन्तक़िल होना पड़ा। येह वाक़िआ़ चौथी शा'बान सि. 60 हि. का है।

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मदीनए त़य्यिबा से रिह़लत

मदीने से ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिह़लत का दिन अहले मदीना और खुद ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये कैसे रंजो अन्दोह का दिन था। अत़राफ़े आ़लम से तो मुसलमान वत़न तर्क कर के अइ़ज़्ज़ा व अह़बाब को छोड़ कर मदीना त़य्यिबा ह़ाज़िर होने की तमन्नाएं करें, दरबारे रिसालत की ह़ाज़िरी का शौक़ दुश्वार गुज़ार मन्ज़िलें और बह़्रो बर का त़वील और ख़ौफ़नाक सफ़र इख़्तियार करने के लिये बेक़रार बना दे, एक एक लम्ह़े की जुदाई इन्हें शाक़ हो, और फ़रज़न्दे रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) जवारे रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) से रिह़लत करने पर मजबूर हो। उस वक़्त का तसव्वुर दिल को पाश पाश कर देता है जब ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बइरादए रुख़्सत आस्तानए क़ुदसिय्या पर ह़ाज़िर हुए होंगे और दीदए ख़ूं नबार ने अश्के

ग़म की बारिश की होगी दिले दर्द मन्दे ग़मे महजूरी से घाइल होगा, जद्दे करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रौज़ए ताहिरा से जुदाई का सदमा हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दिल पर रन्जो ग़म के पहाड़ तोड़ रहा होगा, अहले मदीना की मुसीबत का भी क्या अन्दाज़ा हो सकता है। दीदारे ह़बीब के फ़िदाई इस फ़रज़न्द की ज़ियारत से अपने क़ल्बे मजरूह़ को तस्कीन देते थे। इन का दीदार इन के दिल का क़रार था, आह ! आज येह क़रारे दिल मदीनए त़य्यिबा से रुख़्सत हो रहा है। इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मदीनए त़य्यिबा से बहज़ार ग़म व अन्दोह बादिले नाशाद रिह़लत फ़रमा कर मक्कए मुकर्रमा इक़ामत फ़रमाई।

इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जनाब में कूफ़ियों की दरख़्वास्तें

यज़ीदियों की कोशिशों से अहले शाम से जहां यज़ीद की तख़्तगाह थी यज़ीद की राए मिल सकी और वहां के बाशिन्दों ने उस की बैअ़त की। अहले कूफ़ा अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़माने ही में हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में दरख़्वास्तें भेज रहे थे, तशरीफ़ आवरी की इल्तिजाएं कर रहे थे लेकिन इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने साफ़ इन्कार कर दिया था। अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात और यज़ीद की तख़्त नशीनी के बा'द अहले इराक़ की जमाअ़तों ने मुत्तफ़िक़ हो कर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में दरख़्वास्तें भेजीं और इन में अपनी नियाज़ मन्दी व जज़्बाते अ़क़ीदत व इख़्लास का इज़हार किया और हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर अपने जानो माल फ़िदा करने की तमन्ना ज़ाहिर की। इस त़रह़ के इल्तिजानामों और दरख़्वास्तों का सिलसिला बंध गया और तमाम जमाअ़तों और फ़िर्क़ों की त़रफ़ से डेढ़ सो के क़रीब अ़र्ज़ियां हज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में पहुंचीं, कहां तक इग़्माज़ किया जाता और कब तक हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अख़्लाक़ जवाबे ख़ुश्क की इजाज़त देते ? ना चार आप ने अपने चचाज़ाद भाई हज़रते मुस्लिम बिन अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रवानगी तजवीज़ फ़रमाई।

अगर्चे इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत की ख़बर मश्हूर थी और कूफ़ियों की बे वफ़ाई का पहले भी तजरिबा हो चुका था मगर जब यज़ीद बादशाह बन गया और उस की हुकूमत व सल्तनत दीन के लिये ख़त़रा थी और इस की वजह से उस की बैअ़त ना रवा थी और वोह त़रह़ त़रह़ की तदबीरों और ह़िलों से चाहता था कि लोग उस की बैअ़त करें। इन ह़ालात में कूफ़ियों का बपासे मिल्लत यज़ीद की बैअ़त से दस्तकशी करना और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से त़ालिबे बैअ़त होना इमाम पर लाज़िम करता था कि इन की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाएं जब एक क़ौम ज़ालिम व फ़ासिक़ की बैअ़त पर राज़ी न हो और साह़िबे इस्तिह़क़ाक़ अहल से दरख़्वास्ते बैअ़त करे इस पर अगर वोह इन की इस्तिदआ़ क़बूल न करे तो इस के येह मा'ना होते हैं कि वोह इस क़ौम को इस जाबिर ही के ह़वाले करना चाहता है। इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अगर उस वक़्त कूफ़ियों की दरख़्वास्त क़बूल न फ़रमाते तो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में कूफ़ियों के इस मुत़ालबे का इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास क्या जवाब होता कि हम हर चन्द दरपे हुए मगर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बैअ़त के लिये राज़ी न हुए। बदीं वजह हमें यज़ीद के ज़ुल्मो तशद्दुद से मजबूर हो कर उस की बैअ़त करना पड़ी अगर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हाथ बढ़ाते तो हम इन पर जानें फ़िदा करने के लिये ह़ाज़िर थे। येह मस्अला ऐसा दरपेश आया जिस का ह़ल बजुज़ इस के और कुछ न था कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन की दा'वत पर लबैक फ़रमाएं।

अगर्चे अकाबिर सह़ाबए किराम ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास व ह़ज़रते इब्ने उ़मर व ह़ज़रते जाबिर व ह़ज़रते अबू सईद व ह़ज़रते अबू वाक़िद लैषी वग़ैरहुम (عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان) ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इस राय से मुत्तफ़िक़ न थे और इन्हें कूफ़ियों के अ़हद व मवाषीक़ का ए'तिबार न था, इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मह़ब्बत और शहादते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शोहरत इन सब के दिलो में इख़्तिलाज पैदा कर रही थी, गोकि येह यक़ीन करने की भी कोई वजह न थी कि शहादत का येही वक़्त है और

इसी सफ़र में येह मरहला दरपेश होगा लेकिन अन्देशा मानेअ़ था। हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने मस्अले की येह सूरत दरपेश थी कि इस इस्तिदआ़ को रोकने के लिये उ़ज़्रे शरई क्या है। इधर ऐसे जलीलुल क़द्र सहाबा عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के शदीद इस्रार का लिहाज़, उधर अहले कूफ़ा की इस्तिदआ़ रद न फ़रमाने के लिये कोई शरई उ़ज़्र न होना हज़रते इमाम के लिये निहायत पेचीदा मस्अला था जिस का ह़ल ब जुज़ इस के कुछ नज़र न आया कि पहले ह़ज़रते इमाम मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भेजा जाए अगर कूफ़ियों ने बद अ़हदी व बे वफ़ाई की तो उ़ज़्रे शरई मिल जाएगा और अगर वोह अपने अ़हद पर क़ाइम रहे तो सहाबा को तसल्ली दी जा सकेगी।[1]

कूफ़ा को ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रवानगी

इस बिना पर आप ने ह़ज़रते मुस्लिम बिन अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कूफ़ा रवाना फ़रमाया और अहले कूफ़ा को तह़रीर फ़रमाया कि तुम्हारी इस्तिदआ़ पर हम ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रवाना करते हैं इन की नुस्रत व ह़िमायत तुम पर लाज़िम है। ह़ज़रते मुस्लिम के दो फ़रज़न्द मुह़म्मद और इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا जो अपने बाप के बहुत प्यारे बेटे थे इस सफ़र में अपने पिदरे मुशफ़िक़ के हमराह हुए। ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कूफ़ा पहुंच कर मुख़्तार बिन अबी उ़बैद के मकान पर क़ियाम फ़रमाया आप की तशरीफ़ आवरी की ख़बर सुन कर जूक़ जूक़ मख़्लूक़ आप की ज़ियारत को आई और बारह हज़ार से ज़ियादा ता'दाद ने आप के दस्ते मुबारक पर ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बैअ़त की।

---

1 ......تاریخ الخلفاء،باب یزید بن معاویۃ ابو خالد الاموی، ص ١٦٤۔١٦٥ ملتقطاً
والکامل فی التاریخ ، سنۃ ستین، خروج الحسین...الخ، دعوۃ اھل الکوفۃ ...الخ،
ج٣، ص ٣٨٥،٣٨٦ ملتقطاً
والبدایۃ والنھایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، صفۃ مخرج الحسین الی العراق، ج٥،
ص ٦٦٧ ملتقطاً وملخصاً

हज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अहले इराक़ की गिरवीदगी व अ़क़ीदत देख कर हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की जनाब में अ़रीज़ा लिखा जिस में यहां के ह़ालात की इत्तिलाअ़ दी और इलतिमास की, कि ज़रूरत है कि हज़रत जल्द तशरीफ़ लाएं ताकि बन्दगाने ख़ुदा, नापाक के शर से मह़फ़ूज़ रहें और दीने ह़क़ की ताईद हो, मुसलमान इमामे ह़क़ की बैअ़त से मुशर्रफ़ व फैज़याब हो सकें। अहले कूफ़ा का येह जोश देख कर हज़रते नो'मान बिन बशीर सहाबी ने जो उस ज़माने में हुकूमते शाम की जानिब से कूफ़ा के वाली (गवर्नर) थे। अहले कूफ़ा को मुत्तलअ़ किया कि येह बैअ़त यज़ीद की मरज़ी के ख़िलाफ़ है और वोह इस पर बहुत भड़केगा लेकिन इतनी इत्तिलाअ़ दे कर ज़ाबिते की कारवाई पूरी कर के हज़रते नो'मान बिन बशीर ख़ामोश हो बैठे और इस मुआ़मले में किसी क़िस्म की दस्त अन्दाज़ी न की।(1)

मुस्लिम बिन यज़ीद हज़्रमी और अ़म्मारा बिन वलीद बिन उ़क़्बा ने यज़ीद को इत्तिलाअ़ दी कि हज़रते मुस्लिम बिन अ़क़ील رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तशरीफ़ लाए हैं और अहले कूफ़ा में इन की महब्बत व अ़क़ीदत का जोश दम बदम बढ़ रहा है। हज़ारहा आदमी इन के हाथ पर इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बैअ़त कर चुके हैं और नो'मान बिन बशीर ने अब तक कोई कारवाई उन के ख़िलाफ़ नहीं की न इनसिदादी तदाबीर अ़मल में लाए।

यज़ीद ने येह इत्तिलाअ़ पाते ही नो'मान बिन बशीर को मा'ज़ूल किया और उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद को जो उस की त़रफ़ से बसरा का वाली था उन का क़ाइम मक़ाम किया। उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद बहुत मक्कार व कय्याद था, वोह बसरा से रवाना हुवा और उस ने अपनी

---

1 ......الكامل فى التاريخ، سنة ستين، خروج الحسين...الخ، دعوة اهل الكوفة...الخ، ج٣، ص٣٨٥، ٣٨٦ ملخصاً

والبداية والنهاية ، سنة ستين من الهجرة النبوية ، قصة الحسين بن علي...الخ، ج٥، ص٦٥٧ ملخصاً

फौज को क़ादिसिय्या में छोड़ा और खुद हिजाज़ियों का लिबास पहन कर ऊंट पर सुवार हुवा और चन्द आदमी हमराह ले कर शब की तारीकी में मग़रिब व इशा के दरमियान उस राह से कूफ़ा में दाख़िल हुवा जिस से हिजाज़ी क़ाफ़िले आया करते थे। इस मक्कारी से उस का मत़लब येह था कि इस वक़्त अहले कूफ़ा में बहुत जोश है, ऐसे त़ौर पर दाख़िल होना चाहिये कि वोह इब्ने ज़ियाद को न पहचानें और येह समझें कि हज़रते इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ ले आए ताकि वोह बे ख़त़रा व अन्देशा अम्न व आ़फ़िय्यत के साथ कूफ़ा में दाख़िल हो जाए। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा, अहले कूफ़ा जिन को हर लम्हा हज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तशरीफ़ आवरी का इन्तिज़ार था, उन्हों ने धोका खाया और शब की तारीकी में हिजाज़ी लिबास और हिजाज़ी राह से आता देख कर समझे कि हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ ले आए। ना'रहाए मसर्रत बुलन्द किये, गिर्दो पेश मरह़बा कहते चले مَرْحَبًا بِكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ और قَدِمْتَ خَيْرَ مَقْدَمٍ का शोर मचाया। येह मर्दूद दिल में तो जलता रहा और इस ने अन्दाज़ा कर लिया कि कूफ़ियों को हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तशरीफ़ आवरी का इन्तिज़ार है और इन के दिल उन की त़रफ़ माइल हैं मगर उस वक़्त की मस्लह़त से ख़ामोश रहा ताकि इन पर उस का मक्र खुल न जाए यहां तक कि दारुल अम्मारा (गवर्नर हाऊस) में दाख़िल हो गया। उस वक़्त कूफ़ी येह समझे कि येह हज़रत न थे बल्कि इब्ने ज़ियाद इस फ़रैब कारी के साथ आया और इन्हें ह़सरत व मायूसी हुई। रात गुज़ार कर सुब्ह़ को इब्ने ज़ियाद ने अहले कूफ़ा को जम्अ़ किया और हुकूमत का परवाना पढ़ कर इन्हें सुनाया और यज़ीद की मुख़ालिफ़त से डराया धमकाया, त़रह़ त़रह़ के हि़लों से हज़रते मुस्लिम की जमाअ़त को मुन्तशिर कर दिया, हज़रते मुस्लिम ने हानी बिन उ़रवा के मकान में इक़ामत फ़रमाई। इब्ने ज़ियाद ने मुह़म्मद बिन

अशअ़ष को एक दस्ता फ़ौज के साथ हानी के मकान पर भेज कर उस को गिरिफ़्तार करा मंगाया और क़ैद कर लिया, कूफ़ा के तमाम रऊसा व अ़माइद को भी क़लए़ में नज़्र बन्द कर लिया।(1)

ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह ख़बर पा कर बर आमद हुए और आप ने अपने मुतवस्सिलीन को निदा की, जूक़ जूक़ आदमी आने शुरूअ़ हुवे और चालीस हज़ार की जमइ़यत ने आप के साथ क़िसरे शाही का इह़ात़ा कर लिया, सूरत बन आई थी ह़मला करने की देर थी। अगर ह़ज़रते मुस्लिम ह़म्ला करने का हुक्म देते तो उसी वक़्त क़ल्अ़ा फ़त्ह़ पाता और इब्ने ज़ियाद और उस के हमराही ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ में गिरिफ़्तार होते और येही लश्कर सैलाब की त़रह़ उमड कर शामियों को ताख़्त व ताराज कर डालता और यज़ीद को जान बचाने के लिये कोई राह न मिलती। नक़्शा तो येही जमा था मगर **कारबदस्त कार किनान क़ुदरस्त**, बन्दों का सोचा क्या होता है। ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़लए़ का इह़ात़ा तो कर लिया और बा वुजूद येह कि कूफ़ियों की बदअ़हदी और इब्ने ज़ियाद की फ़रैबकारी और यज़ीद की अ़दावत पूरे त़ौर पर षाबित हो चुकी थी। फिर भी आप ने अपने लश्कर को ह़म्ले का हुक्म न दिया और एक बादशाह दाद गुस्तर के नाइब की ह़ैषिय्यत से आप ने इन्तिज़ार फ़रमाया कि पहले गुफ़्त्गू से क़त़ए़ हुज्जत कर लिया जाए और सुल्ह़ की सूरत पैदा हो सके तो मुसलमानों में ख़ूं रैज़ी न होने दी जाए। आप अपने इस पाक इरादे से इन्तिज़ार में रहे और अपनी एह़तियात़ को हाथ से जाने न दिया, दुश्मन ने इस वक़्फ़े से फ़ाइदा उठाया और कूफ़ा के रऊसा व अ़माइद जिन को इब्ने ज़ियाद ने पहले से क़ल्ए़ में

---

1 ......الکامل فی التاریخ، سنۃ ستین، خروج الحسین...الخ، دعوۃ اھل الکوفۃ...الخ، ج۳، ص۳۸۷۔۳۸۸ملتقطاً

والبدایۃ والنہایۃ ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ ، قصۃ الحسین بن علی...الخ ، ج۵، ص٦٥٦۔٦٥٨ملتقطاً

وتاریخ الطبری، سنۃ ستین، باب مقتل الحسین بن علی...الخ، ج٤، ص٦٦

बन्द कर रखा था इन्हें मजबूर किया कि वोह अपने रिश्तेदारों और ज़ेरे अषर लोगों को मजबूर कर के ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जमाअ़त से अ़लाह़िदा कर दें।

येह लोग इब्ने ज़ियाद के हाथ में क़ैद थे और जानते थे कि अगर इब्ने ज़ियाद को शिकस्त भी हुई तो वोह क़ल्ए़ फ़त्ह़ होने तक इन का ख़ातिमा कर देगा। इस ख़ौफ़ से वोह घबरा कर उठे और उन्हों ने दीवारे क़ल्ए़ पर चढ़ कर अपने मुतअ़ल्लिक़ीन व मुतवस्सिलीन से गुफ़्तगू की और उन्हें ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रफ़ाक़त छोड़ देने पर इन्तिहा दर्जे का ज़ोर दिया और बताया कि इलावा इस बात के कि हुकूमत तुम्हारी दुश्मन हो जाएगी यज़ीदे नापाक त़ीनत तुम्हारे बच्चे बच्चे को क़त्ल कर डालेगा, तुम्हारे माल लुटवा देगा, तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त़ हो जाएंगे। येह और मुसीबत है कि अगर तुम इमाम मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ रहे तो हम जो इब्ने ज़ियाद के हाथ में क़ैद हैं क़िल्ए़ के अन्दर मारे जाएंगे, अपने अन्जाम पर नज़र डालो, हमारे ह़ाल पर रह़्म करो, अपने घरों पर चले जाओ। येह ह़ीला कामयाब हुवा और ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का लश्कर मुन्तशिर होने लगा यहां तक कि ता बवक़्ते शाम ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मस्जिदे कूफ़ा में जिस वक़्त मग़रिब की नमाज़ शुरूअ़ की तो आप के साथ पांच सो आदमी थे और जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आप के साथ एक भी न था। तमन्नाओं के इज़्हार और इल्तिजाओं के तूमार से जिस अ़ज़ीज़ मेहमान को बुलाया था उस के साथ येह वफ़ा है कि वोह तन्हा हैं और इन की रफ़ाक़त के लिये कोई एक भी मौजूद नहीं, कूफ़ा वालों ने ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को छोड़ने से पहले ग़ैरत व ह़मिय्यत से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ किया और उन्हें ज़रा परवाह न हुई कि क़ियामत तक तमाम आ़लम में उन की बे हिम्मती का शोहरा रहेगा और इस बुज़दिलाना बे मुरुव्वती और नामर्दी से वोह रुसवाए आ़लम होंगे। ह़ज़रते मुस्लिम इस ग़ुर्बत व मुसाफ़रत में तन्हा रह गए। किधर जाएं, कहां क़ियाम करें,

हैरत है कूफ़ा के तमाम मेहमान खा़नों के दरवाजे़ मुक़फ़्फ़ल थे जहां से ऐसे मोह्तरम मेहमानों को मदऊ़ करने के लिये रस्लो रसाईल का तांता बांध दिया गया था, नादान बच्चे साथ हैं, कहां उन्हें लिटाएं, कहां सुलाएं, कूफ़ा के वसीअ़ खि़त्ते में दो चार गज़ ज़मीन ह़ज़रते मुस्लिम के शब गुज़ारने के लिये नज़र नहीं आती । उस वक़्त ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की याद आती है और दिल तड़पा देती है, वोह सोचते हैं कि मैं ने इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की जनाब में ख़त लिखा, तशरीफ़ आवरी की इलतिजा की है और इस बद अ़हद क़ौम के इख़्लास व अ़क़ीदत का एक दिलकश नक़्शा इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के हुज़ूर पेश किया है और तशरीफ़ आवरी पर ज़ोर दिया है। यक़ीनन ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मेरी इल्तिजा रद्द न फ़रमाएंगे और यहां के ह़ालात से मुत़मइन हो कर मअ़ अहलो इयाल चल पड़े होंगे यहां उन्हें क्या मसाइब पहुंचेंगे और चमने ज़हरा के जन्नती फूलों को इस बे मेहरी की त़पिश कैसे गज़न्द पहुंचाएगी । येह ग़म अलग दिल को घाइल कर रहा था और अपनी तह़रीर पर शर्मिन्दगी व इनफ़िआ़ल और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लिये ख़त़रात अ़लाहि़दा बे चैन कर रहे थे और मौजूदा परेशानी जुदा दामनगीर थी ।

इस ह़ालत में ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को प्यास मा'लूम हुई, एक घर सामने नज़र पड़ा जहां तू़आ नामी एक औ़रत मौजूद थी उस से आप ने पानी मांगा, उस ने आप को पहचान कर पानी दिया और अपनी सआ़दत समझ कर आप को अपने मकान में फ़रोकश किया । उस औ़रत का बेटा मुह़म्मद इब्ने अशअ़ष का गुरगा था, उस ने फ़ौरन ही उस को ख़बर दी और उस ने इब्ने ज़ियाद को इस पर मुत्त़लअ़ किया । उ़बैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद ने अ़म्र बिन ह़रीष (कोतवाले कूफ़ा) और मुह़म्मद बिन अशअ़ष को भेजा इन दोनों ने एक जमाअ़त साथ ले कर तू़आ के घर का इह़ात़ा किया और चाहा कि ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को गिरिफ़्तार कर लें । ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपनी तल्वार ले कर

निकले और ब नाचारी आप ने उन ज़ालिमों से मुक़ाबला शुरूअ़ किया। उन्हों ने देखा कि ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस जमाअ़त पर इस त़रह़ टूट पड़े जैसे शेरे बबर गलाए गोसपन्द पर ह़म्ला आवर हो। आप के शेराना ह़म्लों से दिल आवरों ने दिल छोड़ दिये और बहुत आदमी ज़ख़्मी हो गए, बा'ज़ मारे गए। मा'लूम हुवा कि बनी हाशिम के इस एक जवान से नामर्दाने कूफ़ा की येह जमाअ़त नबर्द आज़्मा नहीं हो सकती। अब तजवीज़ की, कि कोई चाल चलनी चाहिये और किसी फ़रैब से ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर क़ाबू पाने की कोशिश की जाए। येह सोच कर अम्नो सुल्ह़ का ए'लान कर दिया और ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ किया कि हमारे आप के दरमियान जंग की ज़रूरत नहीं है न हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से लड़ना चाहते हैं मुद्दआ़ सिर्फ़ इस क़दर है कि आप इब्ने ज़ियाद के पास तशरीफ़ ले चलें और उस से गुफ़्तगू कर के मुआ़मला तै कर लें। ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मेरा ख़ुद क़स्दे जंग नहीं और जिस वक़्त मेरे साथ चालीस हज़ार का लश्कर था उस वक़्त भी मैं ने जंग नहीं की और मैं येही इन्तिज़ार करता रहा कि इब्ने ज़ियाद गुफ़्तगू कर के कोई शक्ले मुसालह़त पैदा करे तो ख़ूं रैज़ी न हो।(1)

चुनान्चे येह लोग ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मअ़ उन के दोनों साहिब ज़ादों के उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास ले कर रवाना हुए। उस बद बख़्त ने पहले ही से दरवाज़े के दोनों पहलूओं में अन्दर की जानिब तेग़ ज़न छुपा कर खड़े कर दिये थे और उन्हें हुक्म दे दिया था

(1)......الکامل فی التاریخ، سنۃ ستین، خروج الحسین...الخ، دعوۃ اھل الکوفۃ ...الخ
ومقتل مسلم بن عقیل ، ج٣، ص٣٩٣_٣٩٥ملتقطاً
والبدایۃ والنھایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، قصۃ الحسین بن علی...الخ،ج٥، ص٦٦٠، ٦٦١ملتقطاً

कि ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दरवाज़े में दाख़िल हों तो एक दम दोनों त़रफ़ से इन पर वार किया जाए। ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस की क्या ख़बर थी और आप इस मक्कारी और कय्यादी से क्या वाक़िफ़ थे, आप आयए करीमा (1) رَبَّنَا افۡتَحۡ بَیۡنَنَا وَ بَیۡنَ قَوۡمِنَا بِالۡحَقِّ पढ़ते हुए दरवाज़े में दाख़िल हुए। दाख़िल होना था कि अश्क़िया ने दोनों त़रफ़ से तल्वारों के वार किये और बनी हाशिम का मज़्लूम मुसाफ़िर आ'दाए दीन की बे रह़्मी से शहीद हुवा। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن

दोनों साह़िबज़ादे आप के साथ थे। उन्हों ने इस बे कसी की ह़ालत में अपने शफ़ीक़ वालिद का सर उन के मुबारक तन से जुदा होते देखा। छोटे छोटे बच्चों के दिल ग़म से फट गए और इस सदमे में वोह बैद की त़रह़ लरज़ने और कांपने लगे। एक भाई दूसरे भाई को देखता था और उन की सुर्मगीं आंखों से ख़ूनी अश्क जारी थे लेकिन इस मा'रकए सितम में कोई इन नादानों पर रह़्म करने वाला न था, सितमगारों ने इन नौनिहालों को भी तेग़े सितम से शहीद किया और हानी को क़त्ल कर के सुली चढ़ाया। इन तमाम शहीदों के सर नेज़ों पर चढ़ा कर कूफ़ा के गली कूचों में फिराए गए और बे ह़याई के साथ कूफ़ियों ने अपनी संग दिली और मेहमान कुशी का अ़मली त़ौर पर ए'लान किया।(2)

1....***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ रब्ब हमारे हम में और हमारी क़ौम में ह़क़ फ़ैसला कर।* (پ۹،الاعراف:۸۹)

2......تاریخ الطبری،سنة ستین،باب مقتل الحسین بن علی...الخ،ج٤،ص٦٨
والمنتظم لابن جوزی، سنة ستین من الھجرة، باب ذکر بیعة یزید بن معاویة...الخ، ج٥،ص٣٢٦
والکامل فی التاریخ، سنة ستین،خروج الحسین...الخ، مقتل مسلم بن عقیل،ج٣، ص٣٩٨ملتقطاً
والبدایة والنھایة، سنة ستین من الھجرة النبویة، صفة مخرج الحسین الی العراق،ج٥، ص٦٦٥

येह वाक़िआ़ 3 ज़िल हि़ज्जा सि. 60 हि. का है। इसी रोज़ मक्कए मुकर्रमा से ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ कूफ़ा की त़रफ़ रवाना हुए।(1)

(1).....आप के हमराह उस वक़्त मस्तूरए ज़ैल ह़ज़रात थे। तीन फ़रज़न्द ह़ज़रते इमामे अ़ली औसत़ जिन को इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं जो ह़ज़रते शहर बानू बिन्ते यज़्दजर्द बिन शहरयार बिन खु़सरू परवैज़ बिन हरमज़ बिन नौशीरवां के बत़न से हैं इन की उ़म्र उस वक़्त बाईस साल की थी और वोह मरीज़ थे। ह़ज़रते इमाम के दूसरे साहि़बज़ादे ह़ज़रते अ़ली अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो या'ला बिन्ते अबी मुर्रा बिन उ़रवा बिन मसऊ़द षक़फ़ी के बत़न से हैं जिन की उ़म्र अठ्ठारह साल की थी (येह शरीके जंग हो कर शहीद हुए) तीसरे शीरख़्वार जिन्हें अ़ली असग़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं जिन का नाम अ़ब्दुल्लाह और जा'फ़र भी बताया गया है। इस नाम में इख़्तिलाफ़ है आप की वालिदा क़बीलए बनी क़ज़ाआ़ से हैं और एक साहि़बज़ादी जिन का नाम सकीना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا है और जिन की निस्बत ह़ज़रते क़ासिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ हुई थी और उस वक़्त आप की उ़म्र सात साल की थी। करबला में इन का निकाह़ होने की जो रिवायत मश्हूर है वोह ग़लत़ है इस की कुछ अस्ल नहीं और कुछ ऐसे कम अ़क़्ल लोगों ने येह रिवायत वज़्अ़ की है जिन्हें इतनी भी तमीज़ न थी कि वोह येह समझ सकते कि अहले बैते रिसालत के लिये वोह वक़्त तवज्जोहे इलल्लाह और शौक़े शहादत और इतमामे हुज्जत का था। उस वक़्त शादी-निकाह़ की त़रफ़ इल्तिफ़ात होना भी इन ह़ालात के मनाफ़ी है। ह़ज़रते सकीना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात भी राहे शाम में मश्हूर की जाती है येह भी ग़लत़ है बल्कि वोह वाक़िअ़ए करबला के बा'द अ़र्से तक ह़यात रहीं और इन का निकाह़ ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ हुवा। ह़ज़रते सकीना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदा उमराउल क़ैस इब्ने अ़दी की दुख़्तर क़बीलए बनी कल्ब से हैं। ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपनी अज़्वाज में सब से ज़ियादा इन के साथ मह़ब्बत थी और इन का बहुत ज़ियादा इकराम व एह़तिराम फ़रमाते थे। ह़ज़रते इमाम का एक शे'र है।

لَعَمْرِیْ اِنَّنِیْ لَاُحِبُّ اَرْضًا   تَحُلُّ بِھَا سَکِیْنَۃُ وَالرَّبَابُ

इस से मा'लूम होता है कि इमामे आ़ली मक़ाम को ह़ज़रते सकीना और इन की वालिदा माजिदा से किस क़दर मह़ब्बत थी। ह़ज़रते इमाम की बड़ी साहि़बज़ादी ह़ज़रते फ़ात़िमा सुग़रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो ह़ज़रते इस्ह़ाक़ बिन्ते ह़ज़रते त़लह़ा के बत़न से हैं अपने शोहर ह़ज़रते ह़सन बिन मुषना बिन ह़ज़रते इमाम ह़सन इब्ने ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) के साथ मदीनए त़य्यिबा में रहीं करबला तशरीफ़ न लाईं। इमाम के अज़्वाज में ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ ह़ज़रते शहर बानू और ह़ज़रते अ़ली असग़र की वालिदा थीं। ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चार नौजवान फ़रज़न्द ह़ज़रते क़ासिम, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते उ़मर, ह़ज़रते अबू बक्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हमराह थे और करबला में शहीद हुए। ह़ज़रते मौला अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के पांच फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्बास इब्ने अ़ली, ह़ज़रते उ़षमान इब्ने अ़ली, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ली, ह़ज़रते मुहम्मद इब्ने अ़ली, ह़ज़रते जा'फ़र इब्ने अ़ली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم).................

हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कूफ़ा को रवानगी

हज़रते मुस्लिम बिन अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़त़ आने के बा'द हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कूफ़ियों की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाने में कोई वजहे तअम्मुल व जाए उ़ज़्र बाक़ी नहीं रहती थी, ज़ाहिरी शक्ल तो येह थी और ह़क़ीक़त में क़ज़ा व क़द्र के फ़रमान नाफ़िज़ हो चुके थे शहादत का वक़्त नज़्दीक आ चुका था, जज़्बए शौक़ दिल को खींच रहा था, फ़िदाकारी के वलवलों ने दिल को बेताब कर दिया था, ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सफ़रे इ़राक़ का इरादा फ़रमाया और अस्बाबे सफ़र दुरुस्त होने लगा, नियाज़ मन्दान सादिक़ुल अ़क़ीदत को इत्तिलाअ़ हुई। अगर्चे ज़ाहिर में कोई मुख़्विफ़ सूरत पेशे नज़र न थी और ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़त़ से कूफ़ियों की अ़क़ीदत व इरादत और हज़ारहा आदमियों के ह़लक़ए बैअ़त में दाख़िल होने की इत्तिलाअ़ मिल चुकी, ग़दर और जंग का बज़ाहिर कोई क़रीना न था लेकिन सह़ाबा के दिल उस वक़्त ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सफ़र को किसी त़रह़ गवारा न करते थे और वोह ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

...........ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हमराह थे। सब ने शहादत पाई। ह़ज़रते अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़रज़न्दों में ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तो ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के करबला पहुंचने से पहले ही मअ़ अपने दो साहि़बज़ादों मुह़म्मद व इब्राहीम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के शहीद हो चुके और तीन फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान व ह़ज़रते जा'फ़र बरादराने ह़ज़रते मुस्लिम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हमराह करबला ह़ाज़िर हो कर शहीद हुए।

ह़ज़रते जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दो पोते ह़ज़रते मुह़म्मद और ह़ज़रते औ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हमराह ह़ाज़िर हो कर शहीद हुए इन के वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र है, और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ीक़ी भांजे हैं। इन की वालिदा ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़क़ीक़ी बहन हैं। साहि़बज़ादगाने अहले बैत में से सतरह ह़ज़रात ह़ज़रत के हमराह ह़ाज़िर हो कर रुतबए शहादत को पहुंचे और ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन (बीमार) और उ़मर बिन ह़सन और मुह़म्मद बिन उ़मर बिन अ़ली और दूसरे सग़ीरुस्सिन साहि़बज़ादे عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان क़ैदी बनाए गए। ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़क़ीक़ी हमशीरा और शहर बानू ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा और ह़ज़रते सकीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दुख़्तर और दूसरी अहले बैत की बीबियां हमराह थीं। (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)... 12 मिन्ह..।

से इस्रार कर रहे थे कि आप इस सफ़र को मुलतवी फ़रमाएं मगर ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन की येह इस्तिदआ़ क़बूल फ़रमाने से मजबूर थे क्यूंकि आप को ख़याल था कि कूफ़ियों की इतनी बड़ी जमाअ़त का इस क़दर इस्रार और ऐसी इल्तिजाओं के साथ अ़र्ज़दाश्तें पज़ीरा, न फ़रमाना अहले बैत के अख़्लाक़ के शायां नहीं। इस के इलावा ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पहुंचने पर अहले कूफ़ा की त़रफ़ से कोई कोताही न होना और इमाम की बैअ़त के लिये शौक़ से हाथ फैला देना और हज़ारों कूफ़ियों का दाख़िले ह़ल्क़ए ग़ुलामी हो जाना इस पर भी ह़ज़रते इमाम का उन की त़रफ़ से इग़माज़ फ़रमाना और उन की ऐसी इलतिजाओं को जो मह़्ज़ दीनी पासदारी के लिये हैं, ठुकरा देना और उस मुसलमान क़ौम की दिल शिकनी करना ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को किसी त़रह़ गवारा न हुवा। उधर ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसे सफ़ाकीश की इस्तिदआ़ को बे इल्तिफ़ाती की नज़र से देखना और उन की दरख़्वास्ते तशरीफ़ आवरी को रद्द फ़रमा देना भी ह़ज़रते इमाम पर बहुत शाक़ था। येह वुजूह थे जिन्हों ने इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सफ़रे इ़राक़ पर मजबूर किया और आप को अपने ह़िजाज़ी अ़क़ीदत मन्दों से मा'ज़ेरत करना पड़ी।[1]

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रते इब्ने उ़मर, ह़ज़रते जाबिर, ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी, ह़ज़रते अबू वाक़िद लैषी और दूसरे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रोकने में बहुत मुसिर थे और आख़िर तक वोह येही कोशिश करते रहे कि आप मक्कए मुकर्रमा से तशरीफ़ न ले जाएं लेकिन येह कोशिशें कार आमद न हुईं और ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने 3 ज़िल ह़िज्जा सि. 60 हि. को अपने अहले बैत मवाली व ख़ुद्दाम कुल बयासी(82) नुफ़ूस को हमराह

1 ......البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، صفة مخرج الحسين الى العراق، ج٥، ص٦٦٤-٦٦٥

ले कर राहे इ़राक़ इख़्तियार की। मक्कए मुकर्रमा से अहले बैते रिसालत का येह छोटा सा क़ाफ़िला रवाना होता है और दुन्या से सफ़र करने वाले बैतुल्लाहुल ह़राम का आख़िरी त़वाफ़ कर के ख़ानए का'बा के पर्दों से लिपट लिपट कर रोते हैं, इन की गर्म आहों और दिल हिला देने वाले नालों ने मक्कए मुकर्रमा के बाशिन्दों को मग़्मूम कर दिया, मक्कए मुकर्रमा का बच्चा बच्चा अहले बैत के इस क़ाफ़िले को ह़रम शरीफ़ से रुख़्सत होता देख कर आबदीदा और मग़्मूम हो रहा था मगर वोह जांबाज़ों के मीरे लश्कर और फ़िदाकारों के क़ाफ़िला सालार मर्दाना हिम्मत के साथ रवाना हुए। अषनाए राह में ज़ाते अ़र्क़ के मक़ाम पर बशीर इब्ने ग़ालिब असदी बअ़ज़्मे मक्कए मुकर्रमा कूफ़ा से आते मिले। ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन से अहले इ़राक़ का ह़ाल दरयाफ़्त किया, अ़र्ज़ किया कि उन के कुलूब आप के साथ हैं और तल्वारें बनी उमय्या के साथ और ख़ुदा जो चाहता है करता है। يَفۡعَلُ اللّٰہُ مَا یَشَآءُ ۟ [1] ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : सच है। ऐसी ही गुफ़्तगू फ़र्ज़दक़ शाइ़र से हुई। बत़्ने ज़िलरमा (नाम मक़ामे) से रवाना होने के बा'द अ़ब्दुल्लाह बिन मुत़ीअ़ से मुलाक़ात हुई। वोह ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के बहुत दरपे हुए कि आप इस सफ़र को तर्क फ़रमाएं और इस में उन्हों ने अन्देशे ज़ाहिर किये। ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : لَنۡ یُّصِیۡبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰہُ لَنَا ۚ [2] हमें वोही मुसीबत पहुंच सकती है जो ख़ुदावन्दे आ़लम ने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमा दी।[3]

1....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* ***अल्लाह*** *जो चाहे करे।* (١٣، ابرٰھیم:٢٧)

2....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हमें न पहुंचेगा मगर जो* ***अल्लाह*** *ने हमारे लिये लिख दिया।* (١٣، ابرٰھیم:٢٧)

3......البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، صفة مخرج الحسين الى العراق، ج٥، ص٦٦٨-٦٧٤ ملتقطاً و ملخصاً

والكامل فى التاريخ، سنة ستين، ذكر الخبر عن مراسلة...الخ، ج٣، ص٣٨١

राह में ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कूफ़ियों की बद अ़हदी और ह़ज़रते मुस्लिम की शहादत की ख़बर मिल गई। उस वक़्त आप की जमाअ़त में मुख़्तलिफ़ राए हुई और एक मरतबा आप ने भी वापसी का क़स्द ज़ाहिर फ़रमाया लेकिन बहुत गुफ़्त्गोइयों के बा'द राए येही क़रार पाई कि सफ़र जारी रखा जाए और वापसी का ख़याल तर्क किया जाए।

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी इस मश्वरे से इत्तिफ़ाक़ किया और क़ाफ़िला आगे चल दिया यहां तक कि जब कूफ़ा दो मन्ज़िल रह गया तब आप को हुर बिन यज़ीद रियाही मिला, हुर के साथ इब्ने ज़ियाद के एक हज़ार हथयार बन्द सुवार थे, हुर ने ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जनाब में अ़र्ज़ किया कि इस को इब्ने ज़ियाद ने आप की त़रफ़ भेजा है और हुक्म दिया है कि आप को उस के पास ले चले, हुर ने येह भी ज़ाहिर किया कि वोह मजबूराना बादिले न ख़्वास्ता आया है और उस को आप की ख़िदमत में जुरअत बहुत ना पसन्द व नागवार है। ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुर से फ़रमाया कि मैं इस शहर में खुद ब खुद न आया बल्कि मुझे बुलाने के लिये अहले कूफ़ा के मुतवातिर पयाम गए और लगातार नामे पहुंचते रहे। ऐ अहले कूफ़ा! अगर तुम अपने अ़हद व बैअ़त पर क़ाइम हो और तुम्हें अपनी ज़बानों का कुछ पास हो तो तुम्हारे शहर में दाख़िल होऊं वरना यहीं से वापस जाऊं। हुर ने क़सम खा कर कहा कि हम को इस का कुछ इ़ल्म नहीं कि आप के पास इल्तिजा नामे और क़ासिद भेजे गए और मैं न आप को छोड़ सकता हूं और न वापस हो सकता हूं।

हुर के दिल में ख़ानदाने नबुव्वत और अहले बैत की अ़ज़मत ज़रूर थी और उस ने नमाज़ों में ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही की इक़्तिदा की लेकिन वोह इब्ने ज़ियाद के हुक्म से मजबूर था और उस को येह अन्देशा भी था कि वोह अगर ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ कोई मराआ़त करे तो इब्ने ज़ियाद पर येह बात ज़ाहिर हो कर रहेगी कि हज़ार सुवार साथ हैं, ऐसी सूरत में किसी बात का छुपाना मुमकिन नहीं

और अगर इब्ने ज़ियाद को मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ ज़रा भी फ़रूगुज़ाश्त की गई है तो वोह निहायत सख़्ती के साथ पेश आएगा। इस अन्देशे और ख़याल से हुर अपनी बात पर अड़ा रहा यहां तक कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कूफ़ा की राह से हट कर करबला में नुज़ूल फ़रमाना पड़ा।

येह मुह़र्रम सि. 61 हि. की दूसरी तारीख़ थी। आप ने इस मक़ाम का नाम दरयाफ़्त किया तो मा'लूम हुवा कि इस जगह को करबला कहते हैं। ह़ज़रते इमाम करबला से वाक़िफ़ थे और आप को मा'लूम था कि करबला ही वोह जगह है जहां अहले बैते रिसालत को राहे ह़क़ में अपने ख़ून की नद्दियां बहानी होंगी।(1) आप को इन्हीं दिनों में ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को शहादत की ख़बर दी और आप के सीनए मुबारक पर दस्ते अक़्दस रख कर दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰھُمَّ اَعْطِ الْحُسَیْنَ صَبْرًا وَّاَجْرًا अ़जीब वक़्त है कि सुल्ताने दारैन के नूरे नज़र को सदहा तमन्नाओं से मेहमान बना कर बुलाया है, अ़र्ज़ियों और दरख़्वास्तों के तूमार लगा दिये हैं, क़ासिदों और पयामों की रोज़ मर्रा डाक लग गई है। अहले कूफ़ा रातों को अपने मकानों में इमाम की तशरीफ़ आवरी ख़्वाब में देखते हैं और ख़ुशी से फूले नहीं समाते, जमाअ़तें मुद्दतों तक सुब्ह़ से शाम तक ह़िजाज़ की सड़क पर बैठ कर इमाम की आमद का इन्तिज़ार किया करती हैं और शाम को बा दिले मग़्मूम वापस जाती हैं लेकिन जब वोह करीम मेहमान......अपने करम से इन की ज़मीन में वुरूद फ़रमाता है तो इन ही कूफ़ियों का मुसल्लह़ लश्कर सामने आता है और न शहर में दाख़िल होने देता है न अपने वत़न ही को वापस तशरीफ़ ले जाने पर राज़ी होता है।

1......البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، صفة مخرج الحسين الى العراق، ج٥، ص٦٧٥-٦٧٧ ملتقطاً
والكامل فى التاريخ، سنة احدى وستين، ذكر مقتل الحسين، ج٣، ص٤٠٧-٤١١

यहां तक कि इस मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमान को मअ़ अपने अहले बैत के खुले मैदान में रख़्ते इक़ामत डालना पड़ता है और दुश्मनाने ह़या को ग़ैरत नहीं आती। दुन्या में ऐसे मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमान के साथ ऐसी बे ह़मिय्यती का सुलुक कभी न हुवा होगा जो कूफ़ियों ने ह़ज़रते इमाम के साथ किया।

यहां तो इन मुसाफ़िराने बे वत़न का सामान बे तरतीब पड़ा है और उधर हज़ार सुवार का मुसल्लह़ लश्कर मुक़ाबला ख़ैमाज़न है जो अपने मेहमानों को नेज़ों की नोकें और तल्वारों की धारें दिखा रहा है और बजाए आदाबे मेज़बानी के ख़ूंख़्वारी पर तुला हुवा है। दरयाए फ़ुरात के क़रीब दोनों लश्कर थे और दरयाए फ़ुरात का पानी दोनों लश्करों में से किसी को सैराब न कर सका। इमाम के लश्कर को तो इस का एक क़त़रा पहुंचना ही मुश्किल हो गया और यज़ीदी लश्कर जितने आते गए इन सब को अहले बैते रिसालत के बे गुनाह ख़ून की प्यास बढ़ती गई। आबे फ़ुरात से इन की तिश्नगी में कोई फ़र्क़ न आया। अभी इत़्मीनान से बैठने और तकान दूर करने की सूरत भी नज़र न आई थी कि ह़ज़रते इमाम की ख़िदमत में इब्ने ज़ियाद का एक मक्तूब पहुंचा जिस में उस ने ह़ज़रते इमाम से यज़ीदे नापाक की बैअ़त त़लब की थी। ह़ज़रते इमाम ने वोह ख़त़ पढ़ कर डाल दिया और क़ासिद से कहा मेरे पास इस का कुछ जवाब नहीं।

सितम है, बुलाया तो जाता है ख़ुद बैअ़त होने के लिये और जब वोह करीम बादिये पैमाई की मशक़्क़तें बरदाश्त फ़रमा कर तशरीफ़ ले आते हैं तो उन को यज़ीद जैसे ऐ़बे मुजस्सम शख़्स की बैअ़त पर मजबूर किया जाता है जिस की बैअ़त को कोई भी वाक़िफ़े ह़ाल दीनदार आदमी गवारा नहीं कर सकता था न वोह बैअ़त किसी त़रह़ जाइज़ थी। इमाम को इन बे ह़याओं की इस जुरअत पर ह़ैरत थी और इसी लिये आप ने फ़रमाया कि मेरे पास इस का कुछ जवाब नहीं है। इस से इब्ने ज़ियाद का त़ैश और ज़ियादा हो गया और उस ने मज़ीद अ़साकिर व अफ़्वाज तरतीब दिये और इन लश्करों का सिपेह सालार उ़मर बिन

सा'द को बनाया जो उस ज़माने में मुल्के रे का वाली (गवर्नर) था। रे खुरासान का एक शहर है जो आज कल ईरान का दारुस्सलतनत है और इस को तेहरान कहते हैं।

सितम शिआर मुहारबीन सब के सब हज़रते इमाम की अज़मत व फ़ज़ीलत को खूब जानते पहचानते थे और आप की जलालत व मर्तबत का हर दिल मो'तरिफ़ था। इस वजह से इब्ने सा'द ने हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुक़ातला से गुरैज़ करनी चाही और पहलू तही की। वोह चाहता था कि हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के खून के इल्ज़ाम से वोह बचा रहे मगर इब्ने ज़ियाद ने उसे मजबूर किया कि अब दो ही सूरतें हैं या तो रै कि हुकूमत से दस्त बरदार हो वरना इमाम से मुक़ाबला किया जाए। दुन्यवी हुकूमत के लालच ने उस को उस जंग पर आमादा कर दिया जिस को उस वक़्त वोह ना गवार समझता था और जिस के तसव्वुर से उस का दिल कांपता था। आख़िरे कार इब्ने सा'द वोह तमाम असाकिर व अफ़वाज ले कर हज़रते इमाम के मुक़ाबले के लिये रवाना हुवा और इब्ने ज़ियादे बद निहाद पैहम व मुतवातिर कुमक पर कुमक भेजता रहा यहां तक कि अम्र बिन सा'द के पास बाईस हज़ार सुवार व पियादा जम्अ हो गए और उस ने उस जमीअत के साथ करबला में पहुंच कर फ़ुरात के कनारे पड़ाव किया और अपना मर्कज़ क़ाइम किया।(1)

हैरतनाक बात है और दुन्या की किसी जंग में इस की मिषाल नहीं मिलती कि कुल बयासी तो आदमी, इन में बीबियां भी, बच्चे भी, बीमार भी, फिर वोह भी ब इरादए जंग नहीं आए थे और इन्तिज़ामे हर्ब काफ़ी न रखते थे। उन के लिये बाईस हज़ार की जर्रार फ़ौज भेजी जाए। आख़िर वोह इन बयासी नुफ़ूसे मुक़द्दसा को अपने ख़याल में क्या

(1)......البداية والنهاية، سنة احدى وستين، ج٥، ص٦٧٨-٦٨٢ ملخصاً
والكامل فى التاريخ، سنة احدى وستين، ذكر مقتل الحسين، ج٣، ص٤١٢-٤١٦ ملخصاً
والمعجم البلدان، حرف الراء، باب الراء والياء وما يليهما، ج٢، ص٤٥٩

समझते थे और उन की शुजाअ़त व बसालत के कैसे कैसे मनाज़िर उन की आंखों ने देखे थे कि इस छोटी सी जमाअ़त के लिये दो गुनी चोगुनी दस गुनी तो क्या सो गुनी ता'दाद को भी काफ़ी न समझा, बे अन्दाज़ा लश्कर भेज दिये, फ़ौजों के पहाड़ लगा डाले, इस पर भी दिल ख़ौफ़ ज़दा हैं और जंग आज़माओं, दिलावरों के हौसले पस्त हैं और वोह समझते हैं कि शैराने ह़क़ के ह़म्ले की ताब लाना मुश्किल है मजबूरन येह तदबीर करना पड़ी कि लश्करे इमाम पर पानी बन्द किया जाए, प्यास की शिद्दत और गर्मी की ह़िद्दत से क़ूवा मज़महिल हो जाएं, ज़ो'फ़ इन्तिहा को पहुंच चुके तब जंग शुरूअ़ की जाए।

वोह रैगे गर्म और वोह धूप और वोह प्यास की शिद्दत
करें सब्रो तह़म्मुल मीरे कौषर ऐसे होते हैं

अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُم पर पानी बन्द करने और इन के ख़ूनों के दरया बहाने के लिये बे ग़ैरती से सामने आने वालों में ज़ियादा ता'दाद उन ही बे ह़याओं की थी जिन्हों ने ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को सदहा दरख़्वास्तें भेज कर बुलाया था और मुस्लिम बिन अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के हाथ पर ह़ज़रते इमाम की बैअ़त की थी मगर आज दुश्मनाने ह़मिय्यत व ग़ैरत को न अपने अ़हद व बैअ़त का पास था न अपनी दा'वत व मेज़बानी का लिह़ाज़। फ़ुरात का बे ह़िसाब पानी इन सियाह बाति़नों ने ख़ानदाने रिसालत पर बन्द कर दिया था। अहले बैत के छोटे छोटे खुर्द साल फ़ाति़मी चमन के नौनिहाल ख़ुश्क लब, तिशना दहान थे, नादान बच्चे एक एक क़त़रे के लिये तड़प रहे थे, नूर की तस्वीरें प्यास की शिद्दत में दम तोड़ रही थीं, बीमारों के लिये दरया का कनारा बयाबान बना हुवा था, आले रसूल को लबे आब पानी मुयस्सर न आता था, सरे चश्मा तयम्मुम से नमाज़ें पढ़नी पढ़ती थीं, इस त़रह़ बे आबो दाना तीन दिन गुज़र गए, छोटे छोटे बच्चे और बीबियां सब भूक व प्यास से बेताब व तूवां हो गए।

इस मा'रकए ज़ुल्मो सितम में अगर रुस्तम भी होता तो उस के हौसले पस्त हो जाते और सरे नियाज़ झुका देता मगर फ़रज़न्दे रसूल (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को मसाइब का हुजूम जगह से न हटा सका और उन के अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल में फ़र्क़ न आया, ह़क़ व सदाक़त का ह़ामी मुसीबतों की भयानक घटाओं से न डरा और तूफ़ाने बला के सैलाब से उस के पाए षबात में जुम्बिश भी न हुई, दीन का शैदाई दुन्या की आफ़तों को ख़याल में न लाया, दस मुह़र्रम तक येही बह़्ष रही कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ यज़ीद की बैअ़त कर लें । अगर आप यज़ीद की बैअ़त करते तो वोह तमाम लश्कर आप के जिलव में होता, आप का कमाले इकराम व एह़तिराम किया जाता, ख़ज़ानों के मुंह खोल दिये जाते और दौलते दुन्या क़दमों पर लुटा दी जाती मगर जिस का दिल हुब्बे दुन्या से ख़ाली हो और दुन्या की बे षबाती का राज़ जिस पर मुन्कशिफ़ हो वोह इस तिलिस्म पर कब मफ़्तूं होता है, जिस आंख ने ह़क़ीक़ी हुस्न के जल्वे देखे हों वोह नुमाइशी रंगो रूप पर क्या नज़र डाले ?

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने राह़ते दुन्या के मुंह पर ठोकर मार दी और राहे ह़क़ में पहुंचने वाली मुसीबतों का ख़ुश दिली से ख़ैर मक़्दम किया और बा वुजूद इस क़दर आफ़तों और बलाओं के नाजाइज़ बैअ़त का ख़याल अपने क़ल्बे मुबारक में न आने दिया और मुसलमानों की तबाही व बरबादी गवारा न फ़रमाई, अपना घर लुटाना और अपना ख़ून बहाना मन्ज़ूर किया मगर इस्लाम की इ़ज़्ज़त में फ़र्क़ आना बरदाश्त न हो सका ।[1]

---

1 ......البداية و النهاية، سنة احدى و ستين، ج ٥، ص ٦٧٨ ـ ٦٨٢ ملخصاً

و الكامل فى التاريخ، سنة احدى و ستين، ذكر مقتل الحسين، ج ٣، ص ٤١٢ ـ ٤١٦ ملخصاً

दस मुहर्रम सि. 61 हि. के दिलदोज़ वाक़िआत

जब किसी त़रह़ शक्ले मुसालह़त पैदा न हुई और किसी शक्ल से जफ़ा शिआ़र क़ौम सुल्ह़ की त़रफ़ माइल न हुई और तमाम सूरतें उन के सामने पेश कर दी गईं, लेकिन तिश्नगाने ख़ूने अहले बैत किसी बात पर राज़ी न हुए और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को यक़ीन हो गया कि अब कोई शक्ल ख़ुलास की बाक़ी नहीं है न येह शहर में दाख़िल होने देते हैं न वापस जाने देते हैं न मुल्क छोड़ने पर इन को तसल्ली होती है। वोह जान के ख़्वाहां हैं और अब इस जंग को दफ़्अ़ करने का कोई त़रीक़ा बाक़ी न रहा। उस वक़्त ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने क़ियाम गाह के गिर्द एक ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया। ख़न्दक़ खोदी गई और उस की सिर्फ़ एक राह रखी गई है जहां से निकल कर दुश्मनों से मुक़ाबला किया जाए। ख़न्दक़ में आग जला दी गई ताकि अहले ख़ैमा दुश्मनों की ईज़ा से मह़फ़ूज़ रहें।

दसवीं मुह़र्रम का क़ियामत नुमा दिन आया। जुमुआ़ की सुब्ह़ ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तमाम अपने रुफ़क़ाए अहले बैत के साथ फ़ज्र के वक़्त अपनी उ़म्र की आख़िरी नमाज़ बा जमाअ़त निहायत ज़ौक़ो शौक़ तज़र्रुअ़ व ख़ुशूअ़ के साथ अदा फ़रमाई। पेशानियों ने सजदों में ख़ूब मज़े लिये, ज़बानों ने क़िराअत व तस्बीह़ात के लुत़्फ़ उठाए। नमाज़ से फ़राग़ के बा'द ख़ैमे में तशरीफ़ लाए, दसवीं मुह़र्रम का आफ़्ताब क़रीबे तुलूअ़ है, इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन के तमाम रुफ़क़ा व अहले बैत तीन दिन के भूके प्यासे हैं, एक क़त़रए आब मुयस्सर नहीं आया और एक लुक़्मा ह़ल्क़ से नहीं उतरा, भूक प्यास से जिस क़दर ज़ो'फ़ व नातुवानी का ग़लबा हो जाता है इस का वोही लोग कुछ अन्दाज़ा कर सकते हैं जिन्हें कभी दो तीन वक़्त के फ़ाक़े की भी नौबत आई हो। फिर बे वत़नी, तेज़ धूप, गर्म रैत, गर्म हवाएं, उन्हों ने नाज़ परवर

दगाने आग़ोशे रिसालत को कैसा पज़्मुर्दा कर दिया होगा। इन ग़रीबाने बे वत़न पर जोरो जफ़ा के पहाड़ तोड़ने के लिये बाईस हज़ार फ़ौज और ताज़ा दम लश्कर तीरो तबर, तेग़ो सनां से मुसल्लह़ सफ़ें बांधे मौजूद, जंग का नक़्क़ारा बजा दिया गया और मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द और फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهَا के जिगर बन्द को मेहमां बना कर बुलाने वाली क़ौम ने जानों पर खेलने की दा'वत दी।[1]

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्सए कारज़ार में तशरीफ़ फ़रमा कर एक ख़ुत़्बा फ़रमाया जिस में बयान फ़रमाया कि "ख़ूने नाह़क़ ह़राम और ग़ज़बे इलाही عَزَّ وَجَلَّ का मूजिब है, मैं तुम्हें आगाह करता हूं कि तुम इस गुनाह में मुब्तला न हो, मैं ने किसी को क़त्ल नहीं किया है, किसी का घर नहीं जलाया, किसी पर ह़म्ला आवर नहीं हुवा। अगर तुम अपने शहर में मेरा आना नहीं चाहते हो तो मुझे वापस जाने दो, तुम से किसी चीज़ का त़लबगार नहीं, तुम्हारे दरपे आज़ार नहीं, तुम क्यूं मेरी जान के दरपे हो और तुम किस त़रह़ मेरे ख़ून के इल्ज़ाम से बरी हो सकते हो? रोज़े मेह़शर तुम्हारे पास मेरे ख़ून का क्या जवाब होगा ? अपना अन्जाम सोचो और अपनी आ़क़िबत पर नज़र डालो, फिर येह भी समझो कि मैं कौन और बारगाहे रिसालत में किस चश्मे करम का मन्ज़ूरे नज़र हूं, मेरे वालिद कौन हैं और मेरी वालिदा किस की लख़्ते जिगर हैं ? मैं उन्हीं बतूले ज़हरा का नूरे दीदा हूं जिन के पुल सिरात़ पर गुज़रते वक़्त अ़र्श से निदा की जाएगी कि ऐ अहले मेह़शर ! सर झुकाओ और आंखे बन्द करो कि ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهَا पुल सिरात़ से सत्तर(70) हज़ार हूरों को रिकाबे सआ़दत में ले कर गुज़रने वाली हैं। मैं वोही हूं जिस की मह़ब्बत को सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मह़ब्बत फ़रमाया है, मेरे फ़ज़ाइल तुम्हें ख़ूब मा'लूम हैं, मेरे ह़क़ में जो अह़ादीष वारिद हुई हैं इस से तुम बे ख़बर नहीं हो।"

1 ......البداية والنهاية، سنة احدى و ستين، ج٥، ص٦٨٥ ملخصاً

والكامل فى التاريخ، سنة احدى وستين، ذكر مقتل الحسين،المعركة، ج٣، ص٤١٧ ملخصاً

इस का जवाब येह दिया गया कि तमाम फ़ज़ाइल हमें मा'लूम हैं मगर इस वक़्त येह मस्अला ज़ेरे बहूष नहीं है, आप जंग के लिये किसी को मैदान में भेजिये और गुफ़्तगू ख़त्म फ़रमाइये।

हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि "मैं हुज्जतें ख़त्म करना चाहता हूं ताकि इस जंग को दफ़्अ़ करने की तदाबीर में से मेरी त़रफ़ से कोई तदबीर रह न जाए और जब तुम मजबूर करते हो तो ब मजबूरी व नाचारी मुझ को तल्वार उठाना ही पड़ेगी।"(1)

हुनूज़ गुफ़्तगू हो ही रही थी कि गुरौहे आ'दा में से एक शख़्स घोड़ा दौड़ा कर सामने आया (जिस का नाम मालिक बिन उ़र्वा था) जब उस ने देखा कि लश्करे इमाम के गिर्द ख़न्दक़ में आग जल रही है और शो'ले बुलन्द हो रहे हैं और इस तदबीर से अहले ख़ैमा की हिफ़ाज़त की जाती है तो उस गुस्ताख़े बद बातिन ने हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा कि ऐ हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तुम ने वहां कि आग से पहले यहीं आग लगा ली ? हज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : کَذَبْتَ یَا عَدُوَّاللّٰہِ ऐ दुश्मने ख़ुदा ! तू काज़िब है। तुझे गुमान है कि मैं दोज़ख़ में जाऊंगा ?

मुस्लिम बिन औ़सजा को मालिक बिन उ़र्वा का येह कलिमा बहुत ना गवार हुवा और उन्हों ने हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से उस बद ज़बान के मुंह पर तीर मारने की इजाज़त चाही। सब्रो तहम्मुल और तक़्वा और रास्तबाज़ी और अ़दालत व इन्साफ़ का एक अ़दीमुल मिषाल मन्ज़र है कि ऐसी हालत में जब कि जंग के लिये मजबूर किये गए थे।

---

1 ......الکامل فی التاریخ، سنة احدی وستین، ذکر مقتل الحسین، المعرکة، ج۳، ص۴۱۸۔۴۱۹ ملتقطاً
واللآلی المصنوعة فی الاحادیث الموضوعة، کتاب المناقب، باب مناقب اهل البیت، ج۱، ص۳۶۸
والمستدرك للحاکم، کتاب معرفة الصحابة رضی اللّٰه عنهم، باب ذکر شان الاذان، الحدیث:۴۸۵۲، ج۴، ص۱۶۳

ख़ून के प्यासे तल्वारें खींचे हुए जान के ख़्वाहां थे। बे बाकों ने कमाले बे अदबी व गुस्ताख़ी से ऐसा कलिमा कहा और एक जां निषार उस के मुंह पर तीर मारने की इजाज़त चाहता है तो उस वक़्त अपने जज़्बात क़ब्ज़े में हैं तैश नहीं आता। फ़रमाते हैं कि खबरदार ! मेरी त़रफ़ से कोई जंग की इब्तिदा न करे ताकि इस ख़ूं रैज़ी का वबाल आ'दा ही की गर्दन पर रहे और हमारा दामन इक़दाम से आलूदा न हो लेकिन तीरे जराहते क़ल्ब का मरहम भी मेरे पास है और तीरे सोज़े जिगर की तशफ़्फ़ी की भी तदबीर रखता हूं, अब तू देख ! येह फ़रमा कर दस्ते दुआ दराज़ फ़रमाए और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ किया की या रब्ब عَزَّوَجَلَّ अ़ज़ाबे नार से क़ब्ल इस गुस्ताख़ को दुन्या में आतशे अ़ज़ाब में मुब्तला कर। इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ का हाथ उठाना था कि उस के घोड़े का पाउं एक सूराख़ में गया और वोह घोड़े से गिरा और उस का पाउं रिकाब में उलझा और घोड़ा उसे ले कर भागा और आग की ख़न्दक़ में डाल दिया।

हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने सजदए शुक्र अदा किया और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो षना की और फ़रमाया : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरा शुक्र है कि तूने अहले बैते रिसालत के बदख़्वाह को सज़ा दी।" हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ की ज़बान से येह कलिमा सुन कर सफ़े आ'दा में से एक और बेबाक ने कहा कि आप को पैग़म्बरे ख़ुदा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) से क्या निस्बत ? येह कलिमा तो इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ के लिये बहुत तक्लीफ़ देह था। आप ने उस के लिये भी बद दुआ फ़रमाई और अ़र्ज़ किया या रब्ब عَزَّوَجَلَّ इस बदज़बान को फ़ौरी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर। इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने येह दुआ फ़रमाई और उस को क़ज़ाए ह़ाजत की ज़रूरत पेश आई, घोड़े से उतर कर एक त़रफ़ भागा और किसी जगह क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बरह्ना हो कर बैठा। एक सियाह बिच्छू ने डंग मारा तो नजासत आलूदा तड़पता फिरता था।

इस रुस्वाई के साथ तमाम लश्कर के सामने उस नापाक की जान निकली मगर सख़्त दिलाने बे ह़मिय्यत को ग़ैरत न हुई।(1)

एक शख़्स मुज़नी ने इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने आ कर कहा कि "ऐ इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ देखो तो दरयाए फ़ुरात कैसा मौजें मार रहा है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर कहता हूं तुम्हें इस का एक क़त्रा न मिलेगा और तुम प्यासे हलाक हो जाओगे।" ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस के ह़क़ में फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ اَمِتْہُ عَطْشَانًا (या रब्ब عَزَّوَجَلَّ इस को प्यासा मार) इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह फ़रमाना था कि मुज़नी का घोड़ा चमका, मुज़नी गिरा, घोड़ा भागा और मुज़नी उस को पकड़ने के लिये उस के पीछे दौड़ा और प्यास उस पर ग़ालिब हुई, इस शिद्दत की ग़ालिब हुई की اَلْعَطَش اَلْعَطَش पुकारता था और जब पानी उस के मुंह से लगाते थे तो एक क़त्रा न पी सकता था यहां तक कि इसी शिद्दते प्यास में मर गया।(2)

फ़रज़न्दे रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को येह बात भी दिखा देना थी कि इन की मक़्बूलिय्यते बारगाहे ह़क़ पर और उन के क़ुर्ब व मन्ज़िलत पर जैसी कि नुसूसे कषीरा व अह़ादीषे शहीरा शाहिद हैं ऐसे ही उन के ख़वारिक़ व करामात भी गवाह हैं। अपने इस फ़ज़्ल का अ़मली इज़्हार भी इतमामे हुज्जत के सिलसिले की एक कड़ी थी कि अगर तुम आंख रखते हो तो देख लो कि जो ऐसा मुस्तजाबुद्दा'वात है उस के मुक़ाबले में आना ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से जंग करना है इस का अन्जाम सोच लो और बाज़ रहो मगर शरारत के मुजस्समे इस से भी सबक़ न ले सके और दुन्याए ना पाएदार की ह़िर्स का भूत जो उन के सरों पर सुवार था उस ने उन्हें अन्धा बना दिया और नेज़े बाज़ लश्करे आ'दा से निकल कर रज्ज़ ख़्वानी करते हुए मैदान में आ कूदे और तकब्बुर व तबख़्तुर के साथ इतराते

1 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب نہم، ج۲، ص۱۸۶-۱۸۸

2 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب نہم، ج۲، ص۱۸۸

हुए घोड़े दौड़ा कर और हथयार चमका कर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मुबारिज़ के तालिब हुए।

हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इमाम के ख़ानदान के नौनिहाल शौके़ जांबाज़ी में सरशार थे। उन्हों ने मैदान में जाना चाहा लेकिन क़रीब के गाउं वाले जहां इस हंगामें की ख़बर पहुंची थी वहां के मुसलमान बे ताब हो कर हाज़िरे ख़िदमत हो गए थे उन्हों ने इस्रार किये, हज़रत के दरपे हो गए और किसी तरह राज़ी न हुए कि जब तक इन में से एक भी ज़िन्दा है ख़ानदाने अहले बैत का कोई बच्चा भी मैदान में जाए। हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इन इख़्लास कैशों की सरफ़रोशाना इल्तिजाएं मन्ज़ूर फ़रमाना पड़ीं और उन्हों ने मैदान में पहुंच कर दुश्मनाने अहले बैत से शुजाअ़त व बसालत के साथ मुक़ाबले किये और अपनी बहादुरी के सिक्के जमा दिये और एक एक ने आ'दा की कषीर ता'दाद को हलाक कर के राहे जन्नत इख़्तियार करना शुरूअ़ की। इस तरह बहुत से जांबाज़ फ़रज़न्दाने रसूल पर अपनी जानें निषार कर गए। उन साहिबों के अस्मा और उन की जांबाज़ियों के तफ़्सीली तज़किरे सियर की किताबों में मस्तूर हैं। यहां इख़्तिसारन इस तफ़्सील को छोड़ दिया गया है, वहब इब्ने अ़ब्दुल्लाह कल्बी का एक वाक़िआ़ ज़िक्र किया जाता है।

येह क़बीलए बनी कल्ब के ज़ैबा व नेक ख़ू, गुलरुख़ हसीन जवान थे, उठती जवानी और उन्फ़ुवाने शबाब, उमंगों का वक़्त और बहारों के दिन थे। सिर्फ़ सतरह रोज़ शादी को हुए थे और अभी बसाते इ़शरत व निशात़ गर्म ही थी कि आप के पास आप की वालिदा पहुंचीं जो एक बेवा औ़रत थीं और जिन की सारी कमाई और घर का चराग़ येही एक नौजवान बेटा था। उस मुशफ़िक़ मां ने प्यारे बेटे के गले में बाहें डाल कर रोना शुरूअ़ कर दिया। बेटा हैरत में आ कर मां से दरयाफ़्त करता है कि मादरे मोहतरमा रन्जो मलाल का सबब क्या है ?

मैं ने अपनी उ़म्र में कभी आप की नाफ़रमानी न की न आयन्दा कर सकता हूं। आप की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी फ़र्ज़ है और मैं ताबा ज़िन्दगी मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार रहूंगा। आप के दिल को क्या सदमा पहुंचा और आप को किस ग़म ने रुलाया ? मेरी प्यारी मां ! मैं आप के हुक्म पर जान फ़िदा करने को तय्यार हूं, आप ग़मगीन न हों। इक लोते सआ़दत मन्द बेटे की येह सआ़दत मन्दाना गुफ़्तगू सुन कर मां और चीख़ मार कर रोने लगी और कहने लगी : ऐ फ़रज़न्दे दिलबन्द ! मेरी आंख का नूर दिल का सुरूर तू ही है और ऐ मेरे घर के चराग़ और मेरे बाग़ के फूल ! मैं ने अपनी जान घुला घुला कर तेरी जवानी की बहार पाई है, तू ही मेरे दिल का क़रार है तू ही मेरी जान का चैन है, एक दम तेरी जुदाई और एक लम्हा तेरा इफ़तिराक़ मुझे बरदाश्त नहीं हो सकता।

چوں در خواب باشم توئی در خیالم
چوں بیدار گردم توئی در ضمیرم

ऐ जाने मादर ! मैं ने तुझे अपना ख़ूने जिगर पिलाया है। आज मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जिगर गोशा, ख़ातूने जन्नत का नौनिहाल दश्ते करबला में मुब्तलाए मुसीबत व जफ़ा है, प्यारे बेटे ! क्या तुझ से हो सकता है कि तू अपना ख़ून उस पर निषार करे और अपनी जान उस के क़दमों पर कुरबान कर डाले। इस बे ग़ैरत ज़िन्दगी पर हज़ार तुफ़ है कि हम ज़िन्दा रहें और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का लाडला ज़ुल्मो जफ़ा के साथ शहीद किया जाए अगर तुझे मेरी महब्बतें कुछ याद हों और तेरी परवरिश में जो मेह़नतें मैं ने उठाई हैं इन को तू भूला न हो तो ऐ मेरे चमन के फूल ! तू हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के सर पर सदक़ा हो जा। वहब ने कहा : ऐ मादरे मेहरबान ! ख़ूबी नसीब, येह जान, शहज़ादए कौनैन पर फ़िदा हो जाए और येह नाचीज़ हदिय्या वोह आक़ा क़बूल कर लें। मैं दिलो जान से आमादा हूं, एक लम्हा की इजाज़त

चाहता हूं ताकि उस बीबी से दो बातें कर लूं जिस ने अपनी ज़िन्दगी के ऐशो राहत का सहरा मेरे सर बांधा है और जिस के अरमान मेरे सिवा किसी त़रफ़ नज़र उठा कर नहीं देखते, उस की ह़सरतों के तड़पने का ख़याल है, वोह अगर सब्र न कर सकी तो मैं उस को इजाज़त दे दूं कि वोह अपनी ज़िन्दगी को जिस त़रह़ चाहे गुज़ारे। मां ने कहा : बेटा ! औ़रतें नाक़िसुल अ़क़्ल होती हैं। मबादा तू उस की बातों में आ जाए और येह सआ़दते सरमदी तेरे हाथों से जाती रहे। वहब ने कहा : प्यारी मां ! इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मह़ब्बत की गिरह दिल में ऐसी मज़बूत़ लगी है कि इस को कोई खोल नहीं सकता और इन की जां निषारी का नक़्श दिल पर इस त़रह़ जागुज़ीं हुवा है जो दुन्या के किसी भी पानी से नहीं धोया जा सकता है। येह कह कर बीबी की त़रफ़ आया और उसे ख़बर दी कि फ़रज़न्दे रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मैदाने करबला में बे यारो मददगार हैं और ग़द्दारों ने उन पर नरग़ा किया है। मेरी तमन्ना है कि उन पर जान निषार करूं। येह सुन कर नई दुल्हन ने उम्मीद भरे दिल से एक आह खींची और कहने लगी, ऐ मेरे आरामे जां ! अफ़्सोस येह है कि इस जंग में मैं तेरा साथ नहीं दे सकती, शरीअ़ते इस्लामिय्या ने औ़रतों को ह़र्ब के लिये मैदान में आने की इजाज़त नहीं दी है। अफ़्सोस ! इस सआ़दत में मेरा हिस्सा नहीं कि तेरे साथ मैं भी इस जाने जहां पर जान क़ुरबान करूं। अभी मैं ने दिल भर के तेरा चेहरा भी नहीं देखा है और तूने जन्नती चमनिस्तान का इरादा कर दिया। वहां ह़ूरें तेरी ख़िदमत की आरज़ूमन्द होंगी। मुझ से अ़हद कर कि जब सरदाराने अहले बैत के साथ जन्नत में तेरे लिये बे शुमार ने'मतें ह़ाज़िर की जाएंगी और बहिश्ती ह़ूरें तेरी ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर हों उस वक़्त तू मुझे न भूल जाए।

येह नौजवान अपनी उस नेक बीबी और बरगुज़ीदा मां को ले कर फ़रज़न्दे रसूल की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। दुल्हन ने अ़र्ज़ किया : या इब्ने रसूल ! शुहदा घोड़े से ज़मीन पर गिरते ही हूरों की गोद में पहुंचते हैं और बहिश्ती ह़सीन कमाले इत़ाअ़त शिआ़री के साथ उन की ख़िदमत करते हैं, मेरा येह नौजवान शोहर हुज़ूर पर जां निषारी की तमन्ना रखता है और मैं निहायत बेकस हूं, न मेरी मां है न बाप है न कोई भाई है न ऐसे क़राबती रिश्तेदार हैं जो मेरी कुछ ख़बरगीरी कर सकें। इल्तिजा येह है कि अ़र्सागाहे मेह़शर में मेरे इस शोहर से जुदाई न हो और दुन्या में मुझ ग़रीब को आप के अहले बैत अपनी कनीज़ों में रखें और मेरी उ़म्र का आख़िरी ह़िस्सा आप की पाक बीबियों की ख़िदमत में गुज़र जाएं।

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के सामने येह तमाम अ़हद हो गए और वहब ने अ़र्ज़ कर दिया कि ऐ इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अगर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से मुझे जन्नत मिली तो मैं अ़र्ज़ करूंगा कि येह बीबी मेरे साथ रहे और मैं ने इस से अ़हद किया है। वहब इजाज़त चाह कर मैदान में चल दिया। लश्करे आ'दा ने देखा कि घोड़े पर एक माहरू सुवार है और अजले नागहानी की त़रह़ दुश्मन पर ताख़्त लाता है, हाथ में नेज़ा है, दोश पर सिपर है और दिल हिला देने वाली आवाज़ के साथ येह रज्ज़ पढ़ता आ रहा है :

اَمِیۡرٌ حُسَیۡنٌ وَ نِعۡمَ الۡاَمِیۡرُ
لَہٗ لَمۡعَۃٌ کَالسِّرَاجِ الۡمُنِیۡرِ

ایں چہ ذو قست کہ جاں می بازو — وھب کلبی بسگِ کوئے حسین
دست او تیغ زند تا کہ کند — روئے اشرار چو گیسوئے حسین

बरक़े ख़ातिफ़ की त़रह़ मैदान में पहुंचा। कोह पैकर घोड़े पर सिपेह गिरी के फ़ुनून दिखाए। सफ़े आ'दा से मुबारिज़ त़लब किया जो सामने आया तल्वार से उस का सर उड़ाया, गिर्दो पेश ख़ुद सरों के सरों का अम्बार लगा दिया और नाकिसों के तन ख़ून व ख़ाक में तड़पते नज़र आने लगे, यकबारगी घोड़े की बाग मोड़ दी और मां के पास आ कर अ़र्ज़ किया कि : ऐ मादरे मुशफ़िक़ा ! तू मुझ से राज़ी हुई और बीवी की त़रफ़ जा कर उस के सर पर हाथ रखा जो बेक़रार रो रही थी और उस को सब्र दिलाया उस की ज़बाने ह़ाल कहती थी :

جان ز غم فرسودہ دارم چوں نہ نالم آہ آہ

دل بدرد آلودہ دارم چوں نہ گریم زار زار

इतने में आ'दा की त़रफ़ से आवाज़ आई कि क्या कोई मुबारिज़ है ? वहब घोड़े पर सुवार हो कर मैदान की त़रफ़ रवाना हुवा। नई दुल्हन टिकटकी बांधे उस को देख रही है और आंखों से आंसू के दरया बहा रही है।

از پیش من آں یار چو تعجیل کناں رفت

دل نعرہ بر آورد کہ جاں رفت رواں رفت

वहब शेरज़ियां की त़रह़ तेग़ आबदा रू नेज़ए जां शिकार ले कर मा'रकए कारज़ार में साइक़ावार आ पहुंचा। उस वक़्त मैदान में आ'दा की त़रफ़ से एक मश्हूर बहादुर और नामदार सुवार ह़कम बिन तुफ़ैल ग़ुरूरे नबर्द आज़माई में सरशार था। वहब ने एक ही ह़म्ले में उस को नेज़े पर उठा कर इस त़रह़ ज़मीन पर दे मारा कि हड्डियां चकना चूर हो गईं और दोनों लश्करों में शोर मच गया और मुबारिज़ों में हिम्मते मुक़ाबला न रही। वहब घोड़ा दौड़ाता क़ल्बे दुश्मन पर पहुंचा, जो मुबारिज़ सामने आता उस को नेज़े की नोक पर उठा कर ख़ाक पर पटक देता यहां तक कि नेज़ा पारा पारा हो गया, तल्वार मियान से निकाली

और तेग़ज़नों की गर्दनें उड़ा कर ख़ाक में मिला दीं। जब आ'दा इस जंग से तंग आ गए तो अ़म्र बिन सा'द ने हुक्म दिया कि लोग इस के गिर्द हुजूम कर के ह़म्ला कर दें और हर त़रफ़ से यक्बारगी हाथ छोड़ें ऐसा ही किया और जब वोह नौजवान ज़ख़्मों से चूर हो कर ज़मीन पर आया तो सियाह दिलाने बद बात़िन ने उस का सर काट कर लश्करे इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) में डाल दिया। उस की मां बेटे के सर को अपने मुंह से मलती थी और कहती थी ऐ बेटा ! बहादुर बेटा ! अब तेरी मां तुझ से राज़ी हुई। फिर वोह सर उस दुल्हन की गोद में ला कर रख दिया, दुल्हन ने अपने प्यारे शोहर के सर को बोसा दिया। उसी वक़्त परवाने की त़रह़ उस शम्ए़ जमाल पर क़ुरबान हो गई और उस का त़ाइरे रूह़ अपने नौशे के साथ हम आग़ोश हो गया।[1]

सुर्ख़ रूई उसे कहते हैं कि राहे ह़क़ में
सर के देने में ज़रा तूने तअम्मुल न किया

اَسۡکَنَکُمَا اللّٰہُ فَرَادِیۡسَ الۡجِنَانِ وَاَغۡرَقَکُمَا فِیۡ بِحَارِ الرَّحۡمَۃِ وَالرِّضۡوَانِ (روضۃ الاحباب)

इन के बा'द और सआ़दत मन्द जां निषार, दादे जान निषारी देते और जानें फ़िदा करते रहे। जिन जिन खुश नसीबों की क़िस्मत में था उन्हों ने ख़ानदाने अहले बैत पर अपनी जानें फ़िदा करने की सआ़दत ह़ासिल की। इस ज़ुमरे में हुर बिन यज़ीद रियाह़ी क़ाबिले ज़िक्र है। जंग के वक़्त हुर का दिल बहुत मुज़्त़रिब था और उस की सीमाब वार बेक़रारी उस को एक जगह न ठहरने देती थी, कभी वोह अ़म्र बिन सा'द से जा कर कहते थे कि तुम इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ जंग करोगे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को क्या जवाब दोगे ? अ़म्र बिन सा'द को इस का जवाब न बन आता था। वहां से हट कर फिर मैदान में आते हैं, बदन कांप रहा है, चेहरा ज़र्द है, परेशानी के आषार नुमायां हैं, दिल धड़क रहा है, इन के भाई मुस्अ़ब बिन यज़ीद ने उन का येह ह़ाल देख

---

1 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب نہم، ج۲، ص ۲۳۱-۲۳۹

कर पूछा कि ऐ बरादर ! आप मश्हूर जंग आज़्मा और दिलावर व शुजाअ़ हैं, आप के लिये येह पहला ही मा'रका नहीं बारहा जंग के ख़ूनीं मनाज़िर आप की नज़्र के सामने गुज़्रे हैं और बहुत से देव पैकर आप की ख़ून आशाम तल्वार से पैवन्दे ख़ाक हुए हैं। आप का येह क्या ह़ाल है और आप पर इस क़दर ख़ौफ़ो हिरास क्यूं ग़ालिब है ?

हुर ने कहा कि ऐ बरादर ! येह मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द से जंग है, अपनी आ़क़िबत से लड़ाई है, मैं बहिश्त व दोज़ख़ के दरमियान खड़ा हूं, दुन्या पूरी क़ुव्वत के साथ मुझ को जहन्नम की त़रफ़ खींच रही है और मेरा दिल उस की हैबत से कांप रहा है। इसी अषना में ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की आवाज़ आई, फ़रमाते हैं : "कोई है जो आज आले रसूल पर जान निषार करे और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़ुज़ूरी में सुर्ख़ रूई पाए।"

येह सदा थी जिस ने पाउं की बेड़ियां काट दीं, दिले बेताब को क़रार बख़्शा और इत़्मीनान हुवा कि शाहज़ादए कौनैन ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मेरी पहली जुरअत से चश्म पोशी फ़रमाएं तो अ़जब नहीं, करीम ने करम से बशारत दी है, जान फ़िदा करने के इरादे से चल पड़ो। घोड़ा दौड़ाया और इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर घोड़े से उतर कर नियाज़्मन्दों के त़रीक़े पर रिकाब थामी और अ़र्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूल ! फ़रज़न्दे बतूल ! मैं वोही हुर हूं जो पहले आप के मुक़ाबिल आया और जिस ने आप को इस मैदाने बयाबान में रोका। अपनी इस जसारत व मुबादरत पर नादिम हूं, शर्मिन्दगी और ख़जालत नज़्र नहीं उठाने देती, आप की करीमाना सदा सुन कर उम्मीदों ने हिम्मत बंधाई तो ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा हूं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के करम से क्या बई़द कि अ़फ़्वे जुर्म फ़रमाएं और ग़ुलामाने बा इख़्लास में शामिल करें और अपने अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمۡ पर जान क़ुरबान करने की इजाज़त दें।

हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हुर के सर पर दस्ते मुबारक रखा और फ़रमाया : "ऐ हुर ! बारगाहे इलाही में इख़्लास मन्दों के इस्तिग़फ़ार मक़्बूल हैं और तौबा मुस्तजाब, उज़्र ख़्वाह महरूम नहीं जाते [1] وَهُوَالَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ शादबाश कि मैं ने तेरी तक़्सीर मुआफ़ की और इस सआदत के हुसूल की इजाज़त दी।"

हुर इजाज़त पा कर मैदान की त़रफ़ रवाना हुवा, घोड़ा चमका कर सफ़े आ'दा पर पहुंचा, हुर के भाई मुस्अ़ब बिन यज़ीद ने देखा कि हुर ने दौलते सआदत पाई और ने'मते आख़िरत से बहरामन्द हुवा और हिर्से दुन्या के गुबार से उस का दामन पाक हुवा, उस के दिल में भी वलवला उठा और बाग उठा कर घोड़ा दौड़ाता हुवा चला। अ़म्र बिन सा'द के लश्कर को गुमान हुवा कि भाई के मुक़ाबले के लिये जाता है। जब मैदान में पहुंचा, भाई से कहने लगा : भाई ! तू मेरे लिये ख़िज़्रे राह हो गया और मुझे तू ने सख़्त तरीन मह–ल–कए से नजात दिलाई, मैं भी तेरे साथ हूं और रफ़ाक़ते हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की सआदत हासिल करना चाहता हूं। आ'दाए बद कीश को इस वाक़िआ से निहायत हैरानी हुई। येह वाक़िआ देख कर अ़म्र बिन सा'द के बदन पर लर्ज़ा पड़ गया और वोह घबरा उठा और उस ने एक शख़्स को मुन्तख़ब कर के उस के लिये भेजा और कहा कि रिफ़्क़ो मदारात के साथ समझा बहका कर हुर को अपने मुवाफ़िक़ करने की कोशिश करे और अपनी चालबाज़ी और फ़रैबकारी इन्तिहा को पहुंचा दे। फिर भी नाकामी हो तो उस का सर काट कर ले आए। वोह शख़्स चला और हुर से आ कर कहने लगा, ऐ हुर ! तेरी अ़क़्ल व दानाई पर हम फ़ख़्र किया करते थे मगर आज तू ने कमाले नादानी की, कि इस लश्करे जर्रार से निकल कर यज़ीद के इन्आ़म व इकराम पर ठोकर मार कर चन्द बेकस मुसाफ़िरों

1....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है।*
(پ٢٥،الشورٰی:٢٥)

का साथ दिया जिन के साथ नाने खुश्क का एक टुकड़ा और पानी का एक क़त्रा भी नहीं है, तेरी इस नादानी पर अफ़्सोस आता है। हुर ने कहा : ऐ बे अ़क्ल नासेह़ ! तुझे अपनी नादानी पर रंज करना चाहिये कि तू ने त़ाहिर को छोड़ कर नजिस को क़बूल किया और दौलते बाक़ी के मुक़ाबले में दुन्याए फ़ानी के मौहूम आराम को तरजीह़ दी, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ को अपना फूल फ़रमाया है। मैं इस गुलिस्ताने रिसालत पर जान कुरबान करने की तमन्ना रखता हूं, रिज़ाए रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर कौनैन में कौन सी दौलत है।" कहने लगा : "ऐ हुर येह तो मैं भी ख़ूब जानता हूं लेकिन हम लोग सिपाही हैं और आज दौलत व माल यज़ीद के पास है।" हुर ने कहा : "ऐ कम हिम्मत ! इस हौसले पर ला'नत।"

अब तो नासेह़ बद बात़िन को यक़ीन हो गया कि उस की चर्ब ज़बानी हुर पर अषर नहीं कर सकती, अहले बैत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم की महब्बत उस के क़ल्ब में उतर गई है और उस का सीना आले रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विला से मम्लू है, कोई मक्रो फ़रैब उस पर न चलेगा। बातें करते करते एक तीर हुर के सीने पर खींच मारा, हुर ने ज़ख़्म खा कर एक नेज़े का वार किया जो सीने से पार हो गया और ज़ीन से उठा कर ज़मीन पर पटक दिया। उस शख़्स के तीन भाई थे, यक्बारगी हुर पर दौड़ पड़े, हुर ने आगे बढ़ कर एक का सर तल्वार से उड़ा दिया। दूसरे की कमर में हाथ डाल कर ज़ीन से उठा कर इस त़रह़ फैंका कि गर्दन टूट गई। तीसरा भाग निकला और हुर ने उस का तआ़क़्क़ुब किया, क़रीब पहुंच कर उस की पुश्त पर नेज़ा मारा वोह सीने से निकल गया, अब हुर ने लश्करे इब्ने सा'द के मैमना पर ह़म्ला किया और ख़ूब ज़ोर की जंग हुई, लश्कर इब्ने सा'द को हुर के जंगी हुन्नर का ए'तिराफ़ करना पड़ा और वोह जांबाज़ सादिक़े दादे शुजाअ़त दे कर फ़रज़न्दे रसूल (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ) पर जान फ़िदा कर गया।

हज़रते इमामे आली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ हुर को उठा कर लाए और उस के सर को ज़ानूए मुबारक पर रख कर अपने पाक दामन से उस के चेहरे का गुबार दूर फ़रमाने लगे, अभी रमक़े जान बाक़ी थी, इब्ने ज़हरा के फूल के महकते दामन की ख़ुश्बू हुर के दिमाग़ में पहुंची, मशामे जां मुअत्तर हो गया, आंखें खोल दीं, देखा कि इब्ने रसूलुल्लाह की गोद में है। अपने बख़्त व मुक़द्दर पर नाज़ करता हुवा फ़िरदौसे बरीं को रवाना हुवा। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيۡهِ رَاجِعُوۡنَ

हुर के साथ उस के भाई और ग़ुलाम ने भी नौबत ब नौबत दादे शुजाअ़त दे कर अपनी जानें अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُم पर क़ुरबान कीं। पचास से ज़ियादा आदमी शहीद हो चुके अब सिर्फ़ ख़ानदाने अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُم बाक़ी है और दुश्मनाने बद बातिन की इन्हीं पर नज़र है। येह हज़रात परवाना वार हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ पर निषार हैं। येह बात भी क़ाबिले लिहाज़ है कि इमामे आली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ के इस छोटे से लश्कर में से इस मुसीबत के वक़्त में किसी ने भी हिम्मत न हारी, रुफ़क़ा और मवाली में से किसी को भी तो अपनी जान प्यारी न मा'लूम हुई, साथियों में से एक भी ऐसा न था जो अपनी जान ले कर भागता या दुश्मनों की पनाह चाहता। जां निषाराने इमाम ने अपने सिद्क़ व जांबाज़ी में परवाना व बुलबुल के अफ़्साने हैच कर दिये, हर एक की तमन्ना थी और हर एक का इस्रार था कि पहले जां निषारी को इन को मौक़अ़ दिया जाए, इश्क़ो महब्बत के मतवाले शौक़े शहादत में मस्त थे, तनों का सर से जुदा होना और राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में शहादत पाना उन पर वज्द की कैफ़िय्यत त़ारी करता था, एक को शहीद होता देख कर दूसरे के दिलों में शहादतों की उमंगें जोश मारती थीं। (1)

1 ......روضۃ الشہداء (مترجم)، باب نہم، ج۲، ص۲۰۵۔۲۱۶ ملخصاً و ملتقطاً

अहले बैत رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُم के नौजवानों ने ख़ाके करबला के सफ़हात पर अपने ख़ून से शुजाअ़त व जवांमर्दी के वोह बे मिषाल नुक़ूश षबत फ़रमाए जिन को तबद्दुले अज़्मिना के हाथ मह़्व करने से क़ासिर हैं। अब तक नियाज़ मन्दों और अ़क़ीदत कीशों की मा'रका आराइयां थीं जिन्हों ने अ़लम बरदाराने शुजाअ़त को ख़ाको ख़ून में लिटा कर अपनी बहादुरी के ग़ुलगुले दिखाए थे अब असदुल्लाह के शेराने ह़क़ का मौक़अ़ आया और अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہ تعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم के ख़ानदान के बहादुरों के घोड़ों ने मैदाने करबला को जोला निगाह बनाया।

इन ह़ज़रात का मैदान में आना था कि बहादुरों के दिल सीनों में लरज़ने लगे और इन के ह़म्लों से शेर दिल बहादुर चीख़ उठे, असदुल्लाही तल्वारें थीं या शिहाबे षाक़िब की आतश बारी, बनी हाशिम की नबर्द आज़्माई और जां शिकार ह़म्लों ने करबला की तिशना लब ज़मीन को दुश्मनों के ख़ून से सैराब कर दिया और ख़ुश्क रेगिस्तान सुर्ख़ नज़र आने लगा। नेज़ों की नोकों पर सफ़े शिकन बहादुरों को उठाना और ख़ाक में मिलाना हाशिमी नौजवानों का मा'मूली करतब था, हर साअ़त नया मुबारिज़ आता था और हाथ उठाते ही फ़ना हो जाता था, इन की तेग़े बे नियाम अजल का पयाम थी और नोके सिनां क़ज़ा का फ़रमान, तल्वारों की चमक ने निगाहें ख़ीरा कर दीं और ह़र्ब व ज़र्ब के जोहर देख कर कोहे पैकर तरसां व हरसां हो गए। कभी मैमना पर ह़म्ला किया तो सफ़े दरहम बरहम कर डालीं। मा'लूम होता था कि सुवार मक़्तलों के समन्दर में तैर रहा है। कभी मैसरा की त़रफ़ रुख़ किया तो मा'लूम हुवा कि मर्दों की जमाअ़त खड़ी थी जो इशारा करते ही लौट गई। साइक़ा की त़रह़ चमकने वाली तेग़ ख़ून में डूब डूब कर निकलती थी और ख़ून के क़त़रात उस से टपकते रहते थे। इस त़रह़ ख़ानदाने इमाम के नौजवान अपने अपने जोहर दिखा दिखा कर इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ पर जान क़ुरबान करते चले जा रहे थे। ख़ैमे से चलते थे तो بَلۡ اَحۡیَآءٌ عِنۡدَ رَبِّھِمۡ (1)

1....*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि वोह अपने रब्ब के पास ज़िन्दा हैं।* (پ٤،اٰل عمرٰن:١٦٩)

के चमनिस्तान की दिलकश फ़ज़ा उन की आंखों के सामने होती थी, मैदाने करबला की राह से उस मन्ज़िल तक पहुंचना चाहते थे।

फ़रज़न्दाने इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मह़ारबा ने दुश्मन के होश उड़ा दिये, इब्ने सा'द ने ए'तिराफ़ किया कि अगर फ़रैब कारियों से काम न लिया जाता या इन ह़ज़रात पर पानी बन्द न किया जाता तो अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का एक एक नौजवान लश्कर को बरबाद कर डालता, जब वोह मुक़ाबले के लिये उठते थे तो मा'लूम होता था कि क़हरे इलाही عَزَّوَجَلَّ आ रहा है, उन का एक एक हुनर-वर सफ़ शिकनी व मुबारिज़ फ़िगनी में फ़र्द था। अल ह़ासिल, अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के नौ निहालों और नाज़ के पालों ने मैदाने करबला में ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर अपनी जानें फ़िदा कीं और तीरो सनां की बारिश में ह़िमायते ह़क़ से मुंह न मोड़ा, गर्दनें कटवाईं, ख़ून बहाए, जानें दीं मगर कलिमए नाह़क़ ज़बान पर न आने दिया, नौबत ब नौबत तमाम शहज़ादे शहीद होते चले गए। अब ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने उन के नूरे नज़र ह़ज़रते अ़ली अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ाज़िर हैं, मैदान की इजाज़त चाहते हैं, मिन्नतो समाजत हो रही है, अ़जीब वक़्त है, चहीता बेटा शफ़ीक़ बाप से गर्दन कटवाने की इजाज़त चाहता है और इस पर इस्रार करता है जिस की कोई हट, कोई ज़िद ऐसी न थी जो पूरी न की जाती, जिस नाज़नीन को कभी पिदरे मेहरबान ने इन्कारी जवाब न दिया था आज उस की येह तमन्ना येह इल्तिजा दिलो जिगर पर क्या अषर करती होगी ? इजाज़त दें तो किस बात की ! गर्दन कटाने और ख़ून बहाने की ! न दें तो चमनिस्ताने रिसालत का वोह गुले शादाब कमहलाया जाता है मगर इस आरज़ू मन्दे शहादत का इस्रार इस ह़द पर था और शौक़े शहादत ने ऐसा वारिफ़्ता बना दिया था कि चारो नाचार ह़ज़रते

इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को इजाज़त देना ही पड़ी। हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इस नौजवाने जमील को ख़ुद घोड़े पर सुवार किया, अस्लहा अपने दस्ते मुबारक से लगाए, फ़ौलादी मिगफ़र सर पर रखा, कमर पर पटका बांधा, तल्वार हमाइल की, नेज़ा इस नाज़ परवर्दए सियादत के मुबारक हाथ में दिया। उस वक़्त अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم की बीबियों बच्चों पर क्या गुज़र रही थी जिन का तमाम कुम्बा व क़बीला बरादर व फ़रज़न्द सब शहीद हो चुके थे और एक जगमगाता हुवा चराग़ भी आख़िरी सलाम कर रहा था।

इन तमाम मसाइब को अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم ने रिज़ाए हक़ के लिये बड़े इस्तिक़्लाल के साथ बरदाश्त किया और येह इन्हीं का हौसला था। हज़रते अ़ली अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ख़ैमे से रुख़्सत हो कर मैदाने कारज़ार की तरफ़ तशरीफ़ फ़रमा हुए, जंग के मत़लअ़ में एक आफ़्ताब चमका, मुशकीने काकुल की ख़ुश्बू से मैदान महक गया, चेहरे की तजल्ली ने मा'रकए कारज़ार को आ़लमे अन्वार बना दिया।[1]

नूरे निगाहे फ़ातिमा आस्मां जनाब सब्रे दिले ख़दीजए पाक अरम क़िबाब
लख़्ते दिल इमामे हुसैन इब्ने अबू तुराब शेरे ख़ुदा का शेर वोह शेरों में इन्तिख़ाब
सूरत थी इन्तिख़ाब तो क़ामत था ला जवाब गैसू थे मुश्क नाब तो चेहरा था आफ़्ताब
चेहरे से शाहज़ादा का उठा जभी निक़ाब महरे सिपहर हो गया ख़जलत से आब आब
काकुल की शाम रुख़ की सहर मौसिमे शबाब सुम्बुल निषार शाम फ़िदाए सहर गुलाब
शहज़ादए जलील अली अक्बरे जमील बोस्ताने हसन में गुले ख़ुश मन्ज़रे शबाब
पाला था अहले बैत ने आग़ोशे नाज़ में! शर्मिन्दा उस की नाज़ की से शीशए हबाब
सहराए कूफ़ा आ़लमे अन्वार बन गया! चमका जो रन में फ़ातिमा ज़हरा का माहताब
ख़ुरशीद जल्वा गर हुवा पुश्ते समन्दर पर या हाशिमी जवान के रुख़ से उठा निक़ाब

---

1 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب نہم، ج۲، ص۲۱۶۔۳۳٤ ملخصاً و ملتقطاً

सूलत ने मरहबा कहा शौकत थी रज्ज़ ख़्वां जुरअत ने बाग थामी शुजाअ़त ने की रिकाब
चेहरे को उस के देख के आंखें झपक गईं दिल कांप उठे हो गया आ'दा को इज़्तिराब
सीनों में आग लग गई आ'दाए दीन के ग़ैज़ो ग़ज़ब के शो'लों से दिल हो गए कबाब
नेज़ा जिगर शिगाफ़ था इस गुल के हाथ में या अज़्दहा था मौत का या अस्वउल इक़ाब
चमका के तेग़ मर्दों को नामर्द कर दिया इस से नज़र मिलाता येह थी किस के दिल में ताब
कहते थे आज तक नहीं देखा कोई जवां ऐसा शुजाअ़ होता जो इस शेर का जवाब
मैदाने कार लर्ज़ा बर अन्दाम हो गए शेर अफ़्ग़नों की हालतें होने लगीं ख़राब
कहने पैकरों को तेग़ से दो पारा कर दिया कि ज़र्ब ख़ोद पर तो उड़ा डाला तारकाब
तलवार थी कि साइक़ए बर्क़बार था या अज़् बराए रजम शयातीन था शिहाब
चेहरे में आफ़्ताबे नबुव्वत का नूर था आंखों में शाने सूलत सरकारे बू तुराब
प्यासा रखा जिन्हों ने उन्हें सैर कर दिया इस जूद पर है आज तेरी तेग़ ज़हर आब

मैदां में उस के हुस्ने अ़मल देख कर **नईम**
हैरत से बद हवास थे जितने थे शैख़ो शाब

मैदाने करबला में फ़ातिमी नौजवान पुश्ते समुन्दर पर जल्वा आरा था, चेहरे की ताबिश माहे ताबां को शर्मा रही थी, सर व क़ामत ने अपने जमाल से रेगिस्तान को बोस्ताने हुसन बना दिया, जवानी की बहारें क़दमों पर निषार हो रही थीं, सुम्बुल काकुल से ख़जल, बर्गे गुल उस की नज़ाकत से मुन्फ़इल, हुसन की तसवीर, मुस्तफ़ा की तन्वीर हबीबे किब्रिया عليه التحية والثناء के जमाले अक़्दस का ख़ुत्बा पढ़ रही थी, येह चेहरए ताबां उस रूए दरख़शां की याद दिला रहा था। उन संगदिलों पर हैरत जो इस गुले शादाब के मुक़ाबले का इरादा रखते थे, उन बे दीनों पर बे शुमार नफ़रत जो हबीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नौनिहाल को गज़न्द पहुंचाना चाहते थे। येह असदुल्लाही शेर मैदान में आया, सफ़े आ'दा की तरफ़ नज़र की, ज़ुलफ़िक़ारे हैदरी को चमकाया और अपनी मुबारक ज़बान से रज्ज़ शुरूअ़ की

اَنَا عَلِیُّ ابْنُ الْحُسَیْنِ ابْنِ عَلِیٍّ نَحْنُ اَھْلُ الْبَیْتِ اَوْلٰی بِالنَّبِیِّ

जिस वक़्त शहज़ादए आ़ली क़दर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने येह रज्ज़ पढ़ी होगी करबला का चप्पा चप्पा और रेगिस्ताने कूफ़ा का ज़र्रा ज़र्रा कांप गया होगा। इन मुद्दइयाने ईमान के दिल पथ्थर से बदरजहा बदतर थे जिन्हों ने इस नौबादए चमनिस्ताने रिसालत की ज़बाने शीरीं से येह कलिमे सुने फिर भी उन की आतशे इनाद सर्द न हुई और कमीना सीना से कीना दूर न हुवा। लश्करियों ने अ़म्र बिन सा'द से पूछा : येह सुवार कौन है जिस की तजल्ली निगाहों को ख़ीरा कर रही है और जिस की हैबत व सवलत से बहादुरों के दिल हिरासां हैं, शाने शुजाअ़त इस की एक एक अदा से ज़ाहिर ? कहने लगा : येह ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के फ़रज़न्द हैं, सूरतो सीरत में अपने जद्दे करीम علیہ الصلوٰۃ و التسلیم से बहुत मुनासबत रखते हैं। येह सुन कर लश्करियों को कुछ परेशानी हुई और उन के दिलों ने इन पर मलामत की, कि इस आक़ा ज़ादे رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मुक़ाबिल आना और ऐसे जलीलुल क़द्र मेहमान के साथ येह सुलूके बे मुरव्वती करना निहायत सफ़्लापन और बद बात़िनी है, लेकिन इब्ने ज़ियाद के वा'दे और यज़ीद के इन्आ़मो इकराम व तमए़ दौलत व माल की हि़र्स ने इस त़रह़ गिरिफ़्तार किया था कि वोह अहले बैते अत़्हार की क़द्रो शान और अपने अफ़्आ़ल व किरदार की शामत व नुहूसत जानने के बा वुजूद अपने ज़मीर की मलामत की परवाह न कर के रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बाग़ी बने और आले रसूल के ख़ून से कनारा करने और अपने दारैन की रूसियाही से बचने की उन्हों ने कोई परवाह न की। शाहज़ादए आ़ली वक़ार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मुबारिज़ त़लब फ़रमाया। सफ़े आ'दा में किसी को जुम्बिश न हुई, किसी बहादुर का क़दम न बढ़ा, मा'लूम होता था कि शेर के मुक़ाबिल बकरियों का एक गुल्ला है जो दम बख़ुद और साकित है।

हज़रते अ़ली अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने फिर ना'रा मारा और फ़रमाया कि ऐ ज़ालिमाने जफ़ाकेश ! अगर बनी फ़ातिमा के ख़ून की प्यास है तो तुम में से जो बहादुर हो उसे मैदान में भेजो, ज़ोरे बाज़ूए अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ देखना हो तो मेरे मुक़ाबिल आओ। मगर किस को हिम्मत थी कि आगे बढ़ता, किस के दिल में ताबो तुवां थी कि शेरे ज़ियां के सामने आता। जब आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि दुश्मनाने ख़ूंख़्वार में से कोई एक आगे नहीं बढ़ता और उन को बराबर की हिम्मत नहीं है कि एक को एक के मुक़ाबिल करें तो आप ने समन्द बादपा की बाग उठाई और तुसिने सबा रफ़्तार के मिहमेज़ लगाई और साइक़ा वार दुश्मन के लश्कर पर ह़म्ला किया, जिस त़रफ़ ज़द की पर्रे के पर्रे हटा दिये, एक एक वार में कई कई देव पैकर गिरा दिये, अभी मैमना पर चमके तो उस को मुन्तशिर किया, अभी मैसरा की त़रफ़ पलटे तो सफ़ें दरहम बरहम कर डालीं। कभी क़ल्बे लश्कर में ग़ोत़ा लगाया तो गर्दन कशों के सर मौसिमे ख़ज़ां के पत्तों की त़रह़ तन से जुदा हो कर गिरने लगे, हर त़रफ़ शोर बरपा हो गया, दिलावरों के दिल छूट गए, बहादुरों की हिम्मतें टूट गईं, कभी नेज़े की ज़र्ब थी, कभी तल्वार का वार था, शहज़ादए अहले बैत का ह़म्ला न था, अ़ज़ाबे इलाही की **बलाए अ़ज़ीम** थी।

धूप में जंग करते करते चमनिस्ताने अहले बैत के गुले शादाब को तिश्नगी का ग़लबा हुवा, बाग मोड़ कर वालिदे माजिद की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए अ़र्ज़ किया : "یَـا اَبَتَاہُ! اَلْعَطَش ऐ पिदरे बुज़ुर्गवार ! प्यास का बहुत ग़लबा है। ग़लबे की क्या इन्तिहा तीन दिन से पानी बन्द है, तेज़ धूप और इस में जांबाज़ाना दौड़ धूप, गर्म रेगिस्तान, लोहे के हथयार जो बदन पर लगे हुए हैं वोह तमाज़ते आफ़्ताब से आग हो रहे हैं। अगर इस वक़्त ह़ल्क़ तर करने के लिये चन्द क़त़रे मिल जाएं तो फ़ात़िमी शेर

गुर्बा ख़स्लतों को पैवन्दे ख़ाक कर डाले। शफ़ीक़ बाप ने जांबाज़ बेटे की प्यास देखी मगर पानी कहां था जो इस तिश्नए शहादत को दिया जाता, दस्ते शफ़क़त से चेहरए गुलगों का गर्दो गुबार साफ़ किया और अपनी अंगुशतरी फ़रज़न्दे अरजुमन्द के दहाने अक़दस में रख दी। पिदरे मेहरबान की शफ़क़त से फ़िल जुम्ला तस्कीन हुई फिर शहज़ादे ने मैदान का रुख़ किया फिर सदा दी : "هَلْ مِنْ مُّبَارِزٌ" कोई जान पर खेलने वाला हो तो सामने आए।

अ़म्र बिन सा'द ने त़ारिक़ से कहा : बड़े शर्म की बात है कि अहले बैत का अकेला नौ जवान मैदान में है और तुम हज़ारों की ता'दाद में हो, इस ने पहली मरतबा मुबारिज़ त़लब किया तो तुम्हारी जमाअ़त में किसी को हिम्मत न हुई फिर वोह आगे बढ़ा तो सफ़े की सफ़े दरहम बरहम कर डालीं और बहादुरों का खेत कर दिया, भूका है, प्यासा है, धूप में लड़ते लड़ते थक गया है, ख़स्ता और मांदा हो चुका है फिर मुबारिज़ त़लब करता है और तुम्हारी ताज़ा दम जमाअ़त में से किसी को याराए मुक़ाबला नहीं। तुफ़ है तुम्हारे दा'वए शुजाअ़त व बसालत पर, हो कुछ ग़ैरत तो मैदान में पहुंच कर मुक़ाबला कर के फ़त्ह़ ह़ासिल कर तो मैं वा'दा करता हूं कि तू ने येह काम अन्जाम दिया तो अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद से तुझ को मौसिल की हुकूमत दिला दूंगा। त़ारिक़ ने कहा कि मुझे अन्देशा है कि अगर मैं फ़रज़न्दे रसूल और अवलादे बतूल से मुक़ाबला कर के अपनी आ़क़िबत भी ख़राब करूं फिर भी तू अपना वा'दा वफ़ा न करे तो न मैं दुन्या का रहा न दीन का। इब्ने सा'द ने क़सम खाई और पुख़्ता क़ौल व क़रार किया। इस पर ह़रीस त़ारिक़ मौसिल की हुकूमत की लालच में गुले बोस्ताने रिसालत के मुक़ाबले के लिये चला, सामने पहुंचते ही शहज़ादए वाला तबार पर नेज़े का वार किया। शाहज़ादए आ़लीजाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस का नेज़ा रद्द फ़रमा कर सीने पर एक

ऐसा नेज़ा मारा कि त़ारिक़ की पीठ से निकल गया और वोह एक दम घोड़े से गिर गया। शहज़ादा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने बकमाले हुनर मन्दी घोड़े को एड़ दे कर उस को रौंद डाला और हड्डियां चकना चूर कर दीं। येह देख कर त़ारिक़ के बेटे अ़म्र बिन त़ारिक़ को तैश आया और वोह झल्लाता हुवा घोड़ा दौड़ा कर शहज़ादे पर ह़म्ला आवर हुवा शाहज़ादे ने एक ही नेज़े में उस का काम भी तमाम किया। इस के बा'द उस का भाई त़लह़ा बिन त़ारिक़ अपने बाप और भाई का बदला लेने के लिये आतशीं शो'ले की त़रह़ शहज़ादे पर दौड़ पड़ा। ह़ज़रते अ़ली अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने उस के गिरेबान में हाथ डाल कर ज़ीन से उठा लिया और ज़मीन पर इस ज़ोर से पटका कि उस का दम निकल गया, शहज़ादे की हैबत से लश्कर में शोर बरपा हो गया। इब्ने सा'द ने एक मश्हूर बहादुर मिस्राअ़ इब्ने ग़ालिब को शहज़ादे के मुक़ाबले के लिये भेजा, मिस्राअ़ ने शहज़ादे पर ह़म्ला किया, आप ने तल्वार से नेज़ा क़लम कर के उस के सर पर ऐसी तल्वार मारी कि ज़ीन तक कट गई दो टुकड़े हो कर गिर गया, अब किसी में हिम्मत न रही थी कि तन्हा इस शेर के मुक़ाबिल आता, ना चार इब्ने सा'द ने मह़कम बिन तुफ़ैल और इब्ने नौफ़िल को एक एक हज़ार सुवारों के साथ शाहज़ादे رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ पर यक्बारगी ह़म्ला करने के लिये भेजा। शाहज़ादे رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने नेज़ा उठा कर उन पर ह़म्ला किया और उन्हे धकेल कर क़ल्बे लश्कर तक भगा दिया।

इस ह़म्ले में शहज़ादे के हाथ से कितने बद नसीब हलाक हुए, कितने पीछे हटे, आप पर प्यास की शिद्दत बहुत हुई, फिर घोड़ा दौड़ा कर पिदरे आ़ली क़दर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : اَلۡعَطَشُ اَلۡعَطَش बाबा ! प्यास की बहुत शिद्दत है। इस मरतबा ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : ऐ नूरे दीदा ! होज़े कौषर से सैराबी का वक़्त क़रीब आ गया है, दस्ते मुस्त़फ़ा علیہ التحیۃ و الثناء से

वोह जाम मिलेगा जिस की लज़्ज़त न तसव्वुर में आ सकती है न ज़बान बयान कर सकती है।" येह सुन कर ह़ज़रते अ़ली अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ख़ुशी हुई और वोह फिर मैदान की त़रफ़ लौट गए और लश्करे दुश्मन के यमीन व यसयार पर ह़म्ला करने लगे, इस मरतबा लश्करे अशरार ने यक्बारगी चारों त़रफ़ से घेर कर ह़म्ला करना शुरूअ़ कर दिये। आप भी ह़म्ला फ़रमाते रहे और दुश्मन हलाक हो हो कर ख़ाको ख़ून में लौटते रहे लेकिन चारों त़रफ़ से नेज़ों के ज़ख़्मों ने तने नाज़नीन को चकना चूर कर दिया था और चमने फ़ातिमा का गुले रंगीं अपने ख़ून में नहा गया था, पैहम तेग़ व सिनान की ज़र्बें पड़ रही थीं और फ़ातिमी शहसुवार पर तीरो तल्वार का मींह बरस रहा था, इस ह़ालत में आप पुश्ते ज़ीन से रुए ज़मीन पर आए और सरो क़ामत ने ख़ाके करबला पर इस्तिराह़त की। उस वक़्त आप ने आवाज़ दी : یَـا اَبَتَاہُ! اَدْرِکْنِیۡ ऐ पिदरे बुज़ुर्गवार ! मुझ को लीजिये। ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ घोड़ा बढ़ा कर मैदान में पहुंचे और जांबाज़ नौनिहाल को ख़ैमे में लाए, उस का सर गोद में लिया, ह़ज़रते अ़ली अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने आंख खोली और अपना सर वालिद की गोद में देख कर फ़रमाया : "جان ما نیاز مندان قربان تو باد" ऐ पिदरे बुज़ुर्ग वार ! मैं देख रहा हूं आस्मान के दरवाज़े खुले हुए हैं बहिश्ती हूरें शरबत के जाम लिये इन्तिज़ार कर रही हैं। येह कहा और जान, जाने आफ़रीं के सिपुर्द की।[1] اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیۡہِ رَاجِعُوۡنَ

अहले बैत का सब्रो तह़म्मुल अल्लाहु अक्बर ! उम्मीद के गुले नौशगुफ़्ता को कमह्लाया हुवा देखा और اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ कहा, नाज़ के पालों को क़ुरबान कर दिया और शुक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाए, मुसीबत व अन्दोह की कुछ निहायत है, फ़ाक़े पर फ़ाक़े हैं, पानी का नामो निशान नहीं, भूके प्यासे फ़रज़न्द तड़प तड़प कर जानें दे चुके हैं, जलते रैत पर फ़ातिमी नौ निहाल ज़ुल्मो जफ़ा से ज़ब्ह़ किये गए, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब,

1 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب نہم، ج۲، ص۲۱۶_۲۳۴ ملخصاً و ملتقطاً

दोस्त व अह्बाब, ख़ादिम, मवाली, दिलबन्द, जिगर पैवन्द सब आईने वफ़ा अदा कर के दोपहर में शरबते शहादत नोश कर चुके हैं। अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के क़ाफ़िले में सन्नाटा हो गया है। जिन का कलिमा कलिमा तस्कीने दिल व राह़ते जान था वोह नूर की तस्वीरें ख़ाको ख़ून में ख़ामोश पड़ी हुई हैं। आले रसूल ने रिज़ा व सब्र का वोह इम्तिह़ान दिया जिस ने दुन्या को ह़ैरत में डाल दिया है। बड़े से ले कर बच्चे तक मुब्तलाए मुसीबत थे।

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के छोटे फ़रज़न्द अ़ली असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जो अभी कमसिन हैं, शीरख़्वार हैं, प्यास से बेताब हैं, शिद्दते तिश्नगी से तड़प रहे हैं, मां का दूध ख़ुश्क हो गया है, पानी का नामो निशान तक नहीं है, इस छोटे बच्चे की ख़ुश्क नन्हीं ज़बान बाहर आती हैं, बे चैनी में हाथ पाउं मारते हैं और पेच खा खा कर रह जाते हैं, कभी मां की त़रफ़ देखते हैं और इन को सूखी ज़बान दिखलाते हैं। नादान बच्चा क्या जानता है कि ज़ालिमों ने पानी बन्द कर दिया है। मां का दिल इस बेचैनी से पाश पाश हुवा जाता है कभी बच्चा बाप की त़रफ़ इशारा करता है वोह जानता था कि हर चीज़ येह ला कर दिया करते थे। मेरी इस बे कसी के वक़्त भी पानी बहम पहुंचाएंगे, छोटे बच्चे की बे ताबी देखी न गई। वालिदा ने ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से अ़र्ज़ किया : इस नन्ही सी जान की बे ताबी देखी नहीं जाती। इस को गोद में ले जाइये और इस का ह़ाल ज़ालिमाने संग दिल को दिखाइये। इस पर तो रह़्म आएगा। इस को तो चन्द क़त़रे दे देंगे। येह न जंग करने के लाइक़ है न मैदान के लाइक़ है। इस से क्या अ़दावत है।

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उस छोटे नूरे नज़र को सीने से लगा कर सिपाहे दुश्मन के सामने पहुंचे और फ़रमाया कि अपना तमाम

कुम्बा तो तुम्हारी बे रहमी और जोरो जफ़ा के नज़्र कर चुका और अब अगर आतशे बुग़्ज़ो इनाद जोश पर है तो इस के लिये मैं हूं। येह शीरख़्वार बच्चा प्यास से दम तोड़ रहा है इस की बे ताबी देखो और कुछ शाइबा भी रहम का हो तो इस का हल्क़ तर करने को एक घूंट पानी दो।

जफ़ा काराने संग दिल पर इस का कुछ अषर न हुवा और उन को ज़रा रहम न आया। बजाए पानी के एक बद बख़्त ने तीर मारा जो अली असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का हल्क़ छेदता हुवा इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के बाज़ू में बैठ गया। इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने वोह तीर खींचा, बच्चे ने तड़प कर जान दी, बाप की गोद से एक नूर का पुतला लिपटा हुवा है, ख़ून में नहा रहा है, अहले ख़ैमा को गुमान है कि सियाह दिलाने बे रहम इस बच्चे को ज़रूर पानी दे देंगे और इस की तिश्नगी दिलों पर ज़रूर अषर करेगी लेकिन जब इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इस शगुफ़ए तमन्ना को ख़ैमे में लाए और उस की वालिदा ने अव्वल नज़र में देखा कि बच्चे में बे ताबाना हरकतें नहीं हैं, सुकून का आलम है, न वोह इज़्तिराब है न बे क़रारी, गुमान हुवा कि पानी दे दिया होगा। हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से दरयाफ़्त किया, फ़रमाया : वोह भी साक़िए कौषर के जामे रहमत व करम से सैराब होने के लिये अपने भाइयों से जा मिला, **अल्लाह** तआला ने हमारी येह छोटी कुरबानी भी क़बूल फ़रमाई।[1] اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحۡسَانِہٖ وَنَوَالِہٖ

रिज़ा व तस्लीम की इम्तिहान गाह में इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और उन के मुतवस्सिलीन ने वोह षाबित क़दमी दिखाई कि आलमे मलाइका भी हैरत में आ गया होगा [2]اِنِّیۡۤ اَعۡلَمُ مَالَا تَعۡلَمُوۡنَ० का राज़ इन पर मुन्कशिफ़ हो गया होगा।

---

1 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب نہم، ج۲، ص۳۳۸

2 ***.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते।*** (پ۱، البقرۃ:۳۰)

हज़रते इमामे आली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत

अब वोह वक़्त आया कि जां निषार एक एक कर के रुख़सत हो चुके और हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर जानें कुरबान कर गए, अब तन्हा हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं और एक फ़रज़न्द हज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वोह भी बीमार व ज़ईफ़। बा वुजूद इस ज़ो'फ़ व नाताक़ती के ख़ैमे से बाहर आए और हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तन्हा देख कर मसाफ़े कारज़ार जाने और अपनी जान निषार करने के लिये नेज़ा दस्ते मुबारक में लिया लेकिन बीमारी, सफ़र की कोफ़्त, भूक प्यास, मुतवातिर फ़ाक़ों और पानी की तक्लीफ़ों से ज़ो'फ़ इस दर्जे तरक़्क़ी कर गया था कि खड़े होने से बदन मुबारक लरज़ता था बा वुजूद इस के हिम्मते मर्दाना का येह हाल था कि मैदान का अ़ज़्म कर दिया।

हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जाने पिदर ! लौट आओ, मैदान जाने का क़स्द न करो, मैं कुम्बा क़बीला, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब, खुद्दाम, मवाली जो हमराह थे राहे ह़क़ में निषार कर चुका और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कि इन मसाइब को अपने जद्दे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में सब्रो तहम्मुल के साथ बरदाश्त किया अब अपना नाचीज़ हदिय्यए सर राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में नज़्र करने के लिये हाज़िर है। तुम्हारी ज़ात के साथ बहुत उम्मीदें वाबस्ता हैं, बे कसाने अहले बैत عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان को वत़न तक कौन पहुंचाएगा ? बीबियों की निगहदाश्त कौन करेगा ? जद्दो पिदर की जो अमानतें मेरे पास हैं किस को सिपुर्द की जाएंगी ? कुरआने करीम की मुहाफ़ज़त और हक़ाइक़े इरफ़ानिया की तब्लीग़ का फ़र्ज़ किस के सर पर रखा जाएगा ? मेरी नस्ल किस से चलेगी ? हुसैनी सय्यदों (عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان) का सिलसिला किस से जारी होगा ? येह सब तवक़्क़ोआ़त तुम्हारी ज़ात से वाबस्ता हैं। दूदमाने रिसालत व नबुव्वत के आख़िरी चराग़ तुम ही हो, तुम्हारी ही त़लअ़त से दुन्या मुस्तनीर होगी। मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

के दिलदादगाने हुस्न तुम्हारे ही रूए ताबां से हबीबे हक़ के अन्वार व तजल्लियात की ज़ियारत करेंगे। ऐ नूरे नज़र ! लख़्ते जिगर ! येह तमाम काम तुम्हारे ज़िम्मे किये जाते हैं, मेरे बा'द तुम ही मेरे जानशीन होंगे, तुम्हें मैदान जाने की इजाज़त नहीं है।

हज़रते ज़ैनुल आबेदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि मेरे भाई तो जां निषारी की सआदत पा चुके और हुज़ूर के सामने ही साक़िये कौषर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आग़ोशे रहमत व करम में पहुंचे, मैं तड़प रहा हूं। मगर हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुछ पज़ीराना फ़रमाया और इमाम ज़ैनुल आबेदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इन तमाम ज़िम्मेदारियों का हामिल किया और खुद जंग के लिये तय्यार हुए, कुबाए मिस्री पहनी और इमामए रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सर पर बांधा, सय्यिदुश्शुहदा अमीरे हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सिपर पुश्त पर रखी, हज़रते हैदरे कर्रार की ज़ुलफ़िक़ारे आबदार हमाइल की। अहले ख़ैमा ने इस मन्ज़र को किस आंखों से देखा होगा, इमाम मैदान जाने के लिये घोड़े पर सुवार हुए। उस वक़्त अहले बैत की बे कसी इन्तिहा को पहुंचती है और उन का सरदार उन से त़वील अ़र्से के लिये जुदा होता है, नाज़ परवर्दों के सरों से शफ़्क़ते पिदरी का साया उठने वाला है, नौनिहालाने अहले बैत عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان के गिर्द यतीमी मन्डलाई फिर रही है, अज़्वाज से सुहाग रुख़्सत हो रहा है, दुखे हुए और मजरूह दिल इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जुदाई से कट रहे हैं, बेकस क़ाफ़िला ह़सरत की निगाहों से इमाम के चेहरए दिल अफ़रोज़ पर नज़र कर रहा है, सकीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की तरसी हुई आंखें पिदरे बुज़ुर्गवार का आख़िरी दीदार कर रही हैं, आन दो आन में येह जल्वे हमेशा के लिये रुख़्सत होने वाले हैं, अहले ख़ैमा के चेहरों से रंग उड़ गए हैं, ह़सरत व यास की तस्वीरें साकित खड़ी हुई हैं, न किसी के बदन में जुम्बिश है न किसी की ज़बान में ताबे ह़रकत, नूरानी आंखों से आंसू टपक रहे हैं और ख़ानदाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बे वत़नी और बे कसी में अपने सरों से रह़मतो करम के सायए गुस्तर

को रुख़्सत कर रहा है। ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने अहले बैत को तल्क़ीने सब्र फ़रमाई। रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ पर साबिरो शाकिर रहने की हिदायत की और सब को सिपुर्दे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ कर के मैदान की त़रफ़ रुख़ किया, अब न क़ासिम हैं न अबू बक्र व उ़मर न उ़षमान व औ़न जा'फ़र व अ़ब्बास عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان जो ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मैदान जाने से रोकें और अपनी जानों को इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर फ़िदा करें। अ़ली अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी आराम की नींद सो गए जो ह़ुसूले शहादत की तमन्ना में बे चैन थे। तन्हा इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं और आप ही को आ'दा के मुक़ाबिल जाना है।

ख़ैमे से चले और मैदान में पहुंचे, ह़क़ व सदाक़त का रोशन आफ़्ताब सर ज़मीने शाम में त़ालेअ़ हुवा, उम्मीदे ज़िन्दगानी व तमन्नाए ज़ीस्त का गर्दो ग़ुबार इस के जल्वे को छुपा न सका, ह़ुब्बे दुन्या व आसाइशे ह़यात की रात के सियाह पर्दे आफ़्ताबे ह़क़ की तजल्लियों से चाक चाक हो गए, बाति़ल की तारीकी इस की नूरानी शुआ़ओं से काफ़ूर हो गई, मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रज़न्द राहे ह़क़ में घर लुटा कर, कुम्बा कटा कर सर बकफ़ मौजूद है। हज़ार हा सिपागिराने नबर्द आज़मा का लश्करे गिरां सामने मौजूद है और इस की पेशानिये मुसफ़्फ़ा पर शिकन भी नहीं, दुश्मन की फ़ौजें पहाड़ों की त़रह़ घेरे हुए हैं और इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नज़र में परेकाह के बराबर भी इन का वज़्न नहीं। आप ने एक रज्ज़ पढ़ी जो आप की ज़ाती व नस्बी फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल थी और इस में शामियों को रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना ख़ुशी व नाराज़ी और ज़ुल्म के अन्जाम से डराया गया था।

इस के बा'द आप ने एक ख़ुत़्बा फ़रमाया और इस में ह़म्दो सलात के बा'द फ़रमाया : "ऐ क़ौम ! ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ से डरो, जो सब का मालिक है, जान देना, जान लेना सब उस के क़ुदरत व इख़्तियार में है।

अगर तुम ख़ुदावन्दे आ़लम عَزَّوَجَلَّ पर यक़ीन रखते और मेरे जद्द ह़ज़रते सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए हो तो डरो कि क़ियामत के दिन मीज़ाने अ़द्ल क़ाइम होगी, आ'माल का ह़िसाब किया जाएगा, मेरे वालिदैन मेह़शर में अपनी आल के बे गुनाह ख़ूनों का मुत़ालबा करेंगे। ह़ुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जिन की शफ़ाअ़त गुनहगारों की मग़्फ़िरत का ज़रीआ़ है और तमाम मुसलमान जिन की शफ़ाअ़त के उम्मीद वार हैं वोह तुम से मेरे और मेरे जांनिषारों के ख़ूने नाह़क़ का बदला चाहेंगे, तुम मेरे अहलो इयाल, अइ़ज़्ज़ा व इत़्फ़ाल, अस्ह़ाब व मवाली में से सत्तर से ज़ियादा को शहीद कर चुके और अब मेरे क़त्ल का इरादा रखते हो, ख़बरदार हो जाओ कि ऐ़शे दुन्या में पाएदारी व क़ियाम नहीं, अगर सल्त़नत की त़म्अ़ में मेरे दरपै आज़ार हो तो मुझे मौक़अ़ दो कि मैं अ़रब छोड़ कर दुन्या के किसी और हिस्से में चला जाऊं। अगर येह कुछ मन्ज़ूर न हो और अपनी ह़रकात से बाज़ न आओ तो हम **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म और उस की मरज़ी पर साबिर व शाकिर हैं। اَلْحُكْمُ لِلّٰهِ وَرَضِينَا بِقَضَاءِ اللّٰهِ" [1]

ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़बाने गोहर फ़िशां से येह कलिमात सुन कर कूफ़ियों में से बहुत लोग रो पड़े, दिल सब के जानते थे कि वोह बर सरे ज़ुल्मो जफ़ा हैं और ह़िमायते बात़िल के लिये उन्हों ने दारैन की रूसियाही इख़्तियार की है और येह भी सब को यक़ीन था कि इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़क़ पर हैं। इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ख़िलाफ़ एक एक जुम्बिश दुश्मनाने ह़क़ के लिये आख़िरत की रुस्वाई व ख़्वारी का मूजिब है इस लिये बहुत से लोगों पर अषर हुवा और ज़ालिमाने बद बात़िन ने भी एक लम्ह़े के लिये इस से अषर लिया, उन के बदनों पर एक फुरैरी सी आ गई और उन के दिलों पर एक बिजली सी चमक गई, लेकिन शिमर वग़ैरा बद सीरत व पलीद त़बीअ़ते रज़ील कुछ

---

1 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب نھم، ج۲، ص ۳۴۱۔۳۴۴ ملخصاً

मुतअष्षिर न हुए बल्कि येह देख कर कि लश्करियों पर ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की तक़रीर का कुछ अषर मा'लूम होता है, कहने लगे कि आप क़िस्से कोताह कीजिये और इब्ने ज़ियाद के पास चल कर यज़ीद की बैअ़त कर लीजिये तो कोई आप से तआ़रुज़ न करेगा वरना बजुज़ जंग के कोई चारा नहीं है। ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ को अन्जाम मा'लूम था लेकिन येह तक़रीर इक़ामते हुज्जत के लिये फ़रमाई थी कि उन्हें कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहे।

सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नूरे नज़र, ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھَا का लख़्ते जिगर बे कसी भूक प्यास की हालत में आल व अस्हा़ब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُم की मुफ़ारक़त का ज़ख़्म दिल पर लिये हुए गर्म रेगिस्तान में बीस हज़ार के लश्कर के सामने तशरीफ़ फ़रमा है, तमाम हुज्जतें क़त्अ़ कर दी गईं, अपने फ़ज़ाइल और अपनी बे गुनाही से आ'दा को अच्छी त़रह़ आगाह कर दिया और बार बार बता दिया है कि मैं ब क़स्दे जंग नहीं आया और इस वक़्त तक इरादए जंग नहीं है अब भी मौक़अ़ दो तो वापस चला जाऊं। मगर बीस हज़ार की ता'दाद इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ को बे कसो तन्हा देख कर जोशे बहादुरी दिखाना चाहती है।(1)

जब ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने इत़मीनान फ़रमाया कि सियाह दिलाने बद बाति़न के लिये कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहा और वोह किसी त़रह़ ख़ूने नाह़क़ व ज़ुल्मे बे निहायत से बाज़ आने वाले नहीं तो इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि तुम जो इरादा रखते हो पुरा करो और जिस को मेरे मुक़ाबले के लिये भेजना चाहते हो भेजो। मश्हूर बहादुर और यगाना नबर्द आज़्मा जिन को सख़्त वक़्त के लिये मह़फ़ूज़ रखा गया था मैदान में भेजे गए। एक बे ह़या इब्ने ज़हरा के मुक़ाबिल तल्वार चमकाता आता है, इमामे तिश्नाकाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ को आबे

(1)......روضة الشهداء (مترجم)، باب نهم، ج۲، ص۳۴۴۔۳۴۵ ملخصاً

तेग़ दिखाता है, पेशवाए दीन के सामने अपनी बहादुरी की डींगें मारता है, गुरूरो कुव्वत में सरशार है, कषरते लश्कर और तन्हाई इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर नाजां है, आते ही ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़रफ़ तल्वार खींचता है, अभी हाथ उठा ही था कि इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ज़र्ब फ़रमाई, सर कट कर दूर जा पड़ा और ग़ुरूरे शुजाअ़त ख़ाक में मिल गया। दूसरा बढ़ा और चाहा कि इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मुक़ाबले में हुनर मन्दी का इज़्हार कर के सियाह दिलों की जमाअ़त में सुर्ख़ रूई ह़ासिल करे एक ना'रा मारा और पुकार कर कहने लगा कि बहादुराने कोह शिकन शामो इ़राक़ में मेरी बहादुरी का ग़ुलग़ुला है और मिस्र व रूम में, मैं शोहरए आफ़ाक़ हूं, दुन्या भर के बहादुर मेरा लोहा मानते हैं, आज तुम मेरे ज़ोर व कुव्वत को और दावपेच को देखो। इब्ने सा'द के लश्करी इस मुतकब्बिरे सरकश की तअ़ल्लियों से बहुत ख़ुश हुए और सब देखने लगे कि किस त़रह़ इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मुक़ाबला करेगा। लश्करियों को यक़ीन था कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर भूक प्यास की तक्लीफ़ ह़द से गुज़र चुकी है, सदमों ने ज़ईफ़ कर दिया है ऐसे वक़्त इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर ग़ालिब आ जाना कुछ मुश्किल नहीं है। जब सिपाहे शाम का गुस्ताख़ जफ़ाजू, सर कशाने घोड़ा कूदाता सामने आया, ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : तू मुझे जानता नहीं जो मेरे मुक़ाबिल इस दिलैरी से आता है, होश में हो, इस त़रह़ एक एक मुक़ाबिल आया तो तेग़े ख़ून आशाम से सब का काम तमाम कर दिया जाएगा, हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को बे कस व कमज़ोर देख कर हौसला मन्दियों का इज़्हार कर रहे हो, नामर्दो ! मेरी नज़र में तुम्हारी कोई ह़क़ीक़त नहीं।

शामी जवान येह सुन कर और तेश में आया और बजाए जवाब के ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर तल्वार का वार किया, ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उस का वार बचा कर कमर पर तल्वार मारी, मा'लूम होता था खीरा था काट डाला। अहले शाम को अब येह इत़्मीनान था कि ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के सिवा अब और तो कोई बाक़ी ही न रहा,

कहां तक न थकेंगे। प्यास की ह़ालत, धूप की तपिश मुज़्मह़ल कर चुकी है, बहादुरी के जोहर दिखाने का वक़्त है। जहां तक हो एक एक मुक़ाबिल किया जाए, कोई तो काम्याब होगा इस त़रह़ नए नए दम बदम शीर सूलत, पयल पैकर देग़ ज़न ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुक़ाबिल आते रहे मगर जो सामने आया एक ही हाथ में उस का क़िस्सा तमाम फ़रमाया। किसी के सर पर तल्वार मारी तो ज़ीन तक काट डाली, किसी के ह़माइली हाथ मारा तो क़लमी तराश दिया, ख़ूदो मिग़्फ़र काट डाले, जोशन व आईने क़त़्अ़ कर दिये, किसी को नेज़े पर उठाया और ज़मीन पर पटक दिया, किसी के सीने में नेज़ा मारा और पार निकाल दिया।

ज़मीने करबला में बहादुराने कूफ़ा का खेत बो दिया, नामवराने सफ़ सिकन के ख़ूनों से करबला के तिशना रेगिस्तान को सैराब फ़रमा दिया, ना'शों के अम्बार लग गए, बड़े बड़े फ़ख़्रे रोज़गार बहादुर काम आ गए, लश्करे आ'दा में शोर बर्पा हो गया कि जंग का येह अन्दाज़ रहा तो ह़ैदर का शेर कूफ़ा के ज़न व इत़्फ़ाल को बेवा व यतीम बना कर छोड़ेगा और इस की तेग़े बे पनाह से कोई बहादुर जान बचा कर न लेजा सकेगा, मौक़अ़ मत दो और चारों त़रफ़ से घेर कर यक्बारगी ह़म्ला करो। फ़रोमाएगान रू बाह सीरत ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुक़ाबले से आ़जिज़ आए और येही सूरत इख़्तियार की और माहे चर्ख़े ह़क़्क़ानिय्यत पर जोरो जफ़ा की तारीक घटा छा गई और हज़ारों जवान दौड़ पड़े और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को घेर लिया और तल्वार बरसानी शुरूअ़ की और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बहादुरी की सतायश हो रही थी और आप ख़ूंख़्वारों के अम्बोह में अपनी तेग़े आबदार के जोहर दिखा रहे थे। जिस त़रफ़ घोड़ा बढ़ा दिया पर्रे के पर्रे काट डाले। दुश्मन हैबत ज़दा हो गए और ह़ैरत में आ गए कि इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़म्ले जानिस्तान से रिहाई की कोई सूरत नहीं। हज़ारों आदमियों में घिरे हुए हैं और दुश्मनों का सर इस त़रह़ उड़ा रहे हैं जिस त़रह़ बादे ख़ज़ां के

झोंके दरख़्तों से पत्ते गिराते हैं। इब्ने सा'द और उस के मुशीरों को बहुत तश्वीश हुई कि अकेले इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुक़ाबिले हज़ारों की जमाअ़तें हेच हैं। कूफ़ियों की इ़ज़्ज़त ख़ाक में मिल गई, तमाम नामवराने कूफ़ा की जमाअ़तें एक ह़िजाज़ी जवान के हाथ से जान न बचा सकीं। तारीख़े आ़लम में हमारी नामर्दी का येह वाक़िआ़ अहले कूफ़ा को हमेशा रुस्वाए आ़लम करता रहेगा, कोई तदबीर करना चाहिये। तजवीज़ येह हुई कि दस्त बदस्त जंग में हमारी सारी फ़ौज भी इस शेरे ह़क़ से मुक़ाबला नहीं कर सकती, बजुज़ इस के कोई सूरत नहीं है कि हर चहार त़रफ़ से इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर तीरों का मींह बरसाया जाए और जब ख़ूब ज़ख़्मी हो चुकें तो नेज़ों के ह़म्लों से तने नाज़नीन को मजरूह़ किया जाए। तीर अन्दाज़ों की जमाअ़तें हर त़रफ़ से घिर आईं और इमामे तिश्नाकाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को गिर्दाबे बला में घेर कर तीर बरसाने शुरूअ़ कर दिये, घोड़ा इस क़दर ज़ख़्मी हो गया कि उस में काम करने की क़ुव्वत न रही नाचार ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक जगह ठहरना पड़ा, हर त़रफ़ से तीर आ रहे हैं और इमामे मज़लूम का तने नाज़ परवर निशाना बना हुवा है, नूरानी जिस्म ज़ख़्मों से चकना चूर और लहू लुहान हो रहा है, बे शर्म कूफ़ियों ने संग दिली से मोह़तरम मेहमान के साथ येह सुलूक किया। एक तीर पेशानिये अक़्दस पर लगा। येह पेशानी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बोसा गाह थी, येह सीमाए नूरे ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आरज़ूमन्दाने जमाल का क़रारे दिल है। बे अदबाने कूफ़ा ने इस पेशानिये मुसफ़्फ़ा और इस जबीने पुरज़िया को तीर से घाइल किया, ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को चक्कर आ गया और घोड़े से नीचे आए अब नामर्दाने सियाह बात़िन ने नेज़ों पर रख लिया, नूरानी पैकर ख़ून में नहा गया और आप शहीद हो कर ज़मीन पर गिर पड़े।

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن

ज़ालिमाने बदकेश ने इसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मुसीबतों का इसी पर ख़ातिमा नहीं हो गया। दुश्मनाने ईमान ने सरे मुबारक को तने अक़्दस से जुदा करना चाहा और नस्र इब्ने खुरशा इस नापाक इरादे से आगे बढ़ा मगर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हैबत से उस के हाथ कांप गए और तल्वार छूट पड़ी। ख़ोली इब्ने यज़ीद पलीद ने या शबल इब्ने यज़ीद ने बढ़ कर आप के सरे अक़्दस को तने मुबारक से जुदा किया।(1)

सादिक़ जांबाज़ ने अ़हदे वफ़ा पूरा किया और दीने ह़क़ पर क़ाइम रह कर अपना कुम्बा, अपनी जान राहे ख़ुदा में इस ऊलुलअ़ज़्मी से नज़्र की, सूखा गला काटा गया और करबला की ज़मीन सय्यिदुश्शोहदा के ख़ून से गुलज़ार बनी, सर व तन को ख़ाक में मिला कर अपने जद्दे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन की ह़क़्क़ानिय्यत की अ़मली शहादत दी और रेगिस्ताने कूफ़ा के वरक़ पर सिद्क़ो अमानत पर जान क़ुरबान करने के नुक़ूश षब्त फ़रमाए।

اَعْلَی اللّٰہُ تَعَالٰی مَکَانَہٗ وَاَسْکَنَہٗ بُحْبُوحَۃَ جِنَانِہٖ وَاَمْطَرَ عَلَیْہِ شَآبِیْبَ رَحْمَتِہٖ وَرِضْوَانِہٖ

करबला के बयाबान में ज़ुल्मो जफ़ा की आंधी चली, मुस्त़फ़ाई चमन के गुंचा व गुलबाद समूम की नज़्र हो गए, ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लहलहाता बाग़ दो पहर में काट डाला गया, कौनैन के मताअ़ बे दीनी व बे ह़मिय्यती के सैलाब से ग़ारत हो गए, फ़रज़न्दाने आले रसूल के सर से सरदार का साया उठा। बच्चे इस ग़रीबुल वत़नी में यतीम हुए, बीबियां बेवा हुईं, मज़लूम बच्चे और बेकस बीबियां गिरिफ़्तार किये गए।

मुह़र्रम सि. 61 हि. की दस्वीं तारीख़ के रोज़ 56 साल 5 माह 5 दिन की उ़म्र में ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस दारे नापाएदार से

1 ......روضۃ الشہداء (مترجم)، باب نہم، ج۲، ص۳۴۷۔۳۵۶ ملخصاً

रिह़्लत फ़रमाई और दाइये अजल को लबैक कही। इब्ने ज़ियादे बद निहाद ने सरे मुबारक को कूफ़ा के कूचे व बाज़ार में फिरवाया और इस त़रह़ अपनी बे ह़मिय्यती व बे ह़याई का इज़्हार किया फिर ह़ज़रते सय्यिदुश्शुहदा और इन के तमाम जांबाज़ शुहदा عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان के सरों को असीराने अहले बैत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم के साथ शिमरे नापाक की हमराही में यज़ीद के पास दिमश्क़ भेजा, यज़ीद ने सरे मुबारक और अहले बैत को ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के साथ मदीना त़य्यिबा भेजा और वहां ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ का सर मुबारक आप की वालिदा माजिदा ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا या ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के पहलू में मदफ़ून हुवा।(1)

इस वाकिअ़ए हाइला से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जो रंज पहुंचा और क़ल्बे मुबारक को जो सदमा हुवा अन्दाज़ा और क़ियास से बाहर है। इमाम अह़मद व बैहक़ी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا से रिवायत की, एक रोज़ मैं दोपहर के वक़्त हुज़ूरे अक़दस عليه التحية و الثناء की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुवा। मैं ने देखा कि सुम्बुल मुअ़म्बर व गैसूए मुअ़त्तर बिखरे हुए और ग़ुबार आलूद हैं, दस्ते मुबारक में एक ख़ून भरा शीशा है। येह ह़ाल देख कर दिल बे चैन हो गया, मैं ने अ़र्ज़ किया : ऐ आक़ा ! قربانت شوم येह क्या ह़ाल है ? फ़रमाया हुसैन और उन के रफ़ीक़ों (عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان) का ख़ून हैं, मैं इसे आज

---

1 ......الكامل فی التاريخ، سنة احدى و ستين، مقتل آل بنی ابی طالب...الخ،ج٣، ص٤٤٢
و سير اعلام النبلاء، و من صغار الصحابة، الحسين الشهيد...الخ، ج٤، ص٤٢٩
و روضة الشهداء (مترجم)، دسواں باب، فصل اول، ج٢، ص٣٨٠ـ٤٤٠ ملخصاً
و البداية و النهاية، سنة احدى و ستين، فصل فی يوم مقتل الحسين رضی اللّٰه تعالٰی عنه، ج٥، ص٧١٢

सुब्ह़ से उठाता रहा हूं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने उस तारीख़ व वक़्त को याद रखा जब ख़बर आई तो मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उसी वक़्त शहीद किये गए।(1)

ह़ाकिम ने बैहक़ी में ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से एक ह़दीष रिवायत की। उन्हों ने भी इसी त़रह़ ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक व रीशे अक़्दस पर गर्दो ग़ुबार है, अ़र्ज़ किया : جان ما کنیزان نثار تو باد या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم येह क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : अभी इमामे ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) के मक़्तल में गया था।(2)

बैहक़ी व अबू नुऐ़म ने बसरा अज़्दिया से रिवायत की, कि जब ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ शहीद किये गए तो आस्मान से ख़ून बरसा। सुब्ह़ को हमारे मटके, घड़े और तमाम बरतन ख़ून से भरे हुए थे।(3)

बैहक़ी व अबू नुऐ़म ने ज़ुहरी से रिवायत की, कि ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिस रोज़ शहीद किये गए उस रोज़ बैतुल मुक़द्दस में जो पथ्थर उठाया जाता था उस के नीचे ताज़ा ख़ून पाया जाता था।(4)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن العباس...الخ، الحدیث:۲۵۵۳، ج۱، ص۶۰۶

2 ......دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب من رأی فی منامہ...الخ، باب ما جاء فی رؤیۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فی المنام، ج۷، ص۴۸

3 ......دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب اخبار النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم بالکوائن...الخ، باب ما روی فی اخبارہ بقتل ابن ابنتہ ابی عبد اللّٰہ الحسین...الخ، ج۶، ص۴۷۱ والصواعق المحرقۃ، الباب الحادی عشر فی فضائل اھل البیت...الخ، الفصل الثالث،ص۱۹۴

4 ......دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب اخبار النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم بالکوائن...الخ، باب ما روی فی اخبارہ بقتل ابن ابنتہ ابی عبد اللّٰہ الحسین...الخ، ج۶، ص۴۷۱

बैहक़ी ने उम्मे ह़ब्बान से रिवायत की है कि ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के दिन अन्धेरा हो गया और तीन रोज़ कामिल अन्धेरा रहा और जिस शख़्स ने मुंह पर ज़ा'फ़रान (ग़ाज़ा) मला उस का मुंह जल गया और बैतुल मुक़द्दस के पथ्थरों के नीचे ताज़ा ख़ून पाया गया।(1)

बैहक़ी ने हुमैद बिन मुर्रा से रिवायत की, कि यज़ीद के लश्करियों ने लश्करे इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ में एक ऊंट पाया और इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के रोज़ इस को ज़ब्ह़ किया और पकाया तो इन्दिराइन की त़रह़ कड़वा हो गया और उस को कोई न खा सका।(2)

अबू नुऐ़म ने सुफ़्यान से रिवायत की वोह कहते हैं कि मुझ को मेरी दादी ने ख़बर दी कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के दिन मैं ने देखा दर्स (कुसुम) राख हो गया और गोश्त आग हो गया।(3)

बैहक़ी ने अ़ली बिन मुसहिर से रिवायत की, कि मैं ने अपनी दादी से सुना वोह कहती थीं कि मैं ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के ज़माने में जवान लड़की थी, कई रोज़ आस्मान रोया, या'नी आस्मान से ख़ून बरसा।(4) बा'ज़ मुअर्रख़ीन ने कहा है कि सात रोज़ तक आस्मान ख़ून रोया, इस के अषर से दीवारें और इमारतें रंगीन हो गईं

---

1 ......البداية و النهاية، سنة احدى و ستين، فصل فى يوم مقتل الحسين رضى الله عنه، ج٥، ص ٧١٠ ملتقطاً

2 ......دلائل النبوة للبيهقى، جماع ابواب اخبار النبى صلى الله عليه و سلم بالكوائن...الخ، باب ما روى فى اخباره بقتل ابن ابنته ابى عبد الله الحسين...الخ، ج٦، ص ٤٧٢

3 ......دلائل النبوة للبيهقى، جماع ابواب اخبار النبى صلى الله عليه و سلم بالكوائن...الخ، باب ما روى فى اخباره بقتل ابن ابنته ابى عبد الله الحسين...الخ، ج٦، ص ٤٧٢

4 ......دلائل النبوة للبيهقى، جماع ابواب اخبار النبى صلى الله عليه و سلم بالكوائن...الخ، باب ما روى فى اخباره بقتل ابن ابنته ابى عبد الله الحسين...الخ، ج٦، ص ٤٧٢

और जो कपड़ा इस से रंगीन हुवा उस की सुर्ख़ी पुर्ज़े पुर्ज़े होने तक न गई।[1]

अबू नुऐम ने ह़बीब बिन अबी षाबित से रिवायत की, कि मैं ने जिन्नों को ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर इस त़रह़ नौह़ा ख़्वानी करते सुना :

مَسَحَ النَّبِیُّ جَبِیۡنَہٗ ۔۔۔ فَلَہٗ بَرِیۡقٌ فِی الۡخُدُوۡدِ

है वोही नूर इस के चेहरे पर ... इस जबीन को नबी ने चूमा था

اَبَوَاہُ مِنۡ عُلَیَاءِ قُرَیۡشٍ ۔۔۔ جَدُّہٗ خَیۡرُ الۡجُدُوۡدِ (2)

इस के नाना जहान से बेहतर ... इस के मां बाप बरतरीने क़ुरैश

अबू नुऐम ने ह़बीब बिन षाबित से रिवायत की, कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द से सिवाए आज कभी जिन्नों को नौह़ा करते और रोते न सुना था मगर आज सुना तो मैं ने जाना कि मेरा फ़रज़न्द हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ शहीद हो गया, मैं ने अपनी लौंडी को बाहर भेज कर ख़बर मंगाई तो मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ शहीद हो गए जिन्न इस नौह़े के साथ ज़ारी करते थे :

اَلَا یَاعَیۡنُ فَاحۡتَفِلِیۡ بِجُھۡدٍ ۔۔۔ وَمَنۡ یَّبۡکِیۡ عَلَی الشُّھَدَاءِ بَعۡدِیۡ

कौन रोएगा फिर शहीदों को ... हो सके जितना रोले तू ऐ चश्म !

عَلٰی رَھۡطٍ تَقُوۡدُھُمُ الۡمَنَایَا ۔۔۔ اِلٰی مُتَجَبِّرٍ فِیۡ مُلۡكِ عَھۡدِیۡ (3)

मौत इन बे कसों ग़रीबों को ... पास ज़ालिम के खींच कर लाई

---

1 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر فی فضائل اهل البيت...الخ، الفصل الثالث، ص ١٩٤

2 ......معرفة الصحابة، باب الحاء، ٥٦١ـمن اسمه ابو عبد اللّٰه الحسين بن على ...الخ، الحديث:١٨٠٣، ج٢، ص ١٣

3 ......مجمع الزوائد، كتاب المناقب، باب مناقب الحسين بن على، الحديث:١٥١٨١، ج٩، ص ٣٢١

इब्ने अ़साकिर ने मिनहाल बिन अ़म्र से रिवायत की वोह कहते हैं : **वल्लाह !** मैं ने ब चश्मे खुद देखा कि जब सरे मुबारके इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को लोग नेज़े पर लिये जाते थे उस वक़्त मैं दिमश्क़ में था, सर मुबारक के सामने एक शख़्स सूरए कह्फ़ पढ़ रहा था जब वोह इस आयत पर पहुंचा :

اَنَّ اَصۡحٰبَ الۡكَهۡفِ وَالرَّقِيۡمِ ۙ كَانُوۡا مِنۡ اٰيٰتِنَا عَجَبًا۝(1)

अस्ह़ाबे कह्फ़ व रक़ीम हमारी निशानियों में से अ़जब थे।

उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला ने सरे मुबारक को गोयाई दी, बज़बाने फ़सीह़ फ़रमाया :

اَعۡجَبُ مِنۡ اَصۡحٰبِ الۡكَهۡفِ قَتۡلِیۡ وَحَمۡلِیۡ۔(2)

"अस्ह़ाबे कह्फ़ के वाक़िए़ से मेरा क़त्ल और मेरे सर को लिये फिरना अ़जीब तर है।" और दर ह़क़ीक़त बात येही है क्यूंकि अस्ह़ाबे कह्फ़ पर काफ़िरों ने ज़ुल्म किया था और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इन के जद की उम्मत ने मेहमान बना कर बुलाया, फिर बे वफ़ाई से पानी तक बन्द कर दिया, आल व अस्ह़ाब को ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने शहीद किया, फिर खुद ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद किया, अहले बैत عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان को असीर किया, सर मुबारक शहर शहर फिराया। अस्ह़ाबे कह्फ़ सालहा साल की त़वील ख़्वाब के बा'द बोले, येह ज़रूर अ़जीब है मगर सरे मुबारक का तन से जुदा होने के बा'द कलाम फ़रमाना इस से अ़जीब तर है।

अबू नुऐ़म ने बत़रीक़े इब्ने लहीआ़, अबी क़बील से रिवायत की, कि ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के बा'द जब बद नसीब कूफ़ी सरे मुबारक को ले कर चले और पहली मन्ज़िल में एक पड़ाव पर बैठ कर शरबत खुर्मा पीने लगे उस वक़्त एक लोहे का क़लम नुमूदार हुवा उस ने खून से येह शे'र लिखा।

1.....***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *कि पहाड़ की खो और जंगल के कनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे।* (پ۱۵، الکھف:۹)

2.....فیض القدیر شرح الجامع الصغیر، باب حرف الھمزۃ، ج۱، ص۲٦٥

اَتَرْجُو اُمَّةٌ قَتَلَتْ حُسَيْنًا　　شَفَاعَةَ جَدِّهٖ يَوْمَ الْحِسَابِ (1)

येह भी मन्क़ूल है कि एक मन्ज़िल में जब इस क़ाफ़िले ने क़ियाम किया वहां एक दैर था। दैर के राहिब ने उन लोगों को अस्सी हज़ार दिरहम दे कर सरे मुबारक को एक शब अपने पास रखा। ग़ुस्ल दिया, इत्र लगाया, अदब व ता'ज़ीम के साथ तमाम शब ज़ियारत करता और रोता रहा और रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ के जो अन्वार सरे मुबारक पर नाज़िल हो रहे थे उन का मुशाहिदा करता रहा हत्ता कि येही उस के इस्लाम का बाइ़ष हुवा। अश्क़िया ने जब दराहिम तक़्सीम करने के लिये थेलियों को खोला तो देखा सब में ठिकरियां भरी हुई हैं और उन के एक त़रफ़ लिखा है :

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ط(2)

ख़ुदा को ज़ालिमों के किरदार से ग़ाफ़िल न जानो।

और दूसरी त़रफ़ येह आयत मक्तूब है :

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ٥(3)

और ज़ुल्म करने वाले अ़न क़रीब जान लेंगे कि किस करवट बैठे हैं(4)

ग़रज़ ज़मीन व आस्मान में एक मातम बर्पा था। तमाम दुन्या रंजो ग़म में गिरिफ़्तार थी, शहादते इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दिन आफ़्ताब को ग्रहन लगा, ऐसी तारीकी हुई कि दोपहर में तारे नज़र आने लगे, आस्मान रोया, ज़मीन रोई, हवा में जिन्नात ने नौहा ख़्वानी की, राहिब

---

1 ......المعجم الكبير للطبرانی، مسند الحسین بن علی...الخ، الحدیث:٢٨٧٣، ج٣، ص١٢٣

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *और हरगिज़ अल्लाह को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से।* (پ١٣، ابرٰھیم:٤٢)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किसी करवट पलटा खाएंगे।* (پ١٩، الشعرآء:٢٢٧)

4 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر فی فضائل اهل البيت...الخ، الفصل الثالث، ص١٩٩

तक इस हादिषए क़ियामत नुमा से कांप गए और रो पड़े। फ़रज़न्दे रसूल, जिगर गोशए बतूल, सरदारे कुरैश इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का सरे मुबारक इब्ने ज़ियाद मुतकब्बिर के सामने तश्त में रखा जाए और वोह फ़िरऔन की तरह मस्नदे तकब्बुर पर बैठे, अहले बैत عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان अपनी आंखों से येह मन्ज़र देखें, उन के दिलों का क्या हाल हुवा होगा। फिर सर मुबारक और तमाम शुहदा के सरों को शहर शहर नेज़ों पर फिराया जाए और वोह यज़ीदे पलीद के सामने ला कर इसी तरह रखे जाएं और वोह खुश हो, इस को कौन बरदाश्त कर सकता है। यज़ीद की रिआया भी बिगड़ गई और उन से येह न देखा गया, इस पर इस ना बकार ने इज़्हारे नदामत किया मगर येह नदामत अपनी जमाअत को क़ब्ज़े में रखने के लिये थी, दिल तो इस नापाक का अहले बैते किराम के इनाद से भरा हुवा था। हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ टूट पड़े और आप ने और आप के अहले बैत عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان ने सब्र व रिज़ा का वोह इम्तिहान दिया जो दुन्या को हैरत में डालता है। राहे हक़ में वोह मुसीबतें उठाईं जिन के तसव्वुर से दिल कांप जाता है। येह कमाले शहादत व जांबाज़ी है और इस में उम्मते मुस्तफ़ा के लिये हक़ व सदाक़त पर इस्तिक़ामत व इस्तिक़्लाल की बेहतरीन ता'लीम है।[1]

वाक़िआत बा'दे शहादत

हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का वुजूदे मुबारक यज़ीद की बे क़ैदियों के लिये एक ज़बरदस्त मोहतसिब था, वोह जानता था कि आप के ज़मानए मुबारक में इस को बे मुहारी का मौक़अ़ मुयस्सर न आवेगा और उस की किसी कजरवी और गुमराही पर हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ सब्र न फ़रमाएंगे, उस को नज़र आता था कि इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जैसे दीनदार का ताज़ियानए ता'ज़ीर हर वक़्त उस के सर

---

1 ......الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر فی فضائل اهل البیت...الخ، الفصل الثالث، ص ۱۹۰۔۲۰۸ ملخصاً

पर घूम रहा है इसी वजह से वोह और भी ज़ियादा हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जान का दुश्मन था और इसी लिये हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत उस के लिये बाइषे मसर्रत हुई। हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का साया उठना था, यज़ीद खुल खेला और अन्वाअ़ व अक़्साम के मआ़सी की गर्म बाज़ारी हो गई। ज़िना, लवातत, ह़रामकारी, भाई–बहन का बियाह, सूद, शराब, धड़ल्ले से राइज हुए, नमाज़ों की पाबन्दी उठ गई, तमर्रुद व सरकशी इन्तिहा को पहुंची, शैतनत ने यहां तक ज़ोर किया कि मुस्लिम इब्ने उ़क़बा को बारह हज़ार या बीस हज़ार का लश्करे गिरां ले कर मदीनए त़य्यिबा की चढ़ाई के लिये भेजा। येह सि. 63 हि. का वाक़िआ़ है। इस नामुराद लश्कर ने मदीनए त़य्यिबा में वोह तूफ़ान बर्पा किया कि العظمۃ للہ क़त्ल, ग़ारत और त़रह़ त़रह़ के मज़ालिम हमसाएगाने रसूलुल्लाह पर किये। वहां के साकिनीन के घर लूट लिये, सात सो सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم को शहीद किया और दूसरे आ़म बाशिन्दे मिला कर दस हज़ार से ज़ियादा को शहीद किया, लड़कों को क़ैद कर लिया, ऐसी ऐसी बदतमीज़ियां कीं जिन का ज़िक्र करना ना गवार है। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के सुतूनों में घोड़े बांधे, तीन दिन तक मस्जिद शरीफ़ में लोग नमाज़ से मुशर्रफ़ न हो सके। सिर्फ़ ह़ज़रते सईद इब्ने मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मजनून बन कर वहां ह़ाज़िर रहे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने ह़न्ज़ला इब्ने ग़सील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि यज़ीदियों के नाशाइस्ता ह़रकात इस ह़द पर पहुंचे हैं कि हमें अन्देशा होने लगा कि इन की बदकारियों की वजह से कहीं आस्मान से पथ्थर न बरसें। फिर येह लश्करे शरारत अषर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ रवाना हुवा, रास्ते में अमीरे लश्कर मर गया और दूसरा शख़्स उस का क़ाइम मक़ाम किया गया। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर इन बे दीनों ने मिनजनीक़ से संग बारी की (मिनजनीक़ पथ्थर फैंकने का आला होता है जिस से पथ्थर फैंक कर मारा जाता है उस की ज़द बड़ी जबरदस्त और दूर की मार होती है) इस संग बारी से ह़रम शरीफ़ का सेह़न मुबारक पथ्थरों से भर गया और

मस्जिदे ह़राम के सुतून टूट पड़े और का'बए मुक़द्दसा के ग़िलाफ़ शरीफ़ और छत को इन बे दीनों ने जला दिया। इसी छत में उस दुम्बे के सींग भी तबर्रुक के त़ौर पर मह़फ़ूज़ थे जो सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़िदये में कुरबानी किया गया था वोह भी जल गए का'बए मुक़द्दसा कई रोज़ तक बे लिबास रहा और वहां के बाशिन्दे सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे।(1)

आख़िरे कार यज़ीदे पलीद को **अल्लाह** तआ़ला ने हलाक फ़रमाया और वोह बद नसीब तीन बरस सात महीने तख़्ते हुकूमत पर शैत़नत कर के 15 रबीउ़ल अव्वल सि. 64 हि. को जिस रोज़ इस पलीद के हुक्म से का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बे हुरमती हुई थी, शहरे ह़िम्स मुल्के शाम में उन्तालीस बरस की उ़म्र में हलाक हुवा। हुनूज़ क़िताल जारी था कि यज़ीदे नापाक की हलाकत की ख़बर पहुंची, ह़ज़रते इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने निदा फ़रमाई कि अहले शाम ! तुम्हारा त़ाग़ूत हलाक हो गया। येह सुन कर वोह लोग ज़लीलो ख़्वार हुए और लोग उन पर टूट पड़े और वोह गुरौहे नाह़क़ पज़ोह ख़ाइब व ख़ासिर हुवा। अहले मक्का को उन के शर से नजात मिली। अहले ह़िजाज़, यमन व इ़राक़ व ख़ुरासान ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की और अहले मिस्र व शाम ने मुआ़विया बिन यज़ीद के हाथ पर रबीउ़ल अव्वल सि. 64 हि. में। येह मुआ़विया अगर्चे यज़ीदे पलीद की अवलाद से था मगर आदमी नेक और सालेह़ था, बाप के नापाक अफ़्आ़ल को बुरा जानता था, इनान हुकूमत हाथ में लेते वक़्त से ता दमे मर्ग बीमार ही रहा और किसी काम की त़रफ़ नज़र न डाली और चालीस दिन या दो तीन माह की हुकूमत के बा'द इक्कीस साल की उ़म्र में मर गया। आख़िर वक़्त में उस से कहा गया कि किसी को ख़लीफ़ा करे।

---

(1) ......البداية والنهاية ، سنة ثلاث وستين ، سنة اربع وستين ، ترجمة يزيد بن معاوية ، ج٥، ص٧٢٩ـ٧٥٠ملتقطاً

وتاريخ الخلفاء، يزيد بن معاوية ابو خالد الاموى، ص١٦٦ـ١٦٧ملتقطاً

इस का जवाब उस ने येह दिया कि मैं ने ख़िलाफ़त में कोई ह़लावत नहीं पाई तो मैं इस तल्ख़ी में किसी दूसरे को क्यूं मुब्तला करूं।[1]

मुआ़विया बिन यज़ीद के इन्तिक़ाल के बा'द अहले मिस्र व शाम ने भी अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की बैअ़त की फिर मरवान बिन ह़कम ने ख़ुरूज किया और उस को शाम व मिस्र पर क़ब्ज़ा ह़ासिल हुवा। सि. 65 हि. में उस का इन्तिक़ाल हुवा और उस की जगह उस का बेटा अ़ब्दुल मलिक इस का क़ाइम मक़ाम हुवा। अ़ब्दुल मलिक के अ़हद में मुख़्तार बिन उ़बैद षक़फ़ी ने अ़म्र बिन सा'द को बुलाया, इब्ने सा'द का बेटा ह़फ़्स ह़ाज़िर हुवा। मुख़्तार ने दरयाफ़्त किया : तेरा बाप कहां है? कहने लगा कि वोह ख़ल्वत नशीन हो गया है, घर से बाहर नहीं निकलता। इस पर मुख़्तार ने कहा कि अब वोह रे की हुकूमत कहां है? जिस की चाहत में फ़रज़न्दे रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ) से बे वफ़ाई की थी, अब क्यूं इस से दस्त बरदार हो कर घर में बैठा है। ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के शहादत के रोज़ क्यूं ख़ाना नशीन न हुवा। इस के बा'द मुख़्तार ने इब्ने सा'द और उस के बेटे और शिमर नापाक की गर्दन मारने का हुक्म दिया और इन सब के सर कटवा कर ह़ज़रते मुह़म्मद बिन ह़नफ़िया बरादरे ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के पास भेज दिये और शिमर की लाश को घोड़ों के सुमों से रौंदवा दिया जिस से उस के सीने और पस्ली की हड्डियां चकना चूर हो गई। शिमर ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के क़ातिलों में से है और इब्ने सा'द उस लश्कर का क़ाफ़िला सालार व कमान दार था जिस ने ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ पर मज़ालिम के तूफ़ान तोड़े। आज इन ज़ालिमाने सितम शिआ़र व मग़रूराने नाबकार के सर तन से जुदा कर के दश्त ब दश्त फिराए जा रहे हैं और दुन्या में कोई इन की बे कसी पर अफ़्सोस करने वाला नहीं। हर शख़्स मलामत करता है और नज़रे ह़क़ारत से देखता है और इन की इस

1 ......تاریخ الطبری، سنة اربع وستین، ذکر خبر وفاة یزید بن معاویة، خلافة معاویة بن یزید، ج٤، ص٨٧۔٩٠
وتاریخ الخلفاء، یزید بن معاویة ابو خالد الاموی، ص١٦٧۔١٦٨ ملتقطاً

ज़िल्लत व रुस्वाई की मौत पर ख़ुश होता है। मुसलमानों ने मुख़्तार के इस कारनामे पर इज़्हारे फ़र्ह़ किया और इस को दुश्मनाने इमाम से बदला लेने पर मुबारक बाद दी।[1]

ऐ इब्ने सा'द! रै की हुकूमत तो क्या मिली — ज़ुल्मो जफ़ा की जल्द ही तुझ को सज़ा मिली
ऐ शिमरे नाबकार! शहीदों के ख़ून की — कैसी सज़ा तुझे अभी ऐ नासज़ा मिली
ऐ तिश्नगाने ख़ूने जवानाने अहले बैत — देखा कि तुम को ज़ुल्म की कैसी सज़ा मिली
कुत्तों की तरह़ लाशे तुम्हारे सड़ा किये — घूरे पे भी न गोर को तुम्हारी जा मिली
रुस्वाए ख़ल्क़ हो गए बरबाद हो गए — मर्दूदो! तुम को ज़िल्लते हर दोसरा मिली
तुम ने उजाड़ा ह़ज़रते ज़हरा का बोस्तां — तुम ख़ुद उजड़ गए तुम्हें येह बद दुआ मिली
दुन्या परस्तो! दीन से मुंह मोड़ कर तुम्हें — दुन्या मिली न ऐशो त़रब की हवा मिली
आख़िर दिखाया रंग शहीदों के ख़ून ने — सर कट गए अमां न तुम्हें इक ज़रा मिली

पाई है क्या "नईम" उन्हों ने अभी सज़ा
देखेंगे वोह जहीम में जिस दम सज़ा मिली

इस के बा'द मुख़्तार ने एक हुक्मे आ़म दिया कि करबला में जो जो शख़्स अ़म्र बिन सा'द का शरीक था वोह जहां पाया जाए मार डाला जाए। येह हुक्म सुन कर कूफ़ा के जफ़ा शिआ़र सूरमा बसरा भागना शुरूअ़ हुए। मुख़्तार के लश्कर ने उन का तआ़कुब किया जिस को जहां पाया ख़त्म कर दिया, लाशें जला डालीं, घर लूट लिये। ख़ोली बिन यज़ीद वोह ख़बीष है जिस ने ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का सरे मुबारक तने अक़्दस से जुदा किया था, येह रू सियाह भी गिरिफ़्तार कर के मुख़्तार के पास लाया गया। मुख़्तार ने पहले उस के चारों हाथ पैर कटवाए फिर सूली चढ़ाया, आख़िर आग में

---

1 ......تاريخ الخلفاء، عبد الله بن الزبير، ص ١٦٩
والكامل فی التاريخ، سنة ست وستين، ج ٤، ص ٢٧ـ ٤٩ ملخصاً

झोंक दिया। इस त़रह़ लश्करे इब्ने सा'द के तमाम अशरार को त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों के साथ हलाक किया। छे हज़ार कूफ़ी जो ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़त्ल में शरीक थे उन को मुख़्तार ने त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों के साथ हलाक कर दिया।(1)

इब्ने ज़ियाद की हलाकत

उ़बैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद, यज़ीद की त़रफ़ से कूफ़ा का वाली (गवर्नर) किया गया था। इसी बद निहाद के हुक्म से ह़ज़रते इमाम और आप के अहले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को येह तमाम ईज़ाएं पहुंचाई गईं, येही इब्ने ज़ियाद मौसिल में तीस हज़ार फ़ौज के साथ उतरा। मुख़्तार ने इब्राहीम बिन मालिक अश्तर को उस के मुक़ाबले के लिये एक फ़ौज को ले कर भेजा मौसिल से पन्दरह कोस के फ़ासिले पर दरयाए फ़ुरात के कनारे दोनों लश्करों में मुक़ाबला हुवा और सुब्ह़ से शाम तक ख़ूब जंग रही। जब दिन ख़त्म होने वाला था और आफ़्ताब क़रीबे ग़ुरूब था उस वक़्त इब्राहीम की फ़ौजे ग़ालिब आईं, इब्ने ज़ियाद को शिकस्त हुई, उस के हमराही भागे। इब्राहीम ने हुक्म दिया कि फ़ौजे मुख़ालिफ़ में से जो हाथ आए उस को ज़िन्दा न छोड़ा जाए। चुनान्चे बहुत से हलाक किये गए। इसी हंगामे में इब्ने ज़ियाद भी फ़ुरात के कनारे मुह़र्रम की दस्वीं तारीख़ सि. 67 हि. में मारा गया और उस का सर काट कर इब्राहीम के पास भेजा गया, इब्राहीम ने मुख़्तार के पास कूफ़ा में भिजवाया, मुख़्तार ने दारुल अमारत कूफ़ा को आरास्ता किया और अहले कूफ़ा को जम्अ़ कर के इब्ने ज़ियाद का सरे नापाक उसी जगह रखवाया जिस जगह उस मग़रूरे हुकूमत व बन्दए दुन्या ने ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का

(1)......الکامل فی التاریخ، سنۃ ست وستین، ج٤، ص٢٧-٤٩ ملخصاً

सरे मुबारक रखा था। मुख़्तार ने अहले कूफ़ा को ख़िताब कर के कहा कि ऐ अहले कूफ़ा ! देख लो कि ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ूने नाह़क़ ने इब्ने ज़ियाद को न छोड़ा, आज इस नामर्द का सर इस ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ यहां रखा हुवा है, छे साल हुए हैं वोही तारीख़ है, वोही जगह है, खुदावन्दे आ़लम ने इस मग़रूर, फ़िरऔ़ने ख़िसाल को ऐसी ज़िल्लतो रुस्वाई के साथ हलाक किया, इसी कूफ़ा और इसी दारुल अमारत में इस बे दीन के क़त्ल व हलाक पर जश्न मनाया जा रहा है।(1)

तिरमिज़ी शरीफ़ की सह़ीह़ ह़दीष में है कि जिस वक़्त इब्ने ज़ियाद और उस के सरदारों के सर मुख़्तार के सामने ला कर रखे गए तो एक बड़ा सांप नुमूदार हुवा, उस की हैबत से लोग डर गए वोह तमाम सरों पर फिरा जब उ़बैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद के सर के पास पहुंचा उस के नथने में घुस गया और थोड़ी देर ठहर कर उस के मुंह से निकला, इस त़रह़ तीन बार सांप उस के सर के अन्दर दाख़िल हुवा और ग़ाइब हो गया।(2)

इब्ने ज़ियाद, इब्ने सा'द, शिमर, क़ैस इब्ने अश्अ़ष कन्दी, ख़ौली इब्ने यज़ीद, सिनान बिन अनस नख़ई, अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस, यज़ीद बिन मालिक और बाक़ी तमाम अश्क़िया जो ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़त्ल में शरीक थे और साई थे त़रह़ त़रह़ की उ़क़ूबतों से क़त्ल किये गए और उन की लाशें घोड़ों की टापों से पामाल कराई गईं।(3)

---

1 ......الکامل فی التاریخ، سنة سبع وستین، ذکر مقتل ابن زیاد، ج٤، ص ٦٠ـ٦٢ ملخصاً
والبدایة والنہایة، سنة سبع وستین، وترجمة ابن زیاد، ج٦، ص٣٧ـ٤٣ ملخصاً
وروضة الشہداء (مترجم)، دسواں باب، فصل دوم، ج٢، ص٤٥٧

2 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن...الخ، الحدیث:٣٨٠٥، ج٥، ص٤٣١

3 ......روضة الشہداء (مترجم)، دسواں باب، فصل دوم، ج٢، ص٤٥٥ ماخوذاً

हदीष शरीफ़ में अल्लाह तबारक व तआ़ला की त़रफ़ से येह वा'दा है कि ख़ूने ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के बदले सत्तर हज़ार शक़ी मारे जाएंगे।(1) वोह पूरा हुवा, दुन्या परस्ताराने सियाह बाति़न और मग़रूराने तारीकदरों क्या उम्मीदें बांध रहे थे और ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत से इन दुश्मनाने ह़क़ को कैसी कुछ तवक़्क़ोआ़त थीं। लश्करियों को गिरां क़दर इन्आ़मों के वा'दे दिये गए थे, सरदारों को अ़हदे और हुकूमत का लालच दिया गया था, यज़ीद और इब्ने जियाद वग़ैरा के दिमाग़ों में जहांगीर सल्त़नत के नक़्शे खींचे हुए थे। वोह समझते थे कि फ़क़त़ इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ही का वुजूद हमारे लिये ऐशे दुन्या से मानेअ़ है, येह न हों तो तमाम करए ज़मीन पर यज़ीदियों की सल्त़नत हो जाए और हज़ारों बरस के लिये उन की हुकूमत का झंडा गड़ जाए मगर ज़ुल्म के अन्जाम और क़हरे इलाही عَزَّوَجَلَّ की तबाह कुन बिजलियों और दर्द रसीदगाने अहले बैत की जहां बर्हमकुन आहों की ताषीरात से बे ख़बर थे। उन्हें नहीं मा'लूम था कि ख़ूने शुहदा रंग लाएगा और सल्त़नत के पुर्ज़े उड़ जाएंगे, एक एक शख़्स जो क़त्ले ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ में शरीक हुवा है त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों से हलाक होगा, वोही फ़ुरात का कनारा होगा, वोही आ़शूरा का दिन, वोही ज़ालिमों की क़ौम होगी और मुख़्तार के घोड़े उन्हें रोंदते होंगे, उन की जमाअ़तों की कषरत उन के काम न आएगी, उन के हाथ पाउं काटे जाएंगे, घर लूटे जाएंगे, सूलियां दी जाएंगी, लाशें सड़ेगी, दुन्या में हर शख़्स तुफ़ तुफ़ करेगा, इस हलाकत पर ख़ुशी मनाई जाएगी। मा'रकए जंग में अगर्चे उन की ता'दाद हज़ारों की होगी मगर वोह दिल छोड़ कर हीजड़ों की त़रह़ भागेंगे और चूहों और कुत्तों की त़रह़ उन्हें जान बचानी मुश्किल होगी, जहां पाए जाएंगे मार दिये जाएंगे, दुन्या में क़ियामत तक उन पर नफ़रत व मलामत की जाएगी।

---

1 ......المستدرك للحاكم ، كتاب تواريخ المتقدمين ... الخ، قصة قتل يحيى عليه السلام، الحديث: ٤٢٠٨، ج٣، ص ٤٨٥

हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत हिमायते हक़ के लिये है। इस राह की तमाम तक्लीफ़ें इज़्ज़त हैं और फिर वोह भी इस शान के साथ कि इस ख़ानदाने आ़ली का बच्चा बच्चा शेर बन कर मैदान में आया, मुक़ाबिल से उस की नज़र न झपकी, दमे आख़िर तक मुबारिज़ त़लब करता रहा और जब नामर्दों के हुजूम ने उस को चारों त़रफ़ से घेर लिया तब भी उस के पाए षबात व इस्तिक़्लाल को लग़्ज़िश न हुई, उस ने मैदान से बाग न मोड़ी न ह़क़ व सदाक़त का दामन हाथ से छोड़ा न अपने दा'वे से दस्त बरदारी की, मर्दाना जांबाज़ी का नाम दुन्या में ज़िन्दा कर दिया, ह़क़ व सदाक़त का ना क़ाबिले फ़रामोशी दर्स दिया और षाबित कर दिया कि फ़ुयूज़े नबुव्वत के परतव से ह़क़्क़ानिय्यत की तजल्लियां उन पाक बातिनों के रंगो पे में ऐसी जागुज़ीं हो गई हैं कि तीर व तल्वार और तीर व सनां के हज़ारहा गहरे गहरे ज़ख़्म भी उन को गुज़न्द नहीं पहुंचा सकते। आख़िरत की ज़िन्दगी का दिलकश मन्ज़र उन की चश्मे ह़क़बीं के सामने इस त़रह रूकश है कि आसाइशे ह़याते दुन्यवी को वोह बे इल्तिफ़ाती की ठोकरों से ठुकरा देते हैं।

ह़ज्जाज इब्ने यूसुफ़ के वक़्त में जब दो बारा ह़ज़रते ज़ैनुल आ़बेदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ असीर किये गये और लोहे की भारी क़ैदो बन्द का बारे गिरां उन के तने नाज़िनीन पर डाला गया और पहरादार मुतअ़य्यन कर दिये गए, ज़ोहरी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ इस ह़ालत को देख कर रो पड़े और कहा कि मुझे तमन्ना थी कि मैं आप की जगह होता कि आप पर येह बारे मसाइब दिल पर गवारा नहीं है। इस पर इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि

क्या तुझे येह गुमान है कि इस क़ैदो बन्दिश से मुझे कर्ब व बे चैनी है। ह़क़ीक़त येह है कि अगर मैं चाहूं तो इस में से कुछ भी न रहे मगर इस में अज्र है और तज़क्कुर है और अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ की याद है। येह फ़रमा कर बेडियों में से पाउं और हथकड़ियों में से हाथ निकाल दिये।[1]

येह इख़्तियारात हैं जो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की त़रफ़ से करामतन उन्हें अ़त़ा फ़रमाए गए और वोह सब्रो रिज़ा है कि अपने वुजूद और आसाइशे वुजूद, घरबार, मालो मताअ़ सब से रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये हाथ उठा लेते हैं और इस में किसी चीज़ की परवाह नहीं करते।

अल्लाह तआ़ला उन के ज़ाहिरी वा बात़िनी बरकात से मुसलमानों को मुतमत्तेअ़ और फ़ैज़याब फ़रमाए और उन की इख़्लास मन्दाना क़ुरबानियों की बरकत से इस्लाम को हमेशा मुज़फ़्फ़र व मन्सूर रखे। आमीन

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَعِتْرَتِهٖ اَجْمَعِيْنَ

تَمَّتْ بِالْخَيْرِ

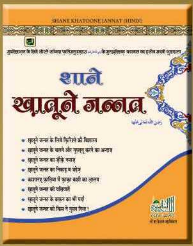
---

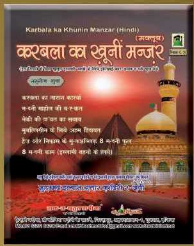
1 ......المنتظم، سنة اربع وتسعين، ٥٣٠-علی بن الحسین...الخ، ج٦، ص ٣٣٠

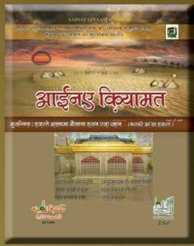
مآخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالٰی	برکات رضا ھند
ترجمۂ قرآن کنز الایمان	اعلٰی حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان ۱۳۴۰ ھ	برکات رضا ھند
الجامع لاحکام القرآن	امام ابو عبد اللہ محمد بن احمد القرطبی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت
صحیح البخاری	امام ابوعبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن الحجاج القشیری ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
سنن الترمذی	امام ابو عیسٰی محمد بن عیسٰی ترمذی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت
سنن ابن ماجه	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن یزید ابن ماجہ ۲۷۳ھ	دار المعرفة بیروت
المستدرک	امام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم النیشاپوری ۴۰۵ھ	دار المعرفة بیروت
البحر الزخار	امام ابو بکر احمد بن عمرو البزار ۲۹۲ھ	مكتبة العلوم و الحكم المدينة المنورة
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیھقی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ	دار الفکر بیروت
المسند	امام احمد بن حنبل ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
المسند	امام ابو یعلی احمد بن علی الموصلی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مشکاة المصابیح	امام محمد بن عبد اللّٰہ الخطیب التبریزی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مجمع الزوائد	امام نور الدین علی بن ابی بکر ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت
حلیة الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللّٰہ اصبھانی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
اللآلی المصنوعة	امام جلال الدین عبد الرحمان بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت

مرقاۃ المفاتیح	امام نور الدین علی بن سلطان(القاری)۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت
الاکمال	امام محمد بن عبد اللّٰہ الخطیب التبریزی ۷۴۲ھ	باب المدینہ کراچی
سیر اعلام النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد الذھبی۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت
فضائل الصحابۃ	امام احمد بن حنبل ۲۴۱ھ	المکتبۃ الالفیۃ
تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین عبد الرحمان بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
البدایۃ والنھایۃ	امام ابوالفداء اسماعیل بن عمرابن کثیر ۷۷۴ھ	دار الفکر بیروت
معرفۃ الصحابۃ	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللّٰہ ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الریاض النضرۃ	امام احمد بن عبد اللّٰہ الطبری۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
المنتظم	امام ابوالفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد ابن الجوزی۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
اسد الغابۃ	امام ابو الحسن علی بن محمد الجزری۶۳۰ھ	دار احیاء التراث العربی
دلائل النبوۃ	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیھقی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
دلائل النبوۃ	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ الاصبھانی ۴۳۰ھ	المکتبۃ الشاملۃ
تاریخ الطبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر الطبری ۳۱۰ھ	دار ابن کثیر بیروت
تاریخ دمشق	ابو القاسم علی بن الحسن المعروف بابن عساکر ۵۷۱ھ	المکتبۃ الشاملۃ
الکامل فی التاریخ	امام ابوالحسن علی بن محمد ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
روضۃ الشھداء	امام حسین بن علی الکاشفی الواعظ ۹۱۰ھ	چشتی کتب خانہ فیصل آباد
قوت القلوب	امام ابو طالب محمد بن علی المکی۳۸۶ھ	مرکز اھل السنۃ الھند
الصواعق المحرقۃ	امام احمد بن حجر الھیتمی المکی ۹۷۴ھ	مدینۃ الاولیاء (ملتان)
احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
معجم البلدان	امام ابوعبد اللّٰہ یاقوت بن عبد اللّٰہ۶۲۶ھ	دار احیاء التراث العربی









اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगी़र गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाखें

अह़मदाबाद : सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात, MO. 9374031409

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net

مکتبۃ المدینہ